अंतस

अर्धवार्षिक पत्रिका, अंक-18,   23 सितम्बर, 2020

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

नियम-निर्देश

- अंतस के आगामी अंक में प्रकाशन हेतु अपनी मौलिक एवं यथासंभव अप्रकाशित रचनाएं भेजने का कष्ट करें।
- रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।
- लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आँकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होने चाहिए।
- अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान राजभाषा प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।
- प्रकाशन के लिए किसी भी लेखक को किसी प्रकार का मानदेय नहीं दिया जाएगा।
- अंतस में उन सभी प्रकार के विचारों का स्वागत होगा जो संस्थान परिसर में रहने वाले अथवा काम करने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं किन्तु किसी भी प्रकार के राजनीतिक विचारों को प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा।
- अंतस में प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल अथवा राजभाषा प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की ही होगी।
- रचनाएँ अंतस के अनवरत दो अंकों में प्रकाशित न होने की स्थिति में संबंधित रचनाकार राजभाषा प्रकोष्ठ में श्रीमती सुनीता सिंह से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

स-आभार
संपादक मंडल

अंतस परिवार

संरक्षक
प्रोफेसर अभय करंदीकर

निर्देशन
प्रोफेसर एस. गणेश
उपनिदेशक
एवं
कृष्ण कुमार तिवारी
कुलसचिव

मुख्य संपादक
डॉ. अर्क वर्मा

संपादक
डॉ. वेदप्रकाश सिंह

संपादन सहयोग
प्रोफेसर अरुण कुमार शर्मा
प्रोफेसर शिखा दीक्षित
डॉ. कांतेश बालानी
श्री विष्णु प्रसाद गुप्ता

अभिकल्प (Design)
सुनीता सिंह

अनुवाद
श्री जगदीश प्रसाद

छायाचित्र
श्री गिरीश पंत

विशेष-सहयोग
प्रस्तुत अंक के सभी रचनाकार
समस्त संस्थान कर्मी
एवं
विद्यार्थी साहित्य सभा

संकेतक

शुभेच्छा

निदेशक की कलम से... 3
उपनिदेशक की दृष्टि में... 4
सम्पादकीय 5
कुलसचिव संदेश 6

गुरुदक्षिणा

श्री रणदेब राय 7

अवगुंठन-2020 12
रिपोर्ट एवं झलकियाँ 13

साहित्य यात्रा

गुरु कौन (लेख) 11
मनोरम स्मृतियाँ मोती समान (लेख) 14
इधर-उधर (कविता) 15
असफलता का अर्थ (मनन) 15
कुछ अच्छी बातें, कुछ सच्ची बातें (लेख) 16
ह्यूमन लाइब्रेरी (लेख) 17
एक मुलाकात जिन्दगी से (कविता) 18
असितत्व (कविता) 18
वाह रे कोरोना ये कैसा तेरा वार है (कविता) 19
अब क्षितिज के पार जाऊँ (कविता) 19
बाल-जिज्ञासा (लेख) 20
हलमा; एक महान भीली परम्परा (लेख) 21
परिसर के पतंगे (लेख) 22
दिल की दहलीज पर उतारूँ या ख्वाबों के मंजर पर (कविता) 23
अपनत्व (कहानी) 24
कोरोना की परछाई में एक दिन (लेख) 33
सवाल झाड़ू का (लेख) 34
एक मुस्कान लिए फिरता हूँ (कविता) 35
लॉकडाउन में आईआईटी (लेख) 37
कंधे का दाना (लेख) 38
दिल बहुत उदास है (कविता) 39
जलपरियों के देश में (कविता) 39
मिट्टी (कविता) 41
कितना बदल गया संसार (कविता) 43
गाँव की स्मृतियाँ (कविता) 45
पर्यावरण पर लॉकडाउन का प्रभाव (लेख) 48
इस बार (कविता) 49
आतुरता (कविता) 50
चित्रकारी 50
वही अपनापन फिर से लौटाओ (कविता) 52
एक भैस का रोजनामचा (कविता) 52
स्मृतियों का निर्माण (लेख) 53

विरासत

कैलासी नानी (कहानी) 40

तकनीकी लेख

आईआईटी के वैज्ञानिकों के शोध से साँस की बीमारियों के बेहतर निदान की उम्मीद (तक.लेख) 51

भाषा विमर्श

पंजाबी भाषा 44
आधुनिकता और आधुनिकतावाद 46

बालबत्तीसी

वर्षा आई (कविता) 54
गौरैया तू हो न उदास (कविता) 54
निस्वार्थी ब्राहम्ण (लघुकथा) 55
महान बनने के लिए क्या करें (शिक्षा) 55

प्रिय साथियों,

अपने आरम्भिक काल से ही भारतीय सभ्यता पर्यावरण तथा प्रकृति से अभिन्न रूप से जुड़ी रही है जिसके कारण हमारे समस्त वांगमय में वायु, जल, पेड़-पौधे, भूमि, सूर्य, चंद्रमा और आकाश आदि के पूजन, संरक्षा और सुरक्षा का प्रावधान किया गया है। पर्यावरण के माध्यम से वायु की शुद्धता, अग्नि अथवा सूर्यरश्मियों के माध्यम से जल-शोधन की प्रक्रिया से आरोग्य की प्राप्ति होती है। हमारा संकेत आप सभी लोग समझ ही गए होंगे कि आज जब समस्त विश्व कोरोना महामारी की आपदा से जूझ रहा है तो ज़ाहिर सी बात है हम इससे अछूते तो नहीं रह सकते हैं। इस महामारी से निपटने के लिए सभी देशों के वैज्ञानिक जी जान से जुटे हुए हैं और उम्मीद है कि शीघ्र ही इसके वैक्सीन की खोज के साथ इसका पूर्णकालिक निदान भी मिल जायगा। परंतु तबतक हम सभी को सरकार और प्रशासन के द्वारा सुझाए गए निर्देशों का अनुपालन करते हुए प्रकृति के सानिध्य में रहकर योगा, व्यायाम आदि को अपनाते हुए स्वयं के साथ परिवार को भी सुरक्षित रखना है साथ ही अपने हित-मित्रों को भी जागरूक करते रहने की आवश्यकता है।

संस्थान की गृह-पत्रिका अंतस के 18वें अंक के लोकार्पण में बिलंब हुआ, कारण आप सभी को पता है। लम्बे समय तक सम्पूर्ण बंदी के बावजूद भी सभी रचनाकारों ने पत्रिका के प्रकाशन में अपना सहयोग दिया इसके लिए सभी रचनाकारों और सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ और पत्रिका आपकी सम्वेदनाओं की सम्वाहिका बने इसके लिए अपनी शुभकामनाएँ ज्ञापित करता हूँ।
आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इसी तरह संस्थान परिसर के सभी सदस्य पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े रहेंगे और अपना सतत सहयोग प्रदान करते रहेंगे।
धन्यवाद!

अभय करंदीकर

अभय करंदीकर
निदेशक

शुभेच्छा

उपनिदेशक की दृष्टि में...

प्रिय पाठक,

अंतस पत्रिका के माध्यम से आप सभी से रूबरू हो रहा हूँ इससे मैं विशेष रूप से आनंदित हूँ। मित्रों आज हम सभी लोग एक अत्यंत ही असामान्य परिस्थिति से जूझ रहे हैं।परंतु मुझे पूर्ण विश्वास है कि अच्छा समय फिर आएगा। भारतीय परम्परा की अवधारणा के अनुसार वनस्पति और मनुष्य दोनों को समुचित विकास करने के लिए शुद्ध वायु, धूप और पोषण रूपी स्नेह-जल की आवश्यकता पड़ती है। जिस प्रकार से व्यक्ति को यदि पिता अथवा पिता सदृश बड़े भाई या गुरु का अनुशासन नहीं मिलता, माँ , बड़ी बहन का स्नेह-रस नहीं मिलता तो वह बौने व्यक्तित्व का स्वामी बनता है उसी प्रकार यदि पेड़-पौधों को धूप न मिले तो वह पीला पड़कर मुरझाने लगता है, उसमें सर्जनात्मक शक्ति का विकास नहीं हो पाता है। यद्यपि इस कोरोना महामारी ने पूरे विश्व समुदाय को सकते में डाल दिया है परंतु व्यक्तिगत तौर पर मुझे प्रसन्नता इस बात की है कि कारण कुछ भी रहा हो हममें से अधिकांश लोगों को पूरे परिवार के साथ मिलजुलकर भारतीय परम्परा को पुनः पुनर्भाषित करने का अवसर मिला है।

साहित्य-शोधन भी व्यक्तित्व का परिष्कार करता है। संस्थान की पत्रिका “अंतस” पिछले कई वर्षों से अपने इसी लक्ष्य को पोषित कर रही है। इसके पाठकों में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है यह हर्ष का विषय है। कतिपय व्यक्त-अव्यक्त कारणों से इस बार इसके प्रकाशन में बिलंब हुआ इसके लिए खेद प्रकट करता हूँ। सभी रचनाकारों नें बड़ी तन्मयता से अपना सहयोग प्रदान किया है, मैं सभी रचनाकारों को अपना धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ साथ ही सम्पादक मंडल को पत्रिका के 18वें अंक के प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ। उम्मीद करता हूँ पूर्व की भाँति यह अंक भी आप सभी पाठकों का मनोरंजन और ज्ञान-वर्धन करेगी।

आप सभी लोग स-परिवार स्वस्थ रहें, कार्यालय और कार्यालय के बाहर भी प्रशासन द्वारा जारी निर्देशों का पालन करते रहें। धन्यवाद!

गणेश

एस. गणेश
उपनिदेशक

अंतस के सभी लेखकों एवं पाठकगण को मेरा सादर नमस्कार।सर्वप्रथम अंतस के इस प्रस्तुत अंक के प्रकाशन में विलम्ब के लिए मैं आप सभी का क्षमाप्रार्थी हूँ। आपको ज्ञात ही है कि पिछले कुछ महीनों के घटनाक्रम ने सभी प्रकार के कार्यक्रमों को अस्त-व्यस्त कर दिया है, जिसका असर अंतस के प्रारूप पर कार्यरत हमारे सहकर्मियों पर भीपड़ा है और ये विलम्ब उसी कारण है। मैं आशा करता हूँ की आप सभी अपने परिवार के साथ स्वस्थ और सुरक्षित होंगे, और Covid - 19 से बचाव के लिए सभी आवश्यक उपाय कर रहे होंगे। यह संकट का समय अवश्य है परन्तु मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी इस महामारी के दौर से सुरक्षित निकल आएं।

यह वर्ष कई मायनों में मानव इतिहास के लिए अविस्मरणीय माना जायेगा। यह सम्पादकीय लिखते समय विश्वभर में लगभग 2 करोड़ लोग Corona की चपेट में आ चुके हैं, और लगभग साढ़े 8 लाख लोग अपनी जान गँवा चुके हैं। हमारे देश में भी ये आंकड़ा 49 लाख के पार हो चुका है और लगभग 78 हज़ार लोगों की मृत्यु हो चुकी है।

आम बोल-चाल में अक्सर में इस समय की चर्चा के लिए Corona-काल जैसे शब्दों का प्रयोग होते सुनता हूँ, थोड़ा अटपटा तो लगता है, परन्तु सत्य यही है कि यह एक अद्भुत कालखंड है। ब्वतवदं के पहले और बाद की दुनिया में बहुत सी चीज़ें जैसे हमेशा के लिए बदल गयीं हैं। भौतिक वस्तुओं को अगर छोड़ दें तो हम मनुष्यों के आचार-व्यवहार में स्थायी परिवर्तन हो रहे हैं और शायद कुछ वक़्त तक होते ही रहेंगे। सुविख्यात लेखिका अरुंधति रॉय इस काल-खंड कि परिकल्पना एक द्वार की तरह से करती हैं, जिससे गुज़रते वक़्त हम दुनिया के पिछले स्वरूप को पीछे छोड़ कर एक नयी दुनिया में कदम रख रहे हैं, और ये हमारा चुनाव है की हम पिछली बुरी आदतों और पूर्वाग्रहों को साथ में ढ़ोते हुए आगे बढ़ेंगे या फिर समकालीन अनुभवों से सीख लेते हुए आने वाली नयी दुनिया में नए दृष्टिकोण काम में लाएंगे। Corona – काल ने वास्तव में मानव सभ्यता की सभी सीापित मान्यताओं को झिंझोड़ कर रख दिया है। ये स्पष्ट है की मानवता और इसके संरक्षकों को अपनी प्राथमिकताओं पर अवश्य ही पुनर्विचार करना होगा। व्यक्तिगत तौर पर भी मुझे और आप सभी को शायद ये सोचना ही होगा की हमारे जीवन वो कौन सी चीज़ें है जो वास्तव में अमूल्य हैं, और जिनकों हम अक्सर नज़रंदाज़ करते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। उदाहरण स्वरूप देखा जाये तो जीवन की इस आपा-धापी में अक्सर हम अपना और अपनों का ख़याल नहीं रखते। हमें खुद अपने स्वास्थ्य की अक्सर कोई सुध नहीं रहती और कई बार अपने निकट के बहुमूल्य लोगों को भूलकर हम सुदूर नए रिश्तों को जोड़ने की जुगत में लगे रहते हैं। यह कल-खंड तो जैसे जीवन की क्षणभंगुरता का एक साक्षी बनकर हमारे सामने आया है, कई बातों को जैसे दोहरा सा दिया गया है जो हमें सिर्फ तमाम तरह के सत्संगों या प्रवचनों में ही सुनने को मिलती हैं। इस जीवन की वास्तविकता से बढ़कर और कोई हमें शिक्षा नहीं दे सकता भले भी इस बहाने से हम कितना भी भटकते रहें। इस कठिन घड़ी में यह विचार भी बार-बार आता है की एक सभ्य-समाज कि परिभाषा के विपरीत हम कितनी ही बार झूठे दंभ और निराधार वैमन्सयता के वशीभूत आपस में लड़ते झगड़ते रहते हैं, जबकि यह अनेकों बार सिध्द होता रहता है की मानवता के भविष्य की सारी उम्मीद हमारे आपसी सौहार्द और सहयोग में ही हैं। Corona -काल की अनेकों विषमताओं का सामना भी व्यक्तिगत, सामाजिक और वैश्विक स्तर पर आपसी सहयोग से ही संभव हो पा रहा है। सैकड़ों स्वास्थ्य कर्मी अपने और अपने परिवारों के जान की परवाह न करते हुए सेवा भाव से अपना कर्त्तव्य का निर्वाह कर रहे हैं, साथ ही और भी अनगिनत लोग अपने अपने तरीके से इस आपदा का सामना करने में एक दूसरे की और हम सब की सहायता ही कर रहे हैं। उनके प्रति शायद ही कभी हम अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर पाएं। मैं भी हम सबके भविष्य की कल्पना करते वक़्त ये ही सोच रहा हूँ , की शायद इस काल-खंड में आये हुए अनचाहे ठहराव या फिर कहें की भूचाल के उस पार हमारी नाव सही पतवार पाकर एक बेहतर दिशा पायेगी।

खैर अब बात करते हैं अंतस के इस अंक की, Corona - 19 से बचाव के प्रयासों के अंतर्गत की गयी लंबित बंदी का एक परिणाम ये भी हुआ की हमें प्राप्त बहुत सी रचनाओं का केंद्र बिंदु Corona - 19 और इससे जुड़े अनुभव रहे हैं। इनमें कई सुन्दर रचनाओं को पढ़ने का मुझे अवसर मिला है, जैसे कि श्री भरत सोमैय्या की कविता, और श्री आशीष शर्मा के पर्यावरण पर Corona - 19 के प्रभाव पर लेख सभी Corona महामारी के अलग अलग पहलूओं से हमें परिचित कराते हैं। इनके अलावा भी अंतस के इस अंक के लिए हमें बहुत सी रोचक और पठनीय रचनायें हमें प्राप्त हुयी हैं। इनमें प्रो. संतोष मिश्रा की 'पतंगा' ,प्रो. समीर खांडेकर की '' 'इधर-उधर', श्री सोमनाथ डनायक की 'अस्तित्व', श्रीमती चित्रलेखा भट्टाचार्य का अभिलेख और श्री आर के दीक्षित की 'आतुर' पाठकों को लेखन की अलग-अलग विधाओं से अवश्य मनोरंजित करेंगी।

साहित्य की बात करते हुए याद आया की उर्दू भाषा के प्रमुख शायरों में शुमार श्री राहत इंदौरी की मृत्यु भी इस Corona -काल में हुयी। श्री राहत इंदौरी उर्दू भाषा के ही नहीं बल्कि इस देश के एक बहुत ही सम्मानित शायर थे जिनकी नज़्में और उनकी अदायगी भी आने वाले समय में याद आती रहेगी। इसके अलावा श्री राहत इंदौरी ने हिंदी फिल्मों के लिए अनेकों गीत भी लिखे थे। हमारा सौभाग्य है की श्री राहत इंदौरी कई बार हमारे परिसर में आकर अपनी नज़्मों से हमें रू-बरू करा चुके थे। अंतस परिवार की तरफ से उनके लिए मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। आशा है की सभी लेखक और पाठक अंतस के प्रति अपना स्नेह और आशीर्वाद बनाये रखेंगे और अपनी बहुमूल्य रचनाओं के रूप में हमें अपना सहयोग प्रेषित करते रहेंगे।

साभार,

अर्क वर्मा

अर्क वर्मा, मुख्य संपादक

शुभेच्छा

कुलसचिव की दृष्टि में

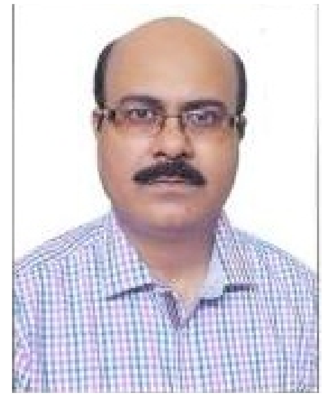

प्रिय पाठकों,

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा अर्थात पहली तिथि से हिन्दू वर्ष नव सम्वत्सर-2077 का प्रारम्भ हो गया, परन्तु इसवर्ष की शुरुआत कोविड-19 के आगमन से हुई और हमारे आस-पास के परिवेश में सुख-शांति, हर्ष-उल्लास के स्थान पर एक आकस्मिक, संशयास्पद महामारी के कारण भय का वातावरण व्याप्त हो चला।

हिन्दी पत्रिका 'अंतस' के प्रस्तुत अंक के प्रकाशन में कोविड़-19 के कारण हुए विलंब के लिए खेद व्यक्त करता हूँ। इस बार रचनाकारों के पास लेखन के लिए पर्याप्त समय होने की वजह से हमें भारी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुई हैं। उल्लेखनीय है कि जिन रचनाकरों की रचनाएं प्रस्तुत अंक में शामिल नहीं हो पाई उनको 'अंतस' के आगामी अंकों में शामिल करने का भरपूर प्रयास किया जाएगा। इस बार अधिकतर रचनाएं/लेख/कविताएं करोना महामारी पर ही आधारित रही हैं । करोना महामारी ने हर प्रकार की कार्य-प्रणाली को बदलकर रख दिया है। इस माहमारी ने समाज एवं समाज की सभी प्रणालियों को काफी कुछ सिखाया है। इस दौरान ऐसी बहुत सी घटनायें हुई हैं जो देश में पहली बार देखने को मिली हैं या मिल रही हैं। व्यक्तिगत तौर पर भी हम सभी को कोरोना काल में काफी कुछ सीखने को मिला है। वैसे कोरोना माहमारी के कारण आये कथित बदलाव एवं सीख का लाभ भविष्य में देश एवं समाज के अन्दर देखने को मिल सकता है।

'अंतस' के 18वें अंक को प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है । प्रस्तुत अंक पाठकों के लिए ई-पत्रिका के रूप में ऑनलाइन उपलब्ध रहेगा । मैं पत्रिका के समस्त रचनाकारों का आभार व्यक्त करता हूं जिनकी रचनाओं के योगदान से पत्रिका का यह अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। साथ ही साथ पाठकों से भी अनुरोध करता हूँ कि वे भी अपने लेख एवं रचनाएं हमें उपलब्ध कराएं ताकि 'अंतस' परिवार को और अधिक विस्तार दिया जा सके।

हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ मैं ईश्वर से प्रार्थना करते हुए यही कहना चाहूँगाः

राजीव नयन धरे धनु सायक
भगत बिपति भंजन सुखदायक !!

दैहिक दैविक भौतिक तापा !
राम राज नहिं काहुहि ब्यापा

कृष्ण कुमार तिवारी
कुलसचिव

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर राष्ट्रीय महत्व का एक शैक्षणिक संस्थान है जहां से शिक्षित होकर निकले छात्र देश-विदेश में अपना परचम पहरा रहे हैं। संस्थान अपने छात्रों को हमेशा संवेदनशील तरीके के पोषित करता आया है। संस्थान में अध्ययन-काल के दौरान छात्रों की शिक्षा-दीक्षा का संपूर्ण ख्याल रखा जाता है । अध्ययन के दौरान विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार की शैक्षणिक, वित्तीय अथवा मानसिक समस्या उत्पन्न होने पर तत्काल विधिवत् रूप से इसका निवारण किया जाता है। संस्थान के पूर्वछात्र भी अध्ययन-काल के दौरान संस्थान की तरफ से मिले स्नेह को जीवन पर्यन्त भूल नहीं पाते। संस्थान मे बीते हर पल का वह बड़ी ही तन्मयता से स्मरण करते हैं तथा संस्थान की बेहतरी के लिए सदैव इसके साथ खड़े रहते हैं। उल्लेखनीय है कि संस्थान अपनी स्थापना के समय से ही छात्रों के रूप में एक ऐसी बौद्धिक संपदा तैयार करने में लगा हुआ है जो देश-विदेश में तकनीकी, शैक्षणिक एवं प्रबंधन के क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। विदेशों में पूर्वछात्रों के तकनीकी एवं प्रबंधन कौशल के कारण आज विश्व में भारत की अलग एवं विशिष्ट पहचान बनी है। साथ ही साथ पूर्वछात्र अपने मातृ संस्थान को भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शैक्षणिक शोध सुविधाओं से लैस करने में कभी पीछे नहीं हटे हैं। ऐसे बहुत से पूर्वछात्र रहे हैं जिन्होंने संस्थान को शिक्षा एवं शोध का 'उत्कृष्ट केन्द्र' बनाने में उदार दिल से आर्थिक सहयोग उपलब्ध कराया है। संस्थान में आज ऐसी अनेक शोध सुविधाए/अनुसंधान केन्द्र एवं चेयर्स उपलब्ध हैं जो संस्थान के पूर्व छात्रों से गुरुदक्षिणा के रूप में प्राप्त आर्थिक सहयोग के फलस्वरूप ही स्थापित हो सकी हैं।

अंतस् के नियमित स्तंभ 'गुरुदक्षिणा' के माध्यम से इस बार हम पाठकों का परिचय संस्थान के पूर्व छात्र रणदेब रहय से करा रहे हैं जिन्होंने संस्थान से प्राप्त शिक्षा एवं संस्कारों की बदौलत जीवन में सफलता के शिखर को छुआ है। श्री रॉय ने कई अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों के सफल प्रबंधन एवं संचालन का दायित्व बखूबी निभाया है। श्री रहय ने समाज की भलाई के लिए शिक्षा के क्षेत्र में कई श्रेष्ठ एवं परोपकारी कार्य किये हैं। इस क्रम में श्री रॉय द्वारा उपलब्ध कराये गये आर्थिक सहयोग से संस्थान में कई चेयर स्थापित हो सकीं जिनका लाभ सीधे संस्थान और उसके विद्यार्थियों को मिल रहा है। आइए, इस अंक के माध्यम से हम श्री रणदेब राय की जीवन यात्रा से जुड़े हुए कुछ रोचक तथ्यों को जानने कोशिश करते हैं।

जीवन की शुरुआत

रणदेब (घर और ऑफिस में रॉनी) रॉय का पालन पोषण कोलकाता, पश्चिम बंगाल में हुआ । सत्तर और अस्सी के दशक में आप बड़े हुए। 175 वर्ष पुराने विख्यात शैक्षणिक संस्थान (पूर्ण रूप से शिक्षा पर केन्द्रित) ला मार्टिनियर फॉर बॉयज (एलएमबी), कोलकाता के आप विद्यार्थी रहे जहां पर वाद-विवाद, वाकपटुता, रचनात्मक कला, रंगमंच जैसी पाठ्येतर गतिविधियां शैक्षणिक उद्यम के समान ही मानी जाती थीं। उल्लेखनीय है कि एलएमबी ने ऐसे ग्रेजुएट तैयार नहीं किये जिनका रूझान आईआईटी जैसे संस्थानों/विश्वविद्यालयों में प्रवेश पाने के लिए रहा क्योंकि आईआईटी जैसे संस्थानों में ऐसे विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाता था जो मूलरूप से विज्ञान एवं अभियांत्रिकी में अध्ययन के लिए प्रेरित रहते हैं। 12वीं कक्षा तक रॉनी न तो आई आई टी में और न ही देशी एवं विदेशी विश्वविद्यालयों (जो उन दिनों बिल्कुल असंभव सा लगता था) में प्रवेश लेने के बारे में सोच रहे थे। रणदेब के कुछ वरिष्ठ साथी (जो पिछले कुछ वर्षों में 8-10 रहे होंगे) जिनका एलएमबी से आई आई टी में चयन हुआ था,को देवता तुल्य माना जाता था क्योंकि उनकी बौद्धिक क्षमता एवं ख्याति क्षेत्र में चर्चा का विषय बनी हुई थी।

हालांकि प्रारंभिक घबराहट के पश्चात रॉनी ने निश्चय किया कि वह आई आई टी में प्रवेश पाने के लिए अपनी किस्मत आजमाएंगे। जिस भवन -परिसर (मेघा-मल्लार) में वह पले-बढ़े वहां पर उनके कुछ वरिष्ठ एवं मेधावी साथी रहते थे जो उनका मार्गदर्शन किया करते थे । हालांकि यह बात अलग है कि उनमें से किसी एक का भी चयन आई आई टी में नहीं हो पाया था । 11वीं कक्षा में श्री रॉनी ने 'नेशनल टेलेंट सर्च' पुरस्कार जीता जिसके पश्चात उन्हें मालूम पड़ा कि उनके कई सहपाठी भी आई आई टी कानपुर में अध्ययनरत थे तथा एक

प्रिपेरटोरी कोर्स में भी उनके एक साथ थे। । अग्रवाल एवं ब्रिलिएंट नामक दो प्रतिष्ठित कोर्स थे तथा श्री रॉनी ने दोनों ही कोर्स लिए हुए थे। । उन्हें जानकारी दी गई कि देश भर में उन्हें 5वां स्थान प्राप्त हुआ है तथा रसायन की एक मौखिक परीक्षा में उन्हें उम्मीद से ज्यादा अंक प्राप्त हुए। भले ही इस सफलता ने उन्हें कुछ संकेत दिये हो कि वह आई आई टी के सख्त शैक्षणिक वातावरण (शुरूआती घबराहट के बावजूद) के अनुकूल हैं परन्तु उन्होंने जो सफलता पाई थी उसे लेकर वह अभी भी वे सशंकित थे।

श्री रॉनी आई आई टी की प्रवेश परीक्षा समाप्त होने के पश्चात अपनी प्रेमिका महुआ (जो अब उनकी पत्नी है, के साथ परीक्षा कक्ष में बैठे हुए थे) । उन्होंने यह सोचते/विश्वास करते हुए परीक्षा कक्ष छोड़ा कि प्रवेश परीक्षा में उनका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। उनके पिताजी जो उस समय भ्रमण पर थे उन्होंने कुछ दिनों बाद प्रवेश परीक्षा में उनके प्रदर्शन के बारे में जानना चाहा तो श्री रॉनी ने याद करते हुए बताया कि आई आई टी में तो प्रवेश की कोई उम्मीद नहीं है!! वेस्ट बंगाल जेईई में अवसर मिलने की संभवना है । इन शंकाओं के बावजूद एक महीने के पश्चात जब परिणाम घोषित हुआ तो वह पड़ोस के अपने कुछ साथियों के साथ उस बिल्डिंग गये जहां एक नोटिस बोर्ड पर परिणाम सूची चस्पा की गई थी । श्री रॉनी परिणाम सूची में अपना नाम खोजने लगे। जब उन्होंने अपने नाम के पास बायी तरफ 20 लिखा देखा तो उन्हें लगा कि कोई टाइपिंग संबंधी त्रुटि हुई होगी। उन्होंने सूची में दिये गये शेष नम्बरों पर अपनी नज़रें दौडाई तो उन्हें लगा कि शायद उनकी रैंक “2000” के आस-पास आई होगी परन्तु ऐसा नही था वास्तव में टाइपिंग संबंधी त्रुटि हुई थी जिसके कारण यह बाये हाशिए पर टाइप हो गया था। बाद में उन्हें पता चला आई आई टी की प्रवेश परीक्षा में पहली बार दो छात्रों को एक समान रैंक “20” हासिल हुई थी । आई आई टी कानपुर में आने के बाद श्री रॉनी अपने “rank twin” श्री शांतनु से मिले। जैसा कि हर-एक विश्वविद्यालय में होता है सभी विद्यार्थियों में से इन दोनों को तलाशा गया क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति इन दोनों “better 20” के बारे में जानना चाहता था।

आई आई टी कानपुर में आगमन

श्री रॉनी आईआईटीयन के रूप में अपने पुराने दिनों को अनुरागपूर्वक बहुत ही उत्साह एवं उमंग के साथ याद करते हैं। उन्होंने अपने रूम मेट के रूप में मनोज गोविल को चुना। श्री गोविल को उनकी रैंक के लिए 0003 जैम्स बॉन्ड बुलाया जाता था । उल्लेखनीय है कि श्री गोविल आज-कल मध्य प्रदेश सरकार में एक वरिष्ठ आईएएस अधिकारी के रूप में सेवारत हैं । श्री मनोज आई आई टी कानपुर के पहले क्लास मेट थे जिनसे श्री रॉनी की सर्वप्रथम मुलाकात हुई थी क्योंकि वह पहली बार छात्रावास संख्या 3 के कमरा नम्बर 321 (थकी हुई अवस्था) में पदैल चलकर गये थे। वह एवं उनके कुछ साथी पहली रात आधी रात के करीब स्वैगेटो बासुमलिक का गाना (who could recognize everyone just by seeing their feet] insistence) गाते हुए पकड़े गये। कुछ गहन (परन्तु मजाकिया अंदाज़ में) हैज़िंग/रैगिंग करने के आरोप में उन्हें छात्रावास-1 में तत्काल पेश होने के लिए कहा गया। हैज़िंग/रैगिंग से संबंधित एक अन्य घटना को याद करते हुए उनके मित्र रमेश (प्रजिडेन्ट गोल्ड मेडल पाने वाले छात्रों में से एक तथा वर्तमान मे गुगल में सेवारत) बताते हैं कि श्री रॉनी एवं उन्हें एक कमरे मे बंद कर दिया गया था। बंद कमरे में वह दोनों गपशप कर रहे थे तभी पता चला कि रमेश के साथ-साथ उन्हें भी ISC-12जी बोर्ड परीक्षा में प्रथम स्थान हासिल हुआ है। श्री रॉनी 13 सितम्बर 1986 को अपने विद्यालय के 150वें स्थापना दिवस के अवसर पर पहुँचे जहां पर उन्हें तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह द्वारा प्रजिडेन्ट गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। वह आज भी उस पल को याद करते हैं कि जब भारत के राष्ट्रपति द्वारा मेडल दिये जाने से अति-उत्साहित होकर उनके अभिभावकों ने उनकी फोटों तक नहीं ली थी। हालांकि उस समय इन चीजों का कोई महत्व नहीं था।

आई आई टी में जैसे-जैसे दिन गुजरते गये श्री रॉनी को अपने छात्रावास के ब्लाक से काफी लगाव हो गया। “The 20” को “Bhukkar” के नाम से बुलाया जाता था। डायनिंग हाल में वे हमेशा 1 से लेकर 20 तक की कुर्सियों पर कब्जा करने वाले प्रथम विद्यार्थी होते थे। वे बड़ी ही शिद्दत से अपने उन पुराने दिनों को याद करते हैं जब वह अपने मित्रों के साथ शहर के सिनेमा घरों में साइकिल से पिक्चर्स देखने जाते थे तथा चार रूपये में “मुल्ला जी बिरयानी” खाया करते थे। जब श्री रॉनी को एनटीएस की स्कॉलरशिप प्राप्त हुई तो उन्होंने अपने साथियों के साथ लखनऊ एवं खुजराहों स्थित मंदिरों का भ्रमण किया। वह अपने छात्रावास के ब्लाक में रहने वाले साथियों को कभी

नहीं भूल पाएगें विशेषरूप से आशु, अविक, अविनाश, बसुमल्लिक, डीजे, गणपति, गोविल, हिमांशु, जोयदीप, कमलेश, मनीष, मोहन, मुरली, नेमा, नीरज, पराग, सत्या और वार्ष्णेय को कभी नहीं भूल पाएंगे। चौथे साल में वरूण एवं रेडडी भी उनके समूह में शामिल हो गये थे तथा वे दोनों भी उनके सबसे अज़ीज़ मित्र बन गये। छात्रावास में दूसरे ब्लाक के संगणक विज्ञान के कुछ सहपाठी भी उनके घनिष्ठ मित्र बन गए इनमें से अर्नब, बरनवाल, बासुमल्लिक, भागवत, चंचल, दीपक, गोविल, नीलेश, पद्मनाभुनि पालीवाल, रमेश, रेड्डी, सुमेर, स्वरूप, ठाकुर, रेड्डी और विनय जैसे कुछ खास नाम हैं। हँसते हुए वह आगे बताते हैं कि कुछ बंगाली विद्यार्थियों ने उन्हें अपने समूह में शामिल करने का प्रयास किया परन्तु तब वह इसके लिए सांस्कृतिक रूप से बहुत पिछड़े हुए थे । उनके ब्लाक में रहने वाले छात्र अक्सर उन्हें "Bong or pseud Bong" के नाम से पुकारते थे। ऐसे बहुत से छात्र हैं जो उनसे प्रेरित हुए हालांकि इसकी सूची बहुत लंबी है।

श्री रॉनी के अनुसार आईआईटी में उनकी सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक मुख्य पाठ्यक्रम (कोर करिक्यूलम) के दौरान उनके पहले दो वर्ष के रूप में रही। ला मार्टिनियर फॉर बॉयज (एलएमबी) में हुई उनकी शिक्षा-दीक्षा का ही परिणाम था कि वह अपने मुख्य पाठ्यक्रम में सर्वश्रेष्ठ करने के साथ-साथ अन्य पाठ्येतर गतिविधियों में भी अधिक से अधिक भागादारी सुनिश्चित करना चाहते थे। स्मरण करते हुए वह बताते हैं कि कक्षा से कभी भी अनुपस्थित रहे क्योंकि वह कक्षा का आनंद उठाते थे । तीसरे साल की शुरूआत में ग्रीष्मकाल की छुट्टियों के दौरान उनके पिताजी ने पूछा कि आपका शैक्षणिक प्रदर्शन कैसा चल रहा है। आपकी रैंक कितनी है? इस प्रश्न का उत्तर देना उनके लिए कठिन था। उन्होंने कहा कि पिताजी संगणक विज्ञान में 17 में 10 प्वाइंट्स हैं परन्तु मेरी जीपीए "9.9/10" है । यह सुनकर उनके पिताजी हक्का-बक्का रह गये। वास्तव में शैक्षणिक दृष्टिकोण से उनका पूरा का पूरा बैच ही बहुत अच्छा था। उस वक्त पहले से ही नौ विद्यार्थी "10"प्वाइंटर्स थे। क्योंकि उन दिनों आईआईटी कानपुर के कम्प्यूटर साइंस की रैंक ऑफ ए.आई.आर. 28 (वर्ल्ड रिकार्ड) के करीब थी।

संस्थान के प्रोफेसर्स के बारे में पूछे जाने पर श्री रॉनी ने बताया कि प्रोफेसर हरीश कार्निक (जिनकी पत्नी उन्हें फ्रेंच पढाती थी) द्वारा तैयार की गई कम्प्यूटेशनल एग्जाम की थ्यरी सबसे कठिन रहती थी। प्रोफेसर अश्वनी कुमार का मैथ का 101 नामक लेक्चर पूरी कक्षा को चक्चर में डाल देने वाला होता था अर्थात् उनका लेक्चर पूरी क्लास के सिर के ऊपर से निकल जाता था। वह उस समय को याद करते हैं जब प्रोफेसर घोष चेप फंक्शन के बारे में पढ़ाते थे तो पहली लाइन (पंक्ति) में बैठने वाले विद्यार्थी घबराए-घबराए रहते थे। आईआईटी में अपने अंतिम वर्ष के दौरान श्री रॉनी को मुख्यतः यह निर्णय लेना था कि आगे के अध्ययन के लिए वह अमेरिका जाए (जोकि एक सु-व्यवस्थित मार्ग था) या फिर उन्हें आईआईएम में अपना अध्ययन जारी रखना चाहिए। व्यापक विचार-विमर्श के पश्चात उन्होंने अमेरिका की अपनी स्कॉलरशिप छोड़ दी तथा इसके स्थान पर आईआईएम अहमदाबाद जाने का निर्णय लिया । उन्होंने कैंपस साक्षात्कार के दौरान बताया कि आईआईएम में आवेदन करते समय उन्होंने सोचा भी न था कि आईआईएम में उनका चयन हो जाएगा। परिणाम वाले दिन वह होली के अबीर-गुलाल से रंगे हुए थे एवं अपने कमरे की ओर बढ़ ही रहे थे तभी साक्षात्कार लेने वाले व्यक्तियों में से एक ने उनसे चैतन्य महाप्रभू की जन्मतिथि तथा जन्म-स्थान के बारे में पूछा। उन्होंने अमर चित्र कथा कॉमिक्स पढ़ रखी थी इसलिए उन्होंने इस प्रश्न का उत्तर तुरंत दे दिया। आईआईटी तथा आईआईएम में अध्ययन के पश्चात श्री रॉनी ने वॉलस्ट्रीट स्थित विश्व की कुछ प्रमुख एवं बड़ी मल्टीनेशनल कंपनियों में कार्य किया हालांकि आईआईटी कानपुर में बिताए हुए दिनों को वह अपनी जिंदगी के सर्वश्रेष्ठ दिन मानते हैं।

श्री रॉनी की दोस्ती कुछ ऐसे व्यक्तियों से भी हुई जो जीवनभर के लिए उनके मित्र बन गए। संस्थान को हुई क्षति के रूप में वह आगे बताते हैं कि वास्तव में बहुत से असाधारण (प्रतिभावान) व्यक्ति संस्थान छोड़कर चले गये। हालांकि अस्तित्व बनाए रखने तथा सफलता अर्जित के लिए हरेक व्यक्ति को अत्यन्त अनुशासित बने रहने की आवश्यकता होती है। हरेक व्यक्ति को उस बात पर कायम रहना चाहिए जिसके बारे में उसके पास सर्वोत्तम जानकारी है। साथ ही साथ उसे इस यथार्थ पर भी कायम रहना चाहिए कि हर कोई सभी कार्य नहीं कर सकता । आपको हमेशा ऐसा व्यक्ति मिलेगा जो आपसे

बेहतर होगा परन्तु किसी भी व्यक्ति को अपने उपर कभी भी संदेह नहीं करना चाहिए क्योंकि हरेक व्यक्ति किसी न किसी कार्य में अच्छा होता है।

परोपकारी कार्य :

श्री रॉनी ने अपनी जीवन-यात्रा (कैरियर) के प्रारंभ में ही परोपकारी कार्य करने शुरू कर दिये थे । वर्ष 2002 में अपने साथियों की हांगकांग और टोक्यो में चकाचौंध भरी जीवनशैली तथा मनोरंजन संबंधित क्रिया-कलापों पर व्यय होने वाली धनराशि से स्तब्ध होकर श्री रॉनी अपने देश में इस विशाल और प्रत्यक्ष असमानता को देखकर गंभीर चिंतन में पड़ गये । उस समय जब व्यक्ति एक रात की पार्टी में सैकड़ों डालर खर्च करके मौज-मस्ती रहा था तब रॉनी ने अपने परिवार एवं मित्रों की मदद से कोलकत्ता में एक चैरिटी स्थापित की। 'उत्सर्ग' नामक एक चैरिटी की स्थापना की गई जिसके माध्यम से समाज के 30 वंचित एवं शोषित बच्चों को शिक्षित करने का कार्य प्रारंभ किया गया। इसके अतिरिक्त श्री रॉनी ने तीन उत्सुक परन्तु अज्ञात कलाकारों की प्रतिभा का भी सदुपयोग किया जिनकी प्रतिभा कला-सृजन के क्षेत्र में क्षीण हो रही थी । ख्याति प्राप्त चित्रकारों की कृतियों पर पैसा उड़ाने की बजाए उन्होंने इन अज्ञात कलाकारों की कृतियां को खरीदना पंसद किया । वास्तव में श्री रॉनी और उनकी पत्नी महुआ ने असाधारण परन्तु अज्ञात चित्रकारों/कलाकारों की खोज में काफी कार्य किये हैं।

उत्सर्ग चैरिटी के लघु स्वरूप से नाखुश होकर श्री रॉनी वेंकटकृष्णन (आईआईएम में उनके सहपाठी) के पास पहुंचे जो Give India के संस्थापक हैं। श्री रॉनी ने उनसे ऐसी परियोजनाओं में उन्हें शामिल करने का अनुरोध किया जो वृहद स्तर पर अच्छा कार्य करने वाले व्यक्तियों को खोजने में उनकी मदद कर सके। इन परियोजनाओं के माध्यम से उन्हें श्री चंद्रशेखर घोष, बंधन बैंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, विनायक लोहनी, परिवार के संस्थापक (निराश्रित बच्चों की परवरिश), पंकज जैन, ज्ञानशाला के संस्थापक (मलिन बस्ती शिक्षा परियोजना) तथा ममून अख्तर, समर्थन हेप्ल मिशन के संस्थापक (एक ऐसा संगठन जहां अपराध ग्रसित क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों के बच्चों को शिक्षित करके उनका भविष्य संवारा जाता है) जैसी हस्तियों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने इन परियोजनाओं के संस्थापकों से एक विशिष्ट लक्ष्य के साथ कार्य करने का अनुरोध किया। बंधन परियोजना के साथ TUP (अत्यन्त निर्धन लोगों पर केन्द्रित परियोजना) के तहत तकी नामक शहर (रॉनी के नाना के शहर) से 5 प्रतिशत अति निर्धन बच्चों को शिक्षित करने का कार्य प्रारंभ किया। ज्ञानशाला के तहत कोलकत्ता शहर में 2000 'शहरी-निर्धन-शिक्षा संबंधी परियोजनाओं' को संचालित किया गया। इन परियोजनाओं के माध्यम से रॉनी यह जानने में सफल हुए कि "देश की आवश्यकताएं असीमित हैं जबकि संसाधन सीमित हैं ।" उन्होंने उल्लिखित संस्थाओं/संगठनों के साथ अपने प्रगाढ़ संबंधों को कायम रखते हुए अशोका विश्वविद्यालय की स्थापना, चैरिटी वाटर (भूजल की समस्या-समाधान) जैसे एनजीओ तथा अखण्ड ज्योति (दृष्टिहीनता का उपचार) जैसे संगठनों की बेहतरी के लिए दान देना जारी रखा। वह हरेक उस परोपकारी कार्य में दान देना चाहते थे जिसके माध्यम से देश को समृद्ध बनाया जा सके। अपने इस कथन पर अटल रहते हुए कि "प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान देश को समृद्ध बनाते हैं" साथ ही साथ विश्वविद्यालयों/संस्थानों की प्रतिष्ठा को कायम रखने के प्रयास में डॉ. महुआ मेनन एवं श्री रॉनी राय द्वारा आईआईटी कानपुर में "सजनी रॉय मेमोरियल चेयर," प्रतिमा घोष स्कॉलरशिप तथा "यंग फैकल्टी चेयर," का गठन किया गया । उनका मानना था कि उनके इस प्रयास के कारण विद्यार्थी विदेशी संस्थानों का मोह त्यागकर आईआईटी में प्रवेश के लिए प्रेरित होंगे। इस तरह श्री रॉनी अपनी कल्याणकारी योजनाओं/प्रयासों में आगे बढ़ते रहे। उन्होंने उन पात्र व्यक्तियों एवं संगठनों की मदद करने का दृढ़ संकल्प लिया जो भारत के लिए बेहतर कल का निर्माण सुनिश्चित कर सके।

आगे की यात्रा

श्री रॉनी पांच अलग-अलग देशों में रहकर कार्य कर चुके हैं। उन्होंने 1996 में हांगकांग स्थित पेरेग्रीन में कार्य करने से पहले मुंबई स्थित बैंक ऑफ अमेरिका में कार्य किया। 1998 में आपने हांगकांग स्थित बार्कलेज में अपना कार्यभार ग्रहण किया। तत्पश्चात एक क्रेडिट व्यापारी के रूप में आपने मेरिल लिंच को ज्वाइंन किया। शीघ्र ही आप एशिया-फिक्स्ड इनकम, क्रेडिट एण्ड करेंसीज में सह-प्रमुख के पद पर विराजमान हो गये। वर्ष 2008 की आर्थिक मंदी के दौरान आपने मॉर्गन स्टेनली स्थित एशिया-फिक्स्ड इनकम डिवीजन के प्रमुख के रूप में कार्य प्रारंभ किया जहां पर 2011 तक अपनी सेवाएं उपलब्ध कराई । इस कालखंड को श्री रॉनी अपने जीवन का 'टर्निंग प्वाइंट'

मानते हैं। उल्लेखनीय है कि इसके पश्चात ही उन्होंने अपनी निजी फर्म के रूप में 'आरवी कैपिटल' की स्थापना की थी ।

आर. बी. कैपिटल की स्थापना करके श्री रॉनी ने अपने जीवन के दायरे को थोड़ा सीमित कर दिया। उल्लेखनीय है कि पांच सौ कर्मचारियों वाली एक बड़ी कंपनी के संचालन की जिम्मेदारी को छोड़कर उन्होंने पांच कर्मचारियों वाली एक निजी फर्म की स्थापना की। श्री रोनी आगे बताते हैं कि वास्तव में यह उनके जीवन की एक दुर्गम परन्तु रूचिकर यात्रा रही जो उन्हें हमेशा शिक्षा देती है कि "जीवन में आसान एवं दुर्गम दोनों प्रकार के रास्ते मिलते हैं, दुर्गम रास्ते चुनें क्योंकि उनमें अधिक आनंद आता है।"

आर. बी. कैपिटल, एक एसेट मैनेजमेंट कंपनी है, जो एक हेज फंड का संचालन करती है। यह एक ऐसी फर्म है जिसने कॉर्पोरेट ग्रेवी ट्रेल से मुक्ति पाने के लिए कड़ी मेहनत की। श्री रॉनी ने आर. बी. कैपिटल को शिखर पर पहुंचाने के लिए पिछले 8 वर्षों से अनवरत एवं अथक प्रयास किये हैं। अब इस फर्म में 27 कर्मचारी हैं जो US$ 750 MM मूल्य की परिसंपत्तियों का प्रबंधन देख रहे हैं। उल्लेखनीय है कि आरवी कैपिटल को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी धीरे-धीरे स्वीकृति एवं ख्याति हासिल हो रही है। इस धारणा में दृढ़तापूर्वक विश्वास करते हुए कि आज का दिन मेरे बचे हुए जीवन का पहला दिन है श्री रॉनी बताते हैं कि सफलता की खोज में आशावादी होना कितना महत्वपूर्ण होता है । चाहे यह खोज आई आई टी में एक युवा छात्र के रूप में रही हो या फिर एक विशालकाय फर्म में निदेशक के रूप में अथवा एक स्टार्ट-अप एसेट मैनेजमेंट कंपनी के सीईओ और संस्थापक के रूप में रही हो। उम्मीद है किसी एक क्षेत्र में उत्कृष्टता को खोजने से अन्य उपक्रमों के लिए निधि उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी जिसके फलस्वरूप भारत और अधिक सुदृढ़ बनेगा साथ ही साथ इससे असमानता भी दूर होगी।

....

गुरु

राह दिखाने वाले तो बहुत हैं लेकिन जो राह ते मायने समझा दे, वह गुरू है। पत्थर को तराशने वाले तो बहुत हैं । लेकिन जो तराश कर एक आकर्षक मूर्ति बना दे, वह गुरू है। परिचय दिलवाने वाले तो बहुत हैं लेकिन जो स्वयं से स्वयं का परिचय करवा दे, वह गुरू है। दीप जलाने वाले तो बहुत है, लेकिन जो हमारी हिम्मत बढ़ाकर अन्दर से विश्वास जगा दे वह गुरू है। युगो-युगो से गुरू-शिष्य का रिश्ता चलता आया है लेकिन जो कृष्ण अर्जुन, चाणक्य-चन्द्रगुप्त, द्रोणाचार्य-एकलव्य बनकर रिश्ते की मिसाल बना दे, वह गुरू है।
इस युग में सर झुकवाने वाले तो बहुत हैं लेकिन जिसे देखकर आदर से स्वयं ही हमारा सिर झुक जाए वह गुरू है।

मनिन्दर कौर
कनिष्ठ सहायक, कुलसचिव कार्यालय

अवगुंठन-2020 के अंतर्गत दिनांक 29 फरवरी से 1 मार्च तक दो-दिवसीय साहित्यिक समागम का आयोजन किया गया। अवगुंठन के तहत हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी, मोंटाज 2020 टॉक एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रमों का विवरण इस प्रकार से है :

हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी :

दिनांक 29 फरवरी से 1 मार्च तक दो-दिवसीय 'हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिसमें देशभर के निम्नलिखित प्रतिषठित प्रकाशकों ने इस प्रदर्शनी में भाग लिया। राजपाल एण्ड सन्स नई दिल्ली, अमन प्रकाशन कानपुर, प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन इलाहाबाद, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, राधाकृष्णन प्रकाशन इलाहाबाद, साहित्य भवन इलाहाबाद प्रकाशन के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने प्रकाशन की हिन्दी साहित्य की कालजयी रचनाओं को इस पुस्तक प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया। परिसरवासियों विशेषरूप से संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थीयों ने इस पुस्तक प्रदर्शनी का उस्ताहपूर्वक भ्रमण किया । उल्लेखनीय है कि प्रदर्शनी के दौरान राजकमल प्रकाशन एवं प्रकाशन संस्थान के स्टाल पर पुस्तक खरीदने वाले आगंतुकों की भारी भीड़ देखने को मिली। रवीश कुमार की 'बोलना ही है', अशोक कुमार पाण्डेय की 'कश्मीर और कश्मीरी पंडित', डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक की 'संसार कायरों के लिए नही', अनामिका की 'आईना साज', अनूप कुमार बरनवाल की 'समान नागरिक सहिता', रामधारी सिंह दिनकर की 'रश्मिरथी, दुश्यत की कविता 'साये में धूप', अनुपम मिश्रा की 'विचार का कपड़ा', मख्मूर सईदी की 'घर कही गुम हो गया', गिजु भाई की 'दिवास्वपन', सुरेश कांत की 'लेखक की दाढ़ी में चमचा', विजय निकोर की 'बहता है दर्द', सुधीर मौर्य की 'एक गली कानपुर की' आदि पुस्तकें सबसे अधिक पंसद की गईं एवं खरीदी गईं।

मोंटाज 2020 टॉक :

छात्र हिन्दी साहित्य सभा द्वारा 'मोंटाज 2020 टॉक' का आयोजन किया गया । 'साहित्य, समाज और नई हिन्दी' इस टॉक के प्रमुख विषय रहे। श्री नीलोत्पल मृणाल एवं श्री दिव्य प्रकाश दुबे को इस टॉक के लिए मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया जिन्होंने 'साहित्य, समाज और नई हिन्दी' विषय पर छात्रों के साथ अपने विचार साझा किये।

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन :

अवगुंठन 2020 के समापन-अवसर पर 1 मार्च 2020 की शाम देश के नामचीन कवियों के नाम रही। इस कवि सम्मेलन में देश के ख्याति प्राप्त कवियों एवं गजलकारों ने अपनी प्रस्तुति दी। शायर वसीम बरेलवी, हास्य कवि तेज नारायण शर्मा (बेचैन), डॉ. अनु सपन एवं डॉ रविकांत पाण्डेय ने अपनी शायरी, गजलों एवं कविताओं से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। वसीम बरेलवी ने 'नफरत के साथ भीड़ है, नारा है, जोश है,... मैं बात कर रहा हूं मोहब्बत की, अमन की, तनहा हूं और जिन्दा हूं, हैरत की बात है...' सुनाकर खूब वाहवाही लूटी। डॉ. अनु सपन ने 'दिल के कमरे में मैंने रखा है तुझे, जिंदगी अब तो बता किधर जा रही है...जिंदगी जब तपेगी निखर जाएगी, साथ कुछ पल तो बच्चों के खेला करों, खुद ब खुद उम्र अपनी ठहर जाएगी...इस कदर शोहरतों पर ना इतराइये, धूप है दोपहर की उतर जाएगी...' सुनाकर सभी को गुदगुदाया जबकि तेज नारायण शर्मा ने हास्य व्यंग... 'हिन्दू चेहरा लगाया तो मुझे मुसलमानों ने पीटा, फिर मैंने मुसलमान का चेहरा लगाया तो मुझे हिन्दुओं ने पीटा, फिर मैंने सिख का चेहरा लगाया तो मुझे हिन्दू और मुसलमान दोनों ने मिलकर पीटा...अंत में मैंने खूबसूरत औरत का चेहरा लगाया...तो फिर तीनों ने एक दूसरे को पीटा' सुनाकर सभी श्रोताओं को हर्षित कर

करीब करीब सत्ताईस साल पहले की बात है जब मैं यहाँ पहली बार आई। 1993 में प्रोफेसर कमल पोद्दार से मेरी बेटी की शादी के बाद मैं यहाँ आई थी। जब भी मैं कानपुर आई आई टी कैंपस में आती तो लगता था मानो किसी दूसरे ही जगत में पहुँच गई हूँ - चारो तरफ हरियाली, आसमान छूते ऊँचे ऊँचे पेड़, सभी क्वार्टर के बाग में रंग बिरंगे फूल, चहकते हुए तरह - तरह के पक्षी। इन सभी में सर्वश्रेष्ठ मोर जिसके फैले हुए पंख का दृश्य मैंने पहली बार इसी कैंपस में देखा।

मेरी नतनी के जन्म के बाद मेरे पति और मैं साल में दो तीन बार अवश्य यहाँ आ जाते थे। खासकर काली पूजा के समय तो आना ही था। पूजा पंडाल में माँ काली का दर्शन, सबसे मिलने का आनंद और भोग प्रसाद का स्वाद भूले नहीं भुलाया जाता। काली पूजा का एक और आकर्षण था बच्चों के लिए आयोजित प्रतियोगिताएं। खेल कूद , चित्रांकन, गीत, क्विज, गो अस यू लाइक, रंगोली जैसी प्रतियोगिताओं में कैंपस के बच्चे भाग लेते थे। इन बच्चों की कला कौशल से मैं मुग्ध हो जाती थी। मेरी नतनी मोनिका जब तीन साल की थी तब पहली बार वो एक फूल के रूप में स्टेज पर आई थी और उसे सांत्वना पुरस्कार मिला था। कई साल बाद फिर से फूल के रूप में

" पुष्प की अभिलाषा" कविता की कुछ पंक्तियाँ बोलकर उसे प्रथम पुरस्कार मिला था। इसी बीच प्रत्येक वर्ष कभी परी तो कभी मोर्जियाना कभी मीराबाई बनकर उसे पुरस्कार मिलता रहा। चित्रांकन में भी उसे कई पुरस्कार मिले। गाने में भाग लेने से पहले उसे मै तीन चार दिन तालीम देती थी और उसके साथ हारमोनियम बजाने मैं भी स्टेज पर बैठ जाती थी। पुरस्कार मिलने पर लगता था मेरा परिश्रम सार्थक हुआ।

इन सुन्दर स्मृतिओं को मैं जीवन के और भी सुखद यादों के साथ अपने मन मंदिर में रख दी हूँ। जब कभी मन उदास हो जाता है पहुँच जाती हूँ मन मंदिर के द्वार। अंदर झांकते ही ये सब मोती झलक उठते हैं और याद आ जाता है गुरुदेब रबीन्द्रनाथ ठाकुर का एक गीत -

" हृदय मंदिर द्वार पर गूंजे सुमंगल शंख

शत मंगल शिखा करे भवन आलोकित

फैले निर्मल फूलों की सुगंध "

स्वप्ना दास, परिसर निवासी

> अंग्रेजों के शासन के कारण और मैकाले की शोषक व गुलाम बनानेवाली शिक्षा-पद्धति के कारण हम हिन्दुस्तानी होते हुए भी हमारा दिल दिमाग गुलामी से भरा हुआ है। गुलामी की जंजीरों को तोड़ो! अपने देश की भाषा की, अपनी संस्कृति की रक्षा आप नहीं करोगे तो क्या आपके दुश्मन करेंगे?
>
> महात्मा गाँधी

इधर–उधर

इधर

तुम तो दुबके रहे घर पे, सहमें,
विषम होती परिस्थिति झेलते,
सोचते, समझते, झल्लाते,
व्यग्रता से गुल्लक खंगालते,
अंतर्मन के भय को छिपाते।

उधर

मौत का जकड़ता रहा तांडव,
शून्यों का बढ़ता रहा जमावड़ा,
ये करो, वो करो, ये तुम करो न,
परिस्थिति बदलेगी, तुम डरो न,
कहीं कुछ तो आशा है, ढूंढो न।

इधर

क्या सही है क्या गलत ?
कर्म है, या है कलयुगी प्रपंच?
अर्ध विराम? या पूर्ण विराम?
तुम्हारा कुकृत्य या दैवी रोष?
बढ़ता केवल प्रश्नों का अम्बार।

उधर

चहुं ओर शांति, निरभ्र गगन,
प्रस्फुटित हो रहे नूतन स्वर,
स्वच्छ नीर, शीतल होती वायु,
नवजीवित होते वन-उपवन,
तुम्हारी अनुपस्थिति से प्रफुल्लित।

इधर

क्या अपनी दिशा बदलोगे?
या भूल जाओगे ये संस्मरण?
फिर पकड़ोगे अहंकारी राह?
संकुचित, स्वार्थी, ओछी चाह?
वही, जिस पर आज कराह रहे?

उधर

तुम रहो, न रहो, वसुंधरा रहेगी,
नगण्य, तुच्छ, दुर्बल हो, संज्ञान रहे,
अनंत ब्रह्मांड के क्षणभंगुर बुलबुले,
तेरे अस्तित्व का औचित्य कुछ नहीं,
याद रख ये औकात ही तेरी कुछ नहीं।

डॉ. समीर खांडेकर, यांत्रिक अभीयांत्रिकी

असफलता का अर्थ

असफलता का अर्थ यह नहीं-आप असफल व्यक्ति हो।
इसका अर्थ है-आप सफल नहीं हो पाए
असफलता का अर्थ यह नहीं कि-आपको कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ।
इसका अर्थ है-आपको काफी कुछ सीखने को मिला।
असफलता का अर्थ यह नहीं-आपके पास क्षमता की कमी है।
इसका अर्थ है - आपको कुछ अलग तरह से करना है।
असफलता का अर्थ यह नहीं - आप मूर्ख बन गए।
इसका अर्थ है - आप को अपने आप पर अपार विश्वास है।
असफलता का अर्थ यह नहीं - आप लज्जित हो गए।
इसका अर्थ है - आपमें कार्य करने की इच्छाशक्ति है।
असफलता का अर्थ यह नहीं - आपने जीवन व्यर्थ किया।
इसका अर्थ है - आप को नए से शुरु करने का अवसर प्राप्त हुआ।
असफलता का अर्थ यह नहीं - आप पलायन करें।
इसका अर्थ है - आप और कड़ी मेहनत करें।
असफलता का अर्थ यह नहीं - आप कभी कर ही नहीं सकते।
इसका अर्थ है - कुच अधिक समय लग सकता है।
असफलता का अर्थ यह नहीं - भगवान ने साथ नहीं दिया
इसका अर्थ है - भगवान ने आपके लिए बेहतर रास्ता खोल दिया।

उदय मजूमदार, पूर्व कर्मचारी

कुछ अच्छी बातें; कुछ सच्ची बातें

(I)

बातें अच्छी हों तो सभी को अच्छी लगती है। अब ये बातें सच हैं या झूठ ये तो हम बाद में सोचते हैं । बच्चों को हम ये ज़रूर सिखाते हैं कि सदा सत्य वचन कहना चाहिये और अच्छी बातें कहनी चाहिए।

याद है जब संस्कृत का विषय हमारे पाठ्यक्रम में जुड़ा था तो श्लोकों के प्रथम अद्ध्याय का दूसरा श्लोक था –

"सत्यम ब्रूयात प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात सत्यम् अप्रियम

प्रियं च नानृतम ब्रूयात, एष धर्मः सनातनः।"

अर्थात – सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए, अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिये। प्रिय असत्य नहीं बोलना चाहिये, यही सनातन धर्म है।

ये पाठ हममें से कितनों ने पढ़ा ये तो पता नहीं और पढ़कर कितनों ने अपने जीवन में उतारा ये भी कहना मुश्किल है। सच पूछिए तो अक्षरशः पालन शायद किसी ने न किया हो। कभी न कभी असत्य वचन हर एक ने कहा होगा। ये तय है कि उस असत्य से यदि किसी को हानि न पहुंची हो और भी यदि किसी का भला हुआ हो तो वो क्षमा के योग्य है। कई बार ऐसा भी होता है कि हमारी बातें साधारण होते हुए भी किसी को ठेस पहुंचा जाती है तो क्या वो अप्रिय वचन कहलायेगा? उदाहरणार्थ यदि स्वाभिमानी दादाजी को अगर कोई मदद करना चाहे और उनके सामान को उठाने में मदद करना चाहते हुए कहे, " लाइए थैला मैं उठा लेता हूँ। " संभव है दादाजी रूठकर बोल उठें , " अभी मैं उतना भी बूढ़ा और कमज़ोर नहीं। " परिस्थिति और परिजन पर निर्भर है कि हमने सत्य और प्रिय वचन बोला या नहीं।

अप्रिय सत्य और प्रिय असत्य वचनों से भी हमें दूर रहना चाहिए। श्लोक के अनुसार यही सनातन धर्म है। पर क्या हम हर समय ऐसा कर पाते हैं? कई बार हम एक दूसरे की झूठी तारीफ करते हैं जो कि प्रिय असत्य कहलायेगा और जब किसी को, खासकर बच्चों को सुधारने के लिए उनकी गलतियों को उनके सामने लाकर उन्हें समझाने का प्रयास करें तो भी वो अप्रिय सत्य ही होगा। प्रिय झूठ कहने से शायद हम बचकर रह सकते हैं पर अप्रिय सत्य से बचना बहुत ही मुश्किल है। फिर भी 'सच्चाई में ही अच्छाई है ' इस बात को नकार नहीं सकते।

(II)

बातों कि सच्चाई का असर जीवन पर अवश्य पड़ता है। जाने अनजाने झूठी बातों को सच मानकर चलना खतरों से खाली नहीं। जैसे कि कोई स्वस्थ व्यक्ति यदि सहानुभूति पाने के लिए अपने आप को बीमार बताये तो वो स्वयं इसे सच मान बैठता है और सचमुच बीमार हो जाता है।

हमारे देश में मध्यम वर्गीय परिवार का जीवन बड़ा ही नपा तुला होता है। जन्म, शिक्षा, रोजगार, विवाह इत्यादि के पूर्वनिर्धारित चक्र की बात न करते हुए यदि हम सामाजिक संपर्क व दायित्व जैसे परिधीय विषय की ओर चलें तो सर्वप्रथम " लोग क्या कहेंगे " जैसे झूठे मापदंड का सामना होगा। आत्मसम्मान के नाम पर अपने सामर्थ्य से अधिक आडम्बर मध्यमवर्गियों की आदत है। इसके जवाब में कहे गए शब्द " करना पड़ता है! " कोई माने नहीं रखता। ये नहीं भूलना चाहिए कि परिवार की भलाई और अपनी भलाई सर्वोपरि है। बदलना होगा बेकार की सोच और तत्संबंधित कर्मकांडों को।

(III)

मध्यमवर्गीय जीवन शैली जो चली आ रही थी, अब विश्वव्यापी बदली हुई परिस्थिति के कारण बदल चली है। एक ढर्रे में बंधी ज़िन्दगी की राह पर चलते चलते इंसान अपनी काबिलियत भूल जाता है। भूल जाता है अपनी छुपी प्रतिभा को।

आज गृहबन्दी होकर लोग अपने बचपन के सपनों को पूरा करने में लगे हैं। कोई चित्रकारी तो कोई सिलाई कढ़ाई में लगा है। कोई संगीत और नृत्य की साधना, जो जीवन के दायित्वों के बीच खो गया था, में लगा है और भोजन तो आवश्यक है – तो बहुत से लोग तरह तरह के व्यंजन बनाकर समय भी काट रहे हैं और परिजनों को खुश भी कर रहे हैं।

इस समय पूरा परिवार हर समय घर में एक साथ होने के कारण एक दूसरे के साथ अधिक समय बिता रहे हैं। साथ ही कई बार मतभेद की नौबत भी आती है। ऐसी स्थिति में हमें ये तय करना है कि कब सच बोलना है और कब चुप रहना है। चुप रहना या बात छुपाना झूठ के बराबर है या नहीं ये बात की विशिष्टता पर निर्भर करता है।

सच्ची बात ये है कि जीवन को बस कर्म और दायित्व में नहीं बांध लेना चाहिए। हर इंसान का अपने प्रति भी एक कर्त्तव्य यह है कि स्वयं को स्वस्थ और खुश रखे तभी वो परिवार को भी खुशहाल रखने में समर्थ होगा।

डॉ अंजना पोद्दार

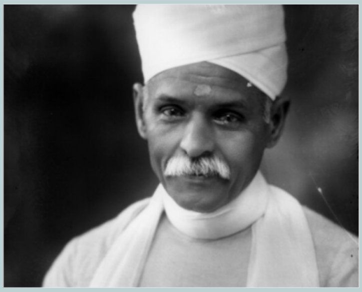

पावन उदगार

भविष्य में हिन्दुस्तान की उन्नति हिंदी को अपनाने से ही हो सकती है। बिजली की रोशनी से रात्रि का कुछ अंधकार दूर हो सकता है किन्तु सूर्य का काम बिजली नहीं कर सकती, इसी भाँति हम विदेशी भाषा के द्वारा सूर्य का प्रकाश नहीं कर सकते। साहित्य और देश की उन्नति अपने देश की भाषा द्वारा ही हो सकती है।

महामना पंडित
मदन मोहन मालवीय

'ह्यूमन लाइब्रेरी यानी कि आप अपनी मनपसंद 'इंसानी किताब' ले सकते हैं, यानी कि उसके साथ कुछ वक्त बिता सकते हैं और उन मुद्दों पर बात कर सकते हैं जिनमें उसे महारत हासिल है. जैसे- आप खेल के क्षेत्र में भविष्य बनाना चाहते हैं तो आप उस व्यक्ति को जो खेल के क्षेत्र सफलता हासिल कर चुका है उसे ह्यूमन लाइब्रेरी के रूप में ले सकते हैं उससे बात करके उससे मार्ग दर्शन ले सकते हैं । इसी तरह आप अपने विषय,रूचि, मार्ग दर्शन, सलाह आदि के अनुसार अपनी ह्यूमन लाइब्रेरी का चयन कर सकते हैं।

दुनिया में पहली ह्यूमन लाइब्रेरी साल 2000 में डेनमार्क में शुरू हुई थी। तब वहां के एक युवा रॉनी एबेरगेल ने अपने भाई और दोस्तों के साथ मिलकर इस विचार को मूर्त रूप दिया था। इसका मकसद था – 'इंसानी किताबों' के अनुभव का इस्तेमाल एक बेहतर दुनिया बनाने में करना। धीरे-धीरे यह विचार इतना लोकप्रिय हुआ कि दुनिया में कई जगहों पर ह्यूमन लाइब्रेरियां बनने लगीं। आस्ट्रेलिया ऐसा पहला देश है जहां एक स्थायी ह्यूमन लाइब्रेरी है। अंतराष्ट्रीय स्तर पर ह्यूमन लाइब्रेरी को बढ़ावा देने के लिए http%@@humanlibrary-org@ संस्था काम करती है।

18 वर्षों की अवधि में ह्यूमन लाइब्रेरी 70 से अधिक देशों में फैल गई है। देश में सबसे पहले 'ह्यूमन लाइब्रेरी' की शुरुआत 2016 में आईआईएम इंदौर में हुई थी और धीरे धीरे यह दिल्ली , बैंगलोर, हैदराबाद , कोलकाता, मुंबई आदि बड़े शहरों में फैल गयी है, और उम्मीद है जल्द ही यह भारत के छोटे शहरों में भी इसका प्रचार प्रसार बढ़ेगा।

Dr. APJ Abdul Kalam की एक अंग्रेजी कहावत है कि जो की ह्यूमन लाइब्रेरी पर सटीक बैठती है "One Best Book is equal to hundred good friends, one good friend is equal to a library.वस्तुत: एक बहुत अच्छी किताब सैकड़ों अच्छे मित्रों के बराबर हो सकती है, परन्तु एक अच्छा मित्र एक पुस्तकालय के समान होता है।"

विवेक कुमार यादव
पी के केलकर पुस्तकालय

अस्तित्व

थक जाता समय की उलझनों से
हार जाता अपनी कमजोरियों से
तो संसार से दूर ढूंढता एकांत
किसी अज्ञात को तलाशता सा
अपने अस्तित्व को टटोलता सा ।
किन्तु न कभी मिलता वो एकांत
न पूरी होती वो तलाश !
क्योंकि हर पल वो होते साथ
स्मृति पटल पर दृढ़ता से अंकित
देते सजीव सम्मुख अहसास
न होने देते निराश, न हताश
तन जाते सिर पर वट-वृक्ष से
झुलसते थपेडों में शीतल जल से
कंपकंपाती शीत में सूर्य रश्मियों से
दे जाते एक सुखद सी राह
और मैं बढ़ जाता उन्मुक्त सा बेपरवाह।
स्मृतिपटल पर आज भी वो अंकित
किन्तु अब नहीं वह सम्मुख अहसास
छोड़ गए वो डेरा अपना आगामी है प्रवास
न ही रहा उन्मुक्त अब मैं, न ही बेपरवाह
हृदय में समाहित हुये मेरी प्रकृति के निर्माता
मेरे प्रथमेश्वर, अर्थात मेरे पिता और माता
हाँ ! अब नहीं वह सम्मुख अहसास
अब तो खोजना ही होगा स्वयं को
शेष रह गयी स्मृतियों के साथ।

सोमनाथ डनायक, पदार्थ विज्ञान एवं विभाग

एक मुलाकात जिंदगी से

जब मैं टूट जाता दुखों से

ऐ जिंदगी थोड़ा ठहर

अपनी रफ्तार कम करले
आ बैठ
आज तुझसे मुलाकात करनी है
कुछ बात करनी है
शिकवे हैं कई
और थोड़ा हिसाब करना है
जेब में पैसे नहीं
दिन में चैन नहीं
रात में नींद नहीं
मन को सुकून नहीं
आखिर क्यों है इतना शोर
क्या है ये जूनून
क्यों हो इतने बेचैन
रहते हर वक्त उदास
किसकी है तुम्हें तलाश
क्यों दौड़ रही हो
हमें इतने दुख दे रही हो
क्या हम पर कभी तरस नहीं आता
देखकर स्थिति हमारी
तेरा मन बिल्कुल भी नहीं सकुचाता
सवालों के इस बौछार से
सुनकर बड़े ध्यान से
कुछ सोचकर कुछ अनुमान से
जिन्दगी ने कहा
तेरे मन में खोट है
निशाना तेरा बड़ा और हौसला छोटा है
यकीन नहीं तेरा खुद पर
और करता हर वक्त बराबरी का प्रयास है
हसरत मौजों की पालता है
और कोशिश साहिल की करता है
नहीं विश्वास तेरा संघर्षों में
तो फिर क्यूँ ख्वाब देखता है
तू ही सबब है अपनी हर शिकस्त का
फिर इल्जाम क्यूं दूसरों के सर डालता है
सुनकर जवाब
और देखकर आईना
मैं बिल्कुल सन्न था
छँट रही थी धुंध धीरे-धीरे
और उठ गया था आँखों से पर्दा

प्रभाकर कुमार पांडेय शोध-छात्र

वाह रे कोरोना ये कैसा तेरा वार है"

सारी दुनिया में मचाया तूने हाहाकार है,
वाह रे कोरोना ये कैसा तेरा वार है॥
हम सबकी भी अब यही हुंकार है,
तुझे हराकर ही अब हम सबका बेड़ा पार है॥
वाह रे कोरोना ये कैसा तेरा वार है॥
वाह रे कोरोनां ये कैसा तेरा वार है॥
बुजुर्गों और बच्चों पर किया तूने अत्याचार है,
इसलिए इनको रहना ज्यादा होशियार है,
भीड़ भाड़ वाली जगहों में ना जाना अगर समझदार हैं ॥
भारत का हर युवा अब लड़ने को तैयार है,
जागो एक जुट हो जाओ सब अब वक़्त की यही दरकार है॥
वाह रे कोरोना ये कैसा तेरा वार है॥
वाह रे कोरोना ये कैसा तेरा वार है॥
कोरोना से लड़ने का अभी एक ही हथियार है,
सावधानी ही इसका एक असाधारण उपचार है॥
इसलिए तो जागरूकता अभियान चला रही सरकार है,
रहना होगा सतर्क क्योंकि हम सभी नागरिक जिम्मेदार है॥
वाह रे कोरोना ये कैसा तेरा वार है॥
वाह रे कोरोना ये कैसा तेरा वार है॥
दुनिया की महाशक्तियों को किया तूने लाचार है,
खत्म ना कर पाया भारत को कितने ही रोगों ने
गवाह इसके बड़े बड़े इतिहासकार हैं सस
कोरोना तेरा भी एक दिन काल आएगा,
क्योंकि भारत की रक्षा खुद करते महाकाल है॥

वाह रे कोरोना ये कैसा तेरा वार है॥

भरत सोमैया, संगणक केन्द्र

अब क्षितिज के पार जाऊँ

वेदना की चढ़ नसेनी
अब क्षितिज के पार जाऊँ
तोड़ कर सब बंदिशों को
क्यों न अम्बर पग बढाऊँ।।
साँझ के अवसान में
है सिंदूर भरती अरुणिमा
घेर न ले कहीं निशा-निराशा
घिरि गहन फैली कालिमा।।
बट-बट विफल मन वर्तिका
चीर तिमिर घन दीप जलाऊँ
वेदना की चढ़ नसेनी
अब क्षितिज के पार जाऊँ।।
हो सजल घन मौन हम कण
छायी उदासी बेबसी
जुल्म की असहाय पीड़ा
कर रही नित खुदकशी।।
हो न फिर अन्याय हलचल
निज शौर्य साहस सर उठाऊँ
वेदना की चढ़ नसेनी
अब क्षितिज के पार जाऊँ।।
जो दृष्टि गड़ाए शून्य में
इच्छाओं का परित्याग कर
है काँप रहा थर-थर मन व्याकुल
भय आहट दुख संताप पर।।
सूखे पतझड़ मन वदर वत पर
पावस घन बौछार लुटाऊँ
वेदना की चढ़ नसेनी
अब क्षितिज के पार जाऊँ।।

मनोरमा शुक्ला, माँ-देवेश शुक्ला

आज आप सभी को बताने जा रही हूँ एक विस्तृत बाल लीला और कमोबेश आपकी निराधार रह जाने वाली समझावन शक्ति। कल 21 जून 2020 को सदी का बड़ा सूर्यग्रहण पड़ा, मुझमें इन सब विषयों के प्रति बचपन से ही कौतूहल रहा है, देश में क्या हो रहा है, प्रकृति का क्या प्रभाव है आदि-आदि। इसी कौतूहलवश मैंने इंतजाम किया सूर्यग्रहण देखने का और बस उसी वक्त से चालू हुआ सवालों का जखीरा और उत्तर देने की हमारी क्षमता का परीक्षण।

मेरी चार साल की बिटिया बड़ी ही गंभीरता से मेरी उत्सुकता निहार रही थी और अचानक पहला सवाल उभरा माँ आप क्या कर रही हो? मैंने पूरे जोश में बताया आज सूर्यग्रहण है उसे देखने की तैयारी, सवाल फिर आया माँ सूर्यग्रहण क्या होता है? इस सवाल का जवाब देने में खासी उत्साहित और जोश में थी इस बात से एकदम अनिभिज्ञ की आगे के प्रश्नों में मैं निरुत्तर होकर बगलें झाँकूगीं, मैंने उससे बताया कि जब धरती और सूरज के बीच चाँद आ जाता है और सूरज को ढ़ंक देता है तो उसे सूर्यग्रहण कहते हैं, अब मेरे से ज्यादा उसकी उत्सुकता बढ़ी और थोड़ा गुस्से में बोली चंदा मामा बीच में क्यों आते हैं क्या धरती और सूरज लड़ाई कर रहे थे? मैंने हंसते हुए कहा नहीं धरती भी गोल है, सूरज भी गोल है और चंदा मामा भी गोल हैं तो जब सब घूमते हैं तो कभी चंदा मामा धरती के सामने आ जाते हैं और कभी धरती चंदा मामा के सामने (उसे सूरज भगवान और चंदा मामा ही सुनने का अनुभव है बचपन से) आ जाती है।

अब तो उसने गुस्से में मुझे डाँटा अरे आपको पता नहीं है धरती गोल थोड़ी होती है। अब मैं निरुत्तर हो उसे निहारती रही फिर समझाने का प्रयास किया कि नहीं मेरी बच्ची धरती भी गोल होती है इस पर उसका गुस्सा जोर से फूटा मुझ पर बोली पापा देखो माँ को कुछ नहीं आता, ये बोल रही हैं धरती गोल होती है। अब अपनी विवशता हंसी में छुपाते हुए मैंने कहा अच्छा गलती हो गई, चलो ग्रहण देखें तो बोली ठीक है, मैंने घर में किए इंतजामों से उसे घर के अंदर ही इमेज के माध्यम से ग्रहण दिखाया और पूछा क्या दिख रहा है वो फटाक से बोली चंदामामा मैंने कहा अरे नहीं वो सूरज भगवान हैं और एक बार फिर उसका गुस्सा फूटा अरे माँ आप क्यूं नहीं देखतीं ये चंदामामा हैं।

मैंने देखा ग्रहण के कारण सूर्य चाँद जैसा दिख रहा था। फिर मैंने उसे समझाया की नहीं बेटा ये सूरज भगवान ही हैं चंदा मामा धीरे-धीरे उनके सामने आ रहे है तो वो छुप जा रहे हैं, इतने में ही तपाक से वो बोली देखा पापा माँ को कुछ नहीं आता अरे सूरज भगवान के आगे अगर चंदा मामा खड़े होंगे तो चंदा मामा ही दिखेंगे न और अब मैं मुस्कुराते हुए निरुत्तर ही खड़ी रह गई। ★

अल्पना शुक्ला

परियोजना कर्मचारी

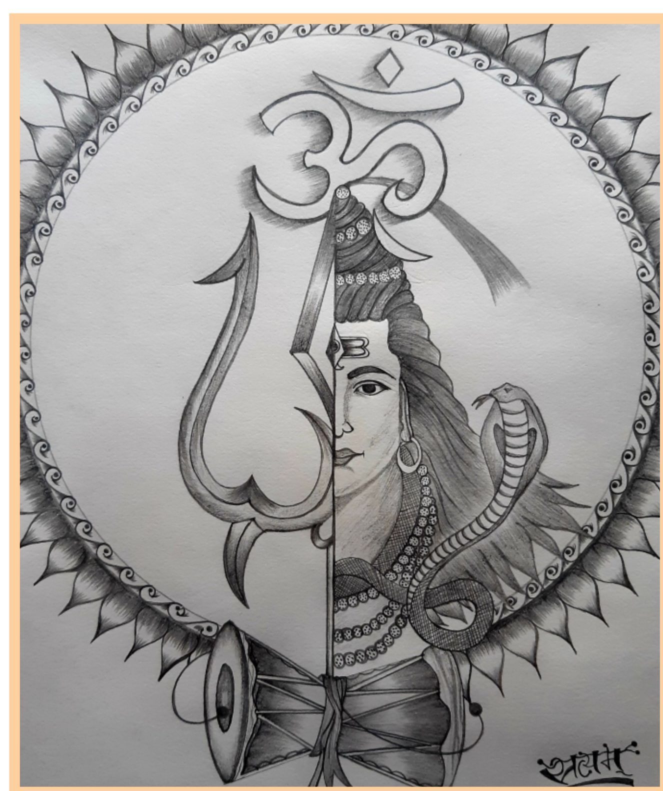

शोध छात्र सत्यम द्वारा रचित चित्रकारी

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी कहा करते थे-'भारत के गाँव भारत की आत्माश् आत्मा से तात्पर्य है -भारत के मूल चिन्तन एवं तत्व यहाँ की परम्पराएं एवं चिर पुरातन नित नूतन संस्कृतिए जिसमें परोपकार की सर्वोपरि भावनाएं, परमार्थ-सेवा-भाव तथा माता भूमि पुत्रो अहम् पृथ्विया का भाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। ऐसी ही भारत के गाँव की एक अनुभूति यहाँ साझा कर रहा हूँ।

पश्चिमी भारत के जनजातीय समाज का सांस्कृतिक एवं भौगोलिक क्षेत्र, म.प्र. का झाबुआ, जो अपने आँचल के गाँवों में 13 लाख की भील; जनजातीय आबादी को समेटे हुए है, वैसे तो यह जिला म.प्र. की व्यवसायिक राजधानी इंदौर से महज 150 किमी. की दूरी पर है किन्तु आजादी के इतने वर्षो के बाद भी विकास की गाड़ी यहाँ आने से पहले ही कहीं भटक गई।

कहते हैं कि यदि समाज सशक्त एवं संगठित है तो वह भीषण से भीषण समस्या का निदान स्वयं कर सकता है। उसी क्रम में झाबुआ के भीलों ने परस्पर विचार-विमर्श करके पाया कि उन पर जो भी आर्थिक एवं सामाजिक संकट है, उन सबके मूल में है-जल की भीषण समस्या-जल संकट। फिर क्या, संकल्प लेकर उसके निदान के लिए कमर कर ली। उसी संकल्प के गर्भ से जन्म हुआ, 'हलमा'-एक महान भीली परम्परा का, जोकि एक सामूहिक व्रत है। प्यासी धरती माता की प्यास बुझाने के लिए सामूहिक श्रमदान का एवं अपने समाज को उन्नत व अग्रसर बनाने का। 'हलमा' जिसमें समूचे जिले के विभिन्न गाँवों से लगभग बीस हजार) लोग इकट्ठे आते हैं अपनी गेंती, कुदाल, फावड़ा साथ लाते हैं और मन में केवल एक ही संकल्प होता हए है परमार्थ सेवा का। पूरे शहर में गेंती यात्रायें निकाली जाती हैं, जिसमें सभी हलमार्थियों के कंधों पर गेंती, फावड़ा होता है और भाव वही जो एक सैनिक के मन में बंदूक को कंधे पर रखकर होता है। जय घोष उन गेंती यात्राओं में गूँजता है-

गाँव-गाँव में जायेंगे, शंकर जटा बनायेंगे।

कौन हमारा सुखदाता ? धरती, गंगा, गौमाता।

गेंती यात्रायें – गेंती, फावड़ा आदि को सम्मान देते हुए समाज में एकता, संगठन एवं परमार्थ सेवा का बिगुल फूँक देती है। रात्रि विश्राम के उपरान्त सभी हलमार्थी मिलकर प्रातः श्रमदान के लिए हाथी पावा की पहाड़ी पर पहुँचकर जल संरचनायें बनाते हैं जिसमें बच्चे, महिलायें एवं बुजुर्ग सभी की सहभागिता रहती है।

वर्तमान समय में 20,000 स्त्री, पुरूष व बच्चों का मिलकर परमार्थ के लिए इकट्ठे आना और मर्यादित एवं अनुशासित होकर प्रकृति संरक्षण का कार्य करना, ऐसा दुर्लभ ही जान पड़ता है परन्तु हलमा में हमने ऐसा होते हुए देखा।

हम पहुँचे तो थे वहाँ उन लोगों को अभावग्रस्त, दरिद्र एवं आदिवासी जानकर किन्तु वहाँ पहुँचकर आभास हुआ कि हमें उनसे बहुत कुछ सीखना चाहिए। वे निर्धन हो सकते हैं, किन्तु दरिद्र तो कतई नहीं। परस्पर आत्मीयता, धरती माता से असीम प्रेम, पंचतत्वों एवं जल, जंगल, जमीन के प्रति उनका चिंतन सचमुच प्रेरणादायी है। हलमा के द्वारा अब तक 65 तालाब; (400 करोड़ ली. क्षमता) 141000.कंटूर टंर्चें एवं 4500 अन्य जल संरचनाओं का निर्माण कर प्रतिवर्ष 2000 करोड़ लीटर प्रतिवर्ष कुल जल का संवर्धन किया है। आज झाबुआ में संकल्प सिद्धि को प्राप्त होते हुए दिख रहा है, वहाँ सबके मन में एक ही विचार हिलोरे ले रहा है-एक नहीं लाखों हैं भगीरथ, गाँव-गाँव बन जायेगा तीरथ।

सच में झाबुआ ने जीवन में अद्भुत मानव एवं प्रकृति प्रेम के दर्शन कराये। मानो स्वावलम्बन एवं आत्मनिर्भरता का जैसे साक्षात्कार हुआ हो। सीमित संसाधनों में संतुलित जीवन शैली वहाँ जीवन्त होती है।

एक ही भाव है- यह तो पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे। वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे। 'मैथलीशरण गुप्त'आज जब हम वैश्विक महामारी कोरोना से जूझ रहे हैं तब शायद ध्यान में आता है कि प्रकृति ने हमें चपत लगाई है कि हे मानव! अपनी बुद्धि का दुरुपयोग न करके कर्तव्य बोध को जानो। एक ओर जहाँ मानव ने पंचतत्वों के साथ दुर्व्यवहार किया। जल, जंगल, जमीन को पेट की कब्रगाह में समेटते जा रहा है, वहीं दूसरी ओर हमारे सम्मुख झाबुआ के लोगों का चिंतन एवं उनकी कार्यशैली है। निर्णय हम सबको करना है कि आत्मनिर्भर भारत का हमारा स्वप्न किस आधार पर क्रियान्वित होगा। स्वावलम्बी स्वाभिमानी भाव जगाना है,

चले गाँव की ओर, हमें फिर आत्मनिर्भर देश बनाना है।

जय हिंद.जय भारत अश्विनी कुमार, शोध छात्र

पतंगा, नाम तो आपने सुना ही होगा , हाँ वही जो कभी- कभी आप के बगीचे, असोरे या बालकनी, में "झरररररर" की आवाज के साथ आपसे वार्तालाप करने आता है शायद। वो फड़फड़ाते हुए पर , लहराते हुए अरमान, खुलती बंद होती परतें, चमकते हुए चक्षु श्रोत, सटीक भरे हुए रंगों से सजी काया, कुछ अलग ही प्रतीत होता है वो। जब- जब ओस की बूंदों पर फिसलता हुआ निकालता है वो तो कुछ ऐसा अनुभव होता है जैसे की कुछ संगमरमरी स्मृतियाँ जीवन के आँगन में फिसल रही हो। अब इसके जीवन की अद्‍भुतता अलग-अलग आयु वर्ग के लोगो को अलग प्रभावित करती हैं। जैसे एक छोटे बच्चे के लिए अपार आनंद देने वाला कुछ बहका-बहका सा मित्र, किसी किशोर के लिए दूर से गुजरता हुआ प्राप्त कर लेने जैसा स्वप्न, एक अधेड़ के लिए अनमना सा कुछ, और एक वान्यप्रास्थगामी के लिए कई बंधनों से दूर ले जाना वाला।

इन सब दृश्यों के बीच, सामानांतर विचारों में, लगता हैं न कि कहीं रास्ता भटक गया है। कोशिश करता है, बार-बार आपकी दीवारों के उस पार जाने की। आप भी सोचते होंगे की आखिर क्यों, दीवार से टकराना ही क्यों , दरवाजे, खिड़कियां, रोशनदान सब तो खुले रखे हैं मैंने, फिर भी क्या दिग्भ्रमित पतंगा हैं, दीवार से ही होकर जाना है इसे, नादान है क्या? कहीं इसे पौधे की सुगंध तो नहीं चढ़ गयी जो इसे दिशाहीन बना रही है। न जाने कैसे-कैसे ख्याल आते होंगे आप के जेहन में। फिर आप भूल जाते होंगे, खो जाते होंगे अन्य कार्यों में, विस्मृत हो जाती होंगी वो सारी अवधारणाएं। और शायद यही प्रक्रिया फिर उग आती होंगी आपके मानस-क्षेत्र में, जब कोई नया पतंगा आता होगा। कभी-कभी ऐसा ही अनुभव हमें तब होता है जब हमारे परिसर में कुछ और तरीके के "स्वछन्द पतंगे" हर वर्ष आते हैं। वही अनबूझ सी आवाजें, पर उन आवाजों में कुछ नयापन , दीवारों को भेदने की चाहत खिड़की दरवाजे खुले होने पर भी पता नहीं क्य-क्या सोचने लगते हैं हम, नयी-नयी अवधारणाएं बनने लगती है कि पता नहीं किन पेड़ों से होकर आएं हैं ये, न जाने क्या आवश्कताएँ और सुविधायें रही होंगी उनकी पहले के परवरिश में और ना जाने क्या क्या ? पर हम भूल जाते हैं कि ये पतंगे वही हैं, हाँ वही, जो खुद को रोशनी के श्रोत से मिलने की जिद में अपने अस्तित्व की परवाह तक नहीं करते, वो खुद को ज्ञान के प्रकाश में मिलाकर ऊर्जा स्रोत बन जाते हैं। वो यहाँ आते ही है एक प्रकाश पुंज देखकर, मंडराते हैं , उड़ते हैं , बैठते हैं, हमारे द्वारा बनायीं गयी कुछ अनुशासनात्मक दीवारों से टकराते हुए दिखते हैं , लेकिन प्रयास हमेशा उनका प्रकाश पुंज तक पहुँचने का ही होता है। शायद हम ही कभी- कभी उनकी उन स्वछन्द आकांक्षाओं को पहचान नहीं पाते। जब एक घनघोर तम में प्रकाश का स्रोत कही दूर घर की गहराईयों में छुपा कर रखा हो तो वो पतंगे तो प्रयास करेंगे ही उस तक पहुंचने का, और यूँ ही नहीं .... तम के उन परिचयों को लेकर। तो दायित्व ये बनता है कि हम प्रयास करें उनके तम के हस्ताक्षरों को हटाने का और प्रकाश का दायरा बढ़ाने का। जब प्रकाश स्रोत संकुचित न होंगें तो उनके तम से प्रकाश में जाने की परिस्थितियाँ सुगम हो जायेगीं और तब शायद हमें परिसर के पतंगे ज्यादा सुकून देंगे।।

परों की हद में, उड़ानों की जिद्द में , हर परिसर में , पतंगों का बसेरा है।

गर दायरा बढ़ जाए, और रौशनी बट जाए , तब ये समझ आये ,

वो पतंगा , तेरा है, वो पतंगा मेरा है।।

संतोष कुमार मिश्रा (केशवेन्दु)

नास्ति कामसमो व्यार्नास्ति मोहसमो रिपु।
नास्ति क्रोधसमो वह्निर्नास्ति ज्ञानात् परं सुखम्।।

काम के समान कोई व्याधि नहीं, मोह के समान कोई शत्रु नहीं, क्रोध के समान कोई अग्नि नहीं और ज्ञान से बढ़कर कोई सुख नहीं है।

दिल की दहलीज पर उतांरु या ख्वाबों के मंजर पर,

शहनाई की ध्वनि सुनाऊँ या तुरही की गूँज
इंतहा रहेगी हर जवान की, जिसने रक्षा की है देश के आन की,
हम मस्तमौला हैं, चाहे किसी जिगर के कितने भी टुकड़े हों,
फरक पड़ता तभी है जब ये टुकड़े अपने हों,
चलो छोड़ो ये सारी बातें ये तो रोज का नाटक है,
हमारे दिमाग के तो कब के बंद हो चुके सारे फाटक हैं,
अरे देश भक्ति कैसे जागी अचानक हमारे दिल में,
ये तो कुछ ही क्षण हैं, जब 26 जनवरी हो या 15 अगस्त या
कोई चकमक, वरना तो रहते हैं हम हमारे बिल में।

नहीं मैं किसी पर लांछन नहीं लगा रहा, ये दस्तूर तो मेरा भी
है,
हाँ पर बदल सकते हैं हम अपनी सोच को, कभी ऐसे ही याद
करलें उस बिछड़े दोस्त को।
हमारे पास तो इस देश की है पोटली,
शहादत की चादर तो उन जवानों ने ही ओढ़ ली।
कहानी तो जवानों की थी कहोगे आप, मैं कहाँ अपनी ही बात
कर बैठा,
सोचो जरा अगर साथ देते हम तो नहीं रहेगा कोई दुश्मन
ऐंठा।
हम मदद कैसे करें अपने देश की, ये सवाल तो बेहद उलझा है,
आँखे बंद कर कभी याद करो हर चेहरे को शायद लगे सुलझा
है।
उस सिकंदर का नकाब उतार कर देखोगे तो दिखेंगे कई चेहरे,
है तो इंसान ही वो, रखते हैं छुपाकर दिल के राज गहरे,
कड़ी धूप हो या पहाड़ी बर्फ या कोई बाढ़
जूझते हैं वो बिना झिझक पहले,
आओ थोड़ी ईमानदारी हम भी दिखाएं न बनाएं उन्हें शतरंज के
मोहरे।
नमन करते हम सब उन शहीद वीरों को, माफ करना मुझे फिर
भूल गया मैं तो बाकी सारे हीरों को , कर्जदार रहेंगे हम सभी
भूलेंगे ना तुमको कभी,
सलाम ठोक कर अलविदा करते हैं,
बहुत उम्दा हैं सारे वीर जो देश के लिए मरते हैं।

संकेत कुमार कटोरे, छात्र

रेशमा ने कुटिया से निकलते ही पण्डित जी को खबर दी- बेटा हुआ है और फिर जोर से बख़्शीश की मांग कर दी। पंडित जी ने कुर्ते के जेब में हाथ डाला और कल ही दक्षिणा में मिला हुआ एक रूपए के चांदी के सिक्के को रेशमा के फैले हुए हाथ पर ऊपर से ही पकड़ा दिया। बस्ती में रेशमा के अलावा कोई दूसरी दाई नहीं थी। हिन्दू, मुसलमान सभी के यहाँ बच्चों को पैदा करवाने की ज़िम्मेदारी उसी की थी। पंडित जी को बहुत मन मारकर रेशमा को अपने यहाँ बुलाना पड़ा था। पंडित जी मन ही मन खुश हो रहे थे की पहली ही बार मे पंडिताइन ने बेटा जना था और अब उनको वंश के आगे बढ़ने की चिंता न रहेगी । पंडिताइन शंकर जी की भक्त थी और बालक का नाम भी शंकर ही रखना चाहती थीं जबकि बिरजू पण्डित विष्णु भगवान के भक्त थे और उनको भगवान विष्णु के सारे ही अवतार अत्यंत लुभाते थे, उनका मनाना था कि प्रभु विष्णु ही संसार के पालनहार हैं, प्रभु विष्णु की कृपा होने से लक्ष्मी और सरस्वती सब का घर में वास रहता है। बड़े नोक-झोंक, विचार-विमर्श के बाद पति-पत्नी ने तय किया था कि यदि बालक होगा तो नाम विष्णु शंकर रखेंगे।

घर और पड़ोस की औरतों ने जच्चा-बच्चा की ज़िम्मेदारी सम्भाल ली और पंडित जी ने, आम की लकड़ी की बनी और पूर्वजों से विरासत में मिली डेस्क खोलकर, पत्रा निकाल कर बच्चे का भूत-भविष्य बाँचना शुरू किया। जैसे-जैसे वो पढ़ते जाते उनके माथे की सिलवटें बदलती जातीं। चिंता-ग्रस्त पंडित जी ने आकाश की तरफ़ मुँह करके आँखें बंद करके मन ही मन प्रभु का स्मरण करते हुए बुदबुदाए कि ही प्रभु ये कैसे समय में पुत्र को जन्माया है? अश्विनी नक्षत्र में जन्मा बालक पिता के लिये कुछ-न-कुछ अपशगुन लेकर आता है। पण्डित जी जैसे-जैसे अपने ज्योतिषी-ज्ञान में आगे बढ़ते जाते वैसे-वैसे उनकी चिंता भी दुगनी गति से बढ़ती जा रही थी। अब पण्डित बिरजू बाजपेयी के पास अपनी चिंताओं के शमन के लिए उपाय खोजने का समय था। किसी जजमान का होता तो बड़ी सहजता से बता दिया होता कि चार तोले सोने का कुंडल दान करो और ग्यारह एकादशी व्रत रख कर सात ब्राह्मणों को भोजन करवाकर दक्षिणा दे दो सब कुशल ही होगा। परंतु बात अब खुद पर आ गयी थी तो ये सब सम्भव नहीं था और फिर उनके दिन भी बड़े ही तंगहाली के चल रहे थे। खाने के फाँके पड़े हुये थे, लोगो की आस्था अब कर्मकांड में कम और शहरी बातों में जादा होती जा रही थी। जब से गाँव के कुछ लड़के

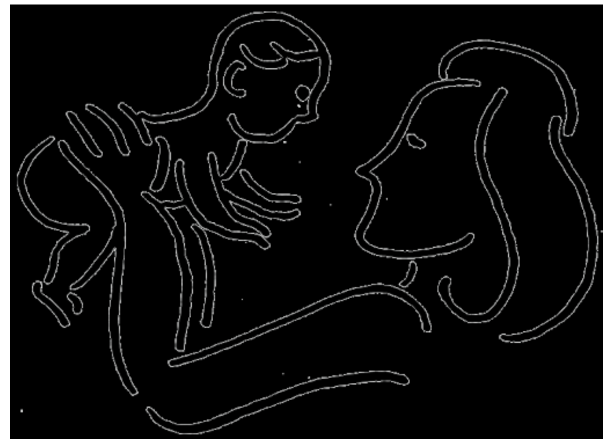

बनारस गये थे तब से लोगो ने पण्डित जी से राय-मशवरा लेना कम कर दिया था और दान-दक्षिणा में भी आना-कानी करने लगे थे। पिछली बार जग्गी लाला ने अपने बेटे की जन्म-दिन की पूजा पर दक्षिणा में केवल अठन्नी दी थी, बड़े ही मान मनौवल के बाद बड़ी ही मुश्किल से एक रूपया निकाला वो भी खोटा था जिसके बदले मुश्किल से पंसारी ने पंद्रह आने का सौदा दिया, सोलह आने के बदले। पुत्र प्राप्ति की खुशी में ग्रहण लगता देख पण्डित जी ने जेब से चुनही की डिब्बी निकाल कर खैनी और चूना को हथेली पर रख मलना शुरू ही किया था कि खयाल आया क्यों न तीन गायों में से एक गाय को बेंचकर कुछ सोना खरीदकर बनारस वाले गुरुजी को दान करके इस विकट घड़ी को कुछ हल्का कर लिया जाय। वैसे तो पण्डित जी को आपनी तीनो ही गायें बेहद प्रिय थीं, मिली तो सभी गऊ-दान में थीं परंतु पिछले तीन-चार वर्षो में, इन गायों से ही घर का खर्च चल रहा था और पण्डित जी और पंडिताइन का घर खूब आबाद था। सुबह से गायों की सेवा में कब शाम हो जाती पता ही न चलता था। ऐसा लगता कि तीनों उनकी बातों को अच्छी तरह से समझती हैं और गाएँ भी अपनी-अपनी बात मजे से बताती हैं । जब दोपहर में छोटू ग्वाला इनको चराने के लिए ले जाता तो सब बारी-बारी से मुड़-मुड़ कर देखतीं जैसे कह रही हों- "बप्पा अपना ख्याल रखना।" पंडिताइन भी बड़े मनोयोग से सेवा और चारे-पानी का ख्याल रखती थीं दो दिनों के बाद पण्डित जी एक गइया को ले कर पड़ोस के मखनपुर के हाट को चल दिये। उनकी गायें अच्छी नस्ल की और हृष्ट-पुष्ट थीं, अतः अच्छी कीमत भी जल्द ही बगैर मोल-तोल के मिल गयी, पर हरिया गाय चली गयी। रूपया कमर की फेंट में दबाकर पण्डित जी

अनमने से घर की ओर मुड़े।

नदी पार करने के लिए ननकू मल्लाह पंडित जी से पैसे नहीं लेता था। हाट आते समय भी उनको और हरिया गाय को बिना उतरायी दिए ही नदी पार करायी थी। भादों का महीना था और नदी भी अपने उफान पर थी। मखनपुर की हाट हर पूरनमासी को लगती थी और इस बार भीड़ भी मजे की थी। ननकू के पिता भी मल्लाह थे और समय से पहले ही दारू का शिकार हो गए। ननकू कम उमर से ही नाव चलाने को मजबूर हुआ, बहरहाल ननकू अब तो गबरू जवान हो गया है, पर नाव तो उसके बाप के ही जमाने की है, ढ़ेरो पैबन्द लगे हुये हैं। हाट पे लोगो ने खरीदारी भी खूब जम कर की, सबको अन्देशा था कि कल बारिश जमकर होगी और अगले माह की हाट में आना सम्भव नहीं हो पायेगा, नदी में बाढ़ आने की संभावना है और ऐसे में खतरा बढ़ जाता है, अक्सर हाट लग भी नहीं पाती है मैदान में बाढ़ का पानी भी भर जाता है। अंग्रेजो ने नदी में एक बाँध भी बनाया है, परंतु बिना पूर्व सूचना के अक्सर पानी छोड़ दिया जाता है। ननकू कोई फिल्मी गाना गाते हुये धीरे-धीरे नाव चला रहा था, जैसे-जैसे वो आगे बढ़ता जाता, पानी का बहाव भी तेज हो रहा था। अचानक नाव का सन्तुलन बिगड़ने लगा और कमजोर नाव यात्रियों के बोझ और तेज धारा को बरदास्त नहीं कर सकी। नाव डूब रही थी, लोगों की चीख-पुकार पूरे जोरो पर थी। नाव पर बैठे चालीस यात्रियों में सिर्फ आठ दस लोग ही तैरना जानते थे, जो अपना सब कुछ खो कर सिर्फ जान बचा पाये। बिरजू बाजपेयी को जल-समाधि मिली।

इधर लक्ष्मी पंडिताइन अभी सोबर से बाहर भी नहीं आ पाई थीं और पंडित जी स्वर्ग-यात्रा को चल दिये। सबका रो-रो कर बुरा हाल हो रहा था। गाँव के बुजुर्गों ने समझा बुझा कर किसी तरह से धीरज बधाने की कोशिश की। धीरे-धीरे पंडिताइन ने घर और बाहर की जिम्मेदारियाँ अपने ऊपर ले ली, बची हुई दो गायों और चार बीघा खेती के सहारे घर-गृहस्थी चलने लगी। विष्णु शंकर को भी पाठ्शाला में दाखिला दिला दिया गया। पंडिताइन की सख्त हिदायत के साथ की किन बच्चों के साथ उठना-बैठना है? किसके साथ भोजन नहीं करना है आदि-आदि। रोज सुबह हाथ में आम की लकड़ी की पाटी और थैला लेकर गाँव के बच्चों के साथ पाठ्शाला के लिये विदा करतीं और दोपहर के बाद जब वो लौटता तो पंडिताइन को गाँव के मुहाने पर इन्तज़ार में खड़ी पाता। वो बड़े प्यार से उसके सर पे हाथ रख कर पाठशाला की दिन भर की गतिविधियों को सुनतीं, साथ-साथ अपनी कुटिया तक आती। अधिकांशतः उनको विष्णु शंकर के व्यवहार से असंतुष्टि ही होती कि वो निचली जात के बच्चों के साथ बैठने और खेलने में कोई परहेज नहीं करता था। अक्सर शक होने पर गर्मी-सर्दी की परवाह किये बिना, पाठशाला से वापस आये थके हुए, बालक के ऊपर घड़ा भर पानी उँडेल दिया करती थीं ।

समय तेजी से भाग रहा था देखते ही देखते विष्णु शंकर कस्बे में जाकर हाई स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने लगे, हाई स्कूल घर से 8 मील की दूरी पर था। पंडिताइन को कलेजे पर पत्थर रखकर बेटे को वहां पर भेजना पड़ता था, परंतु विष्णु शंकर की जिद आगे पढ़ने की थी। उसने पड़ोस के बनिए के लड़के राम ब्रिज को शहर से साइकिल पर लौटते और शहर के खूब किस्से बढ़ा चढ़ाकर बताते हुए सुन रखा था। उसके शहर जाने का एकमात्र जरिया पढ़ाई ही थी। अन्यथा किसी कीमत पर अम्मा उसको छोड़ नहीं सकती थीं। पुराने ख्यालों की पंडिताइन उसे बार-बार कर्मकांड की शिक्षा लेने का दबाव बनाती और चाहती कि वह भी अपने पिता की तरह एक कर्मकांडी पंडित बने और नाम कमाए। विष्णु शंकर को तो बस एक ही धुन सवार थी कि उसे शहर जाना है। उसे खेती-बाड़ी और गायों की सेवा में कतई रुचि नहीं थी, वह अक्सर घर की मुंडेर पर बैठा भविष्य के धुंधले सपने देखता रहता था।

इस बार सोमवती अमावस्या को पड़ोस के ज्ञानू चाचा सपरिवार शहर जा रहे थे, गंगा नहाने के साथ अपने बेटे को साइकिल भी दिलाना चाहते थे। विष्णु शंकर ने पंडिताइन से ज्ञानू चाचा के साथ जाने की जिद की और उनको भी साथ चलने को राजी कर लिया। गायों की जिम्मेदारी पड़ोस की चाची को दी गई, महज़ दिन की ही तो बात थी। सुबह सब लोग बैलगाड़ी में सवार होकर निकल लिए। विष्णु शंकर पहली बार शहर जा रहा था स्वाभाविक रूप से वह अधिक उत्साह में भी था और रास्ते भर जिज्ञासा से भरा सहयात्रियों से प्रश्नों की झड़ी लगा रखी थी। उसका ध्यान प्रश्न करने में ज्यादा और उत्तर सुनने में कम ही था। बैलगाड़ी के गंगा घाट पहुंचते ही सभी लोग भोला पांडे के स्थान पर पहुंचे, ज्ञानू चाचा भोला पांडे के पुराने जजमान थे और अच्छे दोस्त भी। गंगा घाट के पंडों को गंगा पुत्र कहा

जाता है। यह लोग घाट के किनारे पर ऊंचे ऊंचे तखत लगाकर बड़ी गोल छतरी नुमा छाया करके बैठते हैं। गंगा स्नान को आने वाले श्रद्धालु गण इनको अपनी सामान की गठरी, चरण पादुकायें आदि सौंप कर निश्चिंत भाव से डुबकी लगाकर, भजन-कीर्तन करते हुए जब वापस आते तब ये गंगा पुत्र अपने जजमानों को तेल, कंघी, चंदन, तिलक आदि का सामान भी मुहैया कराते हैं। श्रद्धालु जजमान अपनी श्रद्धा अनुसार दान दक्षिणा देकर अपना सामान उठाकर भजन कीर्तन करते हुए अपने गंतव्य को प्रस्थान करते हैं। भोला पांडे ने सबको गुड़ की डली दी और पानी की जगह गंगाजल ही ग्रहण करने की सलाह दी। उनका कहना था कि गंगा स्नान से तन की शुद्धि होती है और सारे पाप धुल जाते हैं, जबकि गंगाजल पीने से अंदर तक शुद्धि होती है और आत्मा तक तर जाती है। ज्ञानू चाचा की बेटी गौरा,जो विष्णु शंकर से एक या दो साल बड़ी थी, ने विष्णु शंकर को गंगा के किनारे रेत का घोंसला बनाना सिखाया। दोनों ने हथेली रख ऊपर से हल्की गीली रेत थपथपा कर गुफा की शक्ल वाले घोंसले बनाये और फिर एक एक करके गंगा में नहाने के लिए उतरे। अब बारी पानी से खेलने की थी पर पंडिताइन के डर से विष्णु शंकर ने बड़े डरते हुए डुबकी लगाई। उसको पानी में छोटी-छोटी मछलियां भी दिखाई दीं। विष्णु शंकर ने गौरा को आवाज देकर मछलियां दिखाईं । दोनों ने ज्ञानू चाचा का गमछा ले लिया, एक तरफ से विष्णु शंकर ने गमछे को पकड़ा तो दूसरी तरफ से गौरा ने पकड़ा, दोनों गमछे को पानी में

डुबोकर खड़े हो गए, जैसे ही मछलियों का झुंड आया दोनों ने एक साथ गमछा हवा में उठा लिया। चार पांच मछलियां गमछे में तड़पने लगीं। उन्होंने झट से मछलियों को भोला पांडे के पास रखे लोटे में भर दिया।

अब सब ने मिलकर शहर की ओर रुख किया। विष्णु शंकर ने पहली बार शहर देखा था और वह वहां की चहल-पहल देखकर थोड़ा अचंभित था। इतने सारे लोग और हर कोई जल्दी में, न कोई किसी की तरफ देखता, न ही दुआ सलाम करता और न ही कोई किसी से बातचीत करता, हर कोई अपने आप में ही इतना व्यस्त था कि किसी को भी यह परवाह नहीं थी कि बगल वाला किस हाल में है। उसने पहली बार मोटरकार देखी। इक्के तांगे तो गांव में अक्सर आया करते थे। एक पुलिस का दारोगा बड़े रुआब से मोटरसाइकिल पर फटफट की जोरदार आवाज निकालता हुआ जा रहा था, सभी लोग उसको रास्ता देते जा रहे थे। सबने थोड़ी बहुत खरीददारी भी की और जल्दी ही गांव को वापस चल पड़े, ज्ञानू चाचा अंधेरा होने से पहले ही गांव पहुंच जाना चाहते थे। शहर की जिंदगी की पहली ही झलक ने विष्णु शंकर को इतना प्रभावित किया था कि उसने मन ही मन यह तय कर लिया कि वह एक दिन शहर आकर बसेगा।

विष्णु शंकर तेज बुद्धि का बड़ा ही होनहार बालक था और एक बार शहर हो आने के बाद उसने अपना ध्येय निश्चित कर लिया तो और भी तन्मयता से मन लगाकर पढ़ाई करने लगा। समय तेजी से गुजरता गया और देखते ही देखते उसने मैट्रिक की परीक्षा अच्छे नंबरों से पास की। इस बीच उसके ननिहाल के कुछ लोग शहर जाकर नौकरी करने लगे थे और विष्णु शंकर ने उनसे अपने लिए नौकरी की तलाश करने के लिए भी कह रखा था। एक दिन अचानक उसके ममेरे भाई रज्जू ने शहर आकर मिलने का संदेश भेजा। विष्णु शंकर अपनी मां से कुछ रुपए और गठरी में कुछ कपड़े लेकर शहर जाने के लिए बस से रवाना हो गया। शहर पहुंचने में शाम हो गई थी वह रज्जू से मिला जो एक किराए की कोठरी में रहकर इंटरमीडिएट की पढ़ाई कर रहा था। उसने अपने पड़ोस में रहने वाले बब्बन पांडे से विष्णु शंकर की नौकरी की बात कर रखी थी। बब्बन बाबू बड़े ही समझदार और सुलझे हुए इंसान थे, बिक्री कर विभाग में बाबू गिरी करके अपनी गृहस्थी चला रहे थे। उनके जीवन में पुत्र का अभाव था और तीन कन्याएं ही थीं जोकि समय के साथ तेजी से बड़ी होती जा रही थीं। बब्बन पांडे और पंडिताइन को अपनी लड़कियों की शादी की चिंता बराबर बनी रहती थी। ब्राह्मणों में दहेज पर बड़ा जोर था और पांडे जी दहेज की व्यवस्था में पूरी तरीके से असमर्थ थे। जब रज्जू ने विष्णु शंकर के बारे में बताया तो पांडे जी ने सोचा की विक्रीकर ऑफिस में जो जगह खाली है उसमें विष्णु शंकर को लगवा दिया जाएगा और इसी के साथ बड़ी बेटी के रिश्ते की भी उम्मीद जगी।

पांडे जी विष्णु शंकर से मिलकर बहुत खुश हुए और बड़े साहब से अगले दिन मिला लाने की बात तय हो गई। दूसरे दिन सुबह पांडे जी और विष्णु शंकर सुबह-सुबह जल्दी तैयार होकर अहफिस के लिए निकल पड़े। विष्णु शंकर को अभी तक कभी भी सरकारी अहफिस

जाने का कोई भी अनुभव नहीं हुआ था। इस नए माहौल को देखकर वह थोड़ा डर गया। जब बड़े साहब से मिलने की बात आई तो चपरासी ने बताया साहब से मिलने और नौकरी के आवेदन के साथ और भी लड़का आया हुआ है, जो वही बाहर बेंच पर बैठा हुआ था। सांवले कद काठी का लंबा सा लड़का पायजामे और कमीज में थोड़ा सा सकुचाया हुआ था। विष्णु शंकर को भी बेंच पर बैठने के लिए कहा गया। पांडे जी अपने टेबल पर चले गए और विष्णु शंकर को साहब से मिलने के बाद खुद से मिलने के लिए कहा। दोनों लड़के काफी देर तक चुपचाप बैठे रहे, परंतु साहब के अत्यधिक व्यस्त होने के कारण उनकी मुलाकात शाम तक नहीं हो पाई। साहब ने चपरासी से दोनों को अगले दिन मिलने को बोल दिया। जब दोनों वहां से चलने लगे तो विष्णु शंकर ने दूसरे लड़के से उसका नाम पूछा। उसने बताया कि उसका नाम महमूद अली है और पश्चिम में 25 मील दूर रसूलाबाद तहसील के पास का रहने वाला है। कुछ साल पहले एक महामारी में उसके वालिद और वाल्दायन दोनों का इंतकाल हो गया था, अब वह अकेले है और गांव के लोग उसकी थोड़ी बहुत जमीन हथियाने के चक्कर में उसको गांव से भगा देना चाहते हैं और वह जान बचाकर शहर आया है, अब नौकरी की तलाश में है।

विष्णु शंकर को महमूद अली पर बड़ी दया आयी और उसने अपना मन मजबूत किया कि प्रभु यह नौकरी मेरी जगह महमूद अली को ही मिल जाए तो इसका भला हो जाएगा। अगले दिन सुबह पांडे जी ने विष्णु शंकर को फिर अपने साथ चलने को कहा तो विष्णुशंकर बड़े ही बेमन से तैयार होकर उनके साथ चल दिया। । वहां पर महमूद अली पहले से ही आ चुका था। दोनों ने मधुर मुस्कान के साथ एक दूसरे का अभिवादन किया और, साहब कब अंदर बुलाएंगे इस इंतजार में, बेंच पर बैठ गए। दोपहर लंच के समय तक साहब को बात करने की कोई फुर्सत नहीं मिली, वह लंच पर चले गए तब चपरासी ने बताया कि दो दिन के बाद हेड ऑफिस से निरीक्षण की टीम आने वाली है साहब बहुत ही तनाव में हैं स्टाफ की कमी होने से सारा काम पिछड़ गया है। लंच के बाद भी साहब से मुलाकात हो पाएगी इसकी संभावना काफी कम है परंतु विष्णु शंकर और महमूद अली के पास इंतजार के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं था। महमूद अली ने पास के ठेले से चाय पीने की पेशकश की तो विष्णु शंकर ने बताया वह चाय तो नहीं पीता परंतु महमूद अली के साथ जरूर चलेगा। दोनो टहलते हुए चौराहे तक पहुंचे और चाय के ठेले के पास खड़े हो गए महमूद अली की थोड़ी सी मान मनौवल के बाद आज जिंदगी में पहली मर्तबा विष्णु शंकर ने चाय चखी और साथ में नान खटाई भी खाई। जब भुगतान का समय आया तो महमूद अली ने विष्णु शंकर की चलने न दी खुद ही दोनों लोगों की चाय और नान खटाई का भुगतान किया। हालांकि अब उसके पास घर तक वापसी के पैसे कम हो गए थे और उसको घर पहुंचने के लिए तीन-चार मील पैदल चलना पड़ता था। पर एक नए मित्र को पाकर काफी प्रसन्न था। आज का दिन भी इंतजार में कट गया और अंत में अंदर से साहब ने उनको दो दिन के बाद आने को कहलवाया। साहब निरीक्षण टीम के जाने के बाद ही इस विषय में कुछ करना चाहते थे। वहां से निकलते हुए दोनों ने अगले दो दिनों तक साथ-साथ शहर घूमने का निश्चय किया। दो दिनों तक साथ रहते हुए, साथ खाते- पीते दोनों में काफी गहरी आत्मीयता हो गई। दोनों ने एक दूसरे की पारिवारिक स्थितियों को भी समझा और दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति गहरी सहानुभूति जागृत हुई।

दो दिन के बाद जब वे दोनों बिक्री कर कार्यालय पहुंचे तो वहां के माहौल में अभूतपूर्व परिवर्तन था। बेहद सफाई और अनुशासन नजर आ रहा था। चपरासी ने बताया कि निरीक्षण के दौरान कार्यालय के काम में पिछड़ जाने और राजस्व में गिरावट के लिए स्टॉफ की कमी को माना गया है और साहब को अतिशीघ्र नई भर्ती के लिए बोला गया है। जैसे ही बड़े साहब ऑफिस आए उन्होंने तुरंत ही विष्णु शंकर और महमूद अली को अंदर बुलाया। थोड़ी बहुत औपचारिकताएं पूरी करने के बाद दोनों को ही अगले महीने की पहली तारीख से आफिस काम पर आने को बोल दिया। पहले छह माह उनको प्रोबेशन पर कार्य करना था उसके बाद ही आगे की कार्यवाही होनी थी।

वहां से निकलते ही दोनों ने तय किया कि गांव जाने से पहले रहने के लिए कमरा तलाश कर लिया जाए । विष्णु शंकर को तो रहने की जगह आसानी से मिल गयी, जिसमें एक कमरा और बरामदा साथ में गुसलखाना था, परंतु महमूद अली को बहुत भटकना पड़ा उसे कोई भी अपनी जगह किराए पर देने को राजी नहीं हो रहा था, लोगों ने तरह-तरह की बातें बनायी, किसी को उसके कुंवारेपन पर ऐतराज था तो किसी ने उसके मांसाहारी या फिर मुसलमान होने को वजह बता कर इनकार कर दिया। बहुत भटकने के बाद महमूद अली को एक

गली के अंदर गली के आखिरी छोर पर एक छोटी-सी कोठरी मिली जिसमें मात्र एक पलंग पड़ सकता था और मामूली जगह ही बचती थी, गुसल के लिए भी बाहर जाना पड़ता था। परंतु आत्मसंतोषी होने के कारण महमूदअली खुश था कि एक ठौर तो मिला रहने के लिए अब आए दिन की राजनीति और रोज़ रोज़ की हाय हाय से जल्द ही छुटकारा मिल जाएगा।

दोनों ही खुशी-खुशी अपने अपने गांव वापस हो लिए। विष्णु शंकर को अपनी अम्मा को भी शहर चलने के लिए तैयार करना था, जिनके लिए शहर में रहना सहज नहीं था। एक तो अम्मा को अपने घर, द्वार, अड़ोस-पड़ोस से काफी लगाव था दूसरे वह अपनी गायों को भी नहीं छोड़ना चाहती थीं। उनको ये भी पता था कि विष्णु शंकर के रहने, खाने की फिकर उनको गांव में भी चैन से रहने न देगी। उनको मालूम था कि विष्णु शंकर पढ़ने लिखने वाला सीधा- साधा बालक है और अपने लिए खाने कपड़े वगैरह का इंतजाम करने में उसको बड़े कष्टों का सामना करना पड़ेगा। बड़ी जद्दोजहद के बाद पंडिताइन ने विष्णु शंकर को अकेले ही शहर जाकर नौकरी ज्वाइन करने को कहा और एक महीने के बाद वापस आकर उनको साथ ले जाने को बोला। उनका मन था कि इस बीच वह घर गृहस्थी को थोड़ा-बहुत समेट लेंगी और गायों का भी कुछ अच्छे से इंतजाम कर लेंगी।

विष्णु शंकर ने अपना सारा सामान बांधा और पंडिताइन की ढेर सारी हिदायतें भी। उसे अपने आचरण में जरा भी ऊंच-नीच नहीं होने देना है, इस बात का ख्याल रखना है कि वह ऊंचे कुल के ब्राह्मण पंडित बिरजू का संस्कारी पुत्र है। पंडिताइन को लगता था कि अभी उसकी कच्ची उम्र है और उसको ऊंच-नीच का ज्ञान कम ही है। वह विष्णु शंकर के अंदर ऐसा स्वाभिमान जगाना चाहती थीं कि वह शहर के दूषित वातावरण में ज़रा भी बहक न सके।

विष्णु शंकर ने शहर पहुंचकर कमरे में अपना बिस्तर वगैरा व्यवस्थित किया और समय से ऑफिस पहुंचकर अपना पदभार ग्रहण कर लिया। पहले ही दिन उसकी मुलाकात महमूद अली से हो गई, वह भी समय से ऑफिस में हाजिर था और बहुत खुश नजर आ रहा था। दोनों ने बड़ी गर्मजोशी से एक दूसरे का अभिनंदन किया और बड़े बाबू से काम के निर्देश लिये। बब्बन पांडे भी वहीं पर काम पर मुस्तैद थे और विष्णु शंकर को समय से ऑफिस आना और मन लगाकर काम करते हुए देख बड़ी तसल्ली महसूस कर रहे थे और मन ही मन वे अपने निर्णय पर भी खुश थे कि जल्दी ही वह अपनी बड़ी बिटिया के रिश्ते की बात विष्णु शंकर से पक्की कर देंगे। वे यथासंभव विष्णु शंकर को सहयोग करते थे और मौके- बेमौके महमूद अली से थोड़ी दूरी बनाने की राय भी संकेत रूप में देने की कोशिश करते थे। परंतु इन दोनों का तो मन एक दूसरे से बहुत लगता था और लंच टाइम पर दोनों ही ऑफिस के बगल में खड़े चाय वाले, समोसे वाले या फिर लैया चना वालों के पास खड़े खाते-पीते या बातचीत करते दिखते। ऑफिस के बाद दोनों घर के लिए भी साथ-साथ निकलते। दोनों अपने-अपने सपने भी साझा करते। सबसे पहले तो दोनों का सपना साइकिल खरीदने का था और फिर मकान और शादी। रविवार को भी दोनों ने काफी समय साथ में बिताया और सिनेमा भी देखा। विष्णु शंकर अभी भी काफी सरल स्वभाव का था जबकि महमूद अली कभी-कभी बचपनी हरकतें करके माहौल को हल्का और खुशनुमा कर देता था। उसे एक दिन विष्णु शंकर ने बताया कि वह इस ऑफिस तक नौकरी के लिए कैसे पहुंचे? बड़े बाबू बब्बन पांडे जी इस आस में है कि वह उनकी कन्या से विवाह कर ले इस विषय पर अम्मा से शीघ्र ही बात करना चाहते हैं। अक्सर महमूद अली विष्णु शंकर को छेड़ा करता कि तुमको ऑफिस में इतनी मेहनत करने की क्या आवश्यकता है तुम्हारे तो ससुर साहब बड़े बाबू हैं और इस रिश्ते से तुम पूरे ऑफिस के ही दामाद लगते हो।

पंडिताइन के अपने अड़ोस-पड़ोस में बड़े ही घरेलू संबंध थे और वह सभी घरों में एक बड़े बुजुर्ग की तरह जानी जाती थीं, सभी को नेक राय देना और सब के वक्त जरूरत में खड़े रहने में वह कभी पीछे नहीं रहती थीं और लोग भी अभी तक बिरजू पंडित को नहीं भूले थे। गांव का माहौल इतने वर्षों के बाद भी सद्भावना का था, सभी एक दूसरे का सहयोग करते थे। पड़ोस के एक परिवार ने गायों की जिम्मेदारी ले ली और दूसरे ने खेती की। सभी ने पंडिताइन को निश्चिंत कर दिया कि वह जाएं और गांव की चिंता छोड़ दें।

पूरे एक महीने बाद विष्णु शंकर अपनी अम्मा को लेने आ गया। इतवार को गांव में रहकर सोमवार सुबह सामान लेकर शहर के लिए रवाना हो गए। आसपास के सभी लोगों ने उनको खाने पीने के सामान के साथ विदा किया। शहर पहुंचते ही पंडिताइन ने सबसे पहले पूरे घर को अच्छे से धोया और सूख जाने पर पूरे घर में अपने साथ लाये हुए गंगाजल का छिड़काव किया। विष्णु शंकर से लकड़ियां मंगवा कर चूल्हे

का इंतजाम किया, क्योंकि पंडिताइन बाजार के अनजान दुकान से खाने पीने की कोई भी चीज ग्रहण नहीं करती थीं। बर्तनों को भी धोकर अलमारी में करीने से सजा दिया। अपने साथ लाई भगवान की मूर्ति को भी स्नान करवाकर अलमारी में स्थापित कर पूजा अर्चना करके धूप जला दी गई। विष्णु शंकर ने यथा संभव अम्मा का हाथ बटाया।

इधर महमूद अली नितांत अकेले थे और उन्हें खाने-पीने के लिए बाजार पर ही निर्भर रहना पड़ता था। किसी तरह का कोई परहेज भी उनको नहीं था।सारी गृहस्थी 'एकला चलो रे' पर आधारित थी। ऑफिस में समय अच्छा कट जाता, बाकी आते जाते विष्णु शंकर का साथ रहता तो मन बहल जाता था वरना अपनी कोठरी में चुपचाप पड़े रहते थे। अकेलापन थोड़ा भारी होने पर कभी-कभी महमूद अली बीड़ी या सिगरेट का भी सहारा ले लिया करते थे। अम्मा विष्णु शंकर को दोपहर के भोजन के लिए पराठे बना कर दिया करती थीं। उनका मानना था रोटी के साथ काफी छुआछूत रहती है और रोटी को रखकर नहीं खाना चाहिए। विष्णु शंकर अपने पराठे महमूद अली के साथ बांट लिया करते थे। उसे मालूम था यह बात अम्मा को बिल्कुल भी मंजूर नहीं होगी कि वह और महमूद अली साथ में खाना खाएं।

एक दिन रात के समय विष्णु शंकर ने अम्मा से बात करने की सोची और धीरे-धीरे कहानी गढ़ना शुरू किया कि ऑफिस में उसका एक साथी है जिसके मां- बाप दोनों नही हैं और गांव में भी ठौर नहीं है, बेचारा बड़े अकेलेपन से गुजारा कर रहा है, खाने-पीने की भी बहुत दिक्कत है, कभी सुबह खाया कभी शाम को। अम्मा ने उसकी उम्र के बारे में जानकारी चाही और जब यह पता चला कि वह भी विष्णु शंकर की ही उम्र का है तो उनको भी इस बिना मां-बाप के शख्स पर दया आई। उन्होंने इस लड़के के बारे में और जानकारी चाही तो विष्णु शंकर ने जानबूझकर बात को घुमा दिया कि अम्मा आजकल आप अमिया की चटनी बहुत बढ़िया बना रही हैं, थोड़ी और दो न फिर उसने अमिया की मीठी चटनी पर अम्मा का ध्यान बंटाया। लेकिन अम्मा ने जब फिर दोबारा उस शख्स की तहकीकात पर उतरीं तो विष्णु शंकर ने अम्मा का ध्यान मीठे लच्छेदार अचार रखने की बात की ओर मोड़ दिया। विष्णु शंकर अम्मा के स्वभाव को जानता था उनके अंदर जो ममता जाग गई है वह उनको चैन से बैठने नहीं देगी साथ ही उसे इस बात का भी डर था कि कहीं महमूद अली का नाम सुनकर अम्मा भड़क न जाएं और उनके पंडितों वाले संस्कार दिक्कत न पैदा कर दें। इसलिए आगे की बात के लिए उसने एक दिन का विराम लेना ही उचित समझा।

अगले दिन इतवार था और दोपहर खाना खाने के बाद विष्णु शंकर महमूद अली के साथ बाजार गया अम्मा के लिए नई साड़ी खरीदी और एक जोड़ी नई रबर की चप्पल भी जिसे देखकर अम्मा गदगद हो गईं और विष्णु शंकर को बहुत आशीर्वाद दिए। शाम को विष्णु शंकर अम्मा को लेकर कैलाश मंदिर गया उसे मालूम था कि अम्मा भगवान शंकर की बड़ी भक्त हैं। दर्शन, पूजा के बाद घर पहुंचकर विष्णु शंकर ने कल की बात को आगे बढ़ाना शुरू किया। अम्मा ने विष्णु शंकर की थाल लगाई और बड़े मन से सब्जी, दाल परोसकर रोटी सेकने लगीं, एक रोटी देने के बाद विष्णु शंकर ने उस निरीह बालक के बारे में अपनी जिज्ञासा बतायी इस बार विष्णु शंकर ने अम्मा को महमूद अली का नाम भी दबी जुबान से बता दिया। अम्मा का दिमाग भन्नाने लगा और उलझन के कारण दूसरी रोटी ही जल ही गई। उन्होंने विष्णु शंकर को बहुत गुस्से में देखा और एकदम शांत होकर विष्णु शंकर को किसी तरह खाना खिलाया। स्वयं खाना भी नहीं खाया और बेहद बेचैनी के साथ विस्तर पर लेट गईं। विष्णु शंकर भी अम्मा के गुस्से और स्वभाव से परिचित था और बड़ी हिम्मत करके अम्मा के लिए एक गिलास दूध और गुड़ की डली लेकर बिस्तर के पास पहुंचा। बड़ी मान मनौवल के बाद अम्मा ने दूध पिया अगले दिन सुबह रोज के मुकाबले देर से सोकर उठीं। विष्णु शंकर की समझ में आ गया की रात को अम्मा ठीक से सो नहीं पाई हैं लेकिन अम्मा ने बिना बातचीत किए विष्णु शंकर को टिफिन तैयार करके पकड़ा दिया। आज जब दोपहर में विष्णु शंकर ने टिफिन खोला तो पाया कि रोज के मुकाबले आज एक पराठा ज्यादा था। उसे लगा आगे का रास्ता आसान हो जाना चाहिए। अम्मा का मन शायद पिघलने लगा है।

समय अपनी गति से बढ़ रहा था उसके बाद फिर महमूद अली के विषय में जल्दी कोई चर्चा नहीं हुई। लेकिन मां बेटे दोनों ही इस विषय को बढ़ाने के लिए बड़े आतुर थे और उचित मौके की तलाश में भी। एक दिन विष्णु शंकर अम्मा की रसोई के लिए कुछ नए बर्तन लेकर आया,नया चिमटा, शमशी वग़ैरह और फिर रात खाने पर बैठने के बाद से चर्चा को धीरे से आगे बढ़ाया। इस बार फिर से विष्णु शंकर ने महमूद अली की बेचारगी बयान कर दी अम्मा का

ममतामई मन पसीज गया और अम्मा ने अपनी शर्तें भी रख दीं। महमूद अली को वह बर्तन में खाना नहीं परोसेंगी। दोने और सिकोरे में खाना दिया जाएगा, उसे खुद ही अपने दोने, सिकोरे और कुल्हड़ बाहर कूड़ेदान में फेंकने पड़ेंगे और तो और खुद ही खाने के बाद फर्श पर पोछा भी लगाना होगा और जूठन भी खुद ही उठानी पड़ेगी। यदि ये शर्तें मंजूर हों अगले दिन विष्णु शंकर महमूद अली को साथ ला सकता है।

शंकर बड़े ही पशोपेश में था कि वह यह बात अपने मित्र को कैसे बताए। उसे महमूद अली का रोज बाहर खाना अक्सर पेट की बीमारियों से ग्रसित रहना अच्छा नहीं लगता था। पर लाचारी यह थी एक तरफ अम्मा की अपनी दकियानूसी मान्यताएं और दूसरी तरफ उसको महमूद अली जैसे अच्छे इंसान को खोने का डर भी था। विष्णु शंकर और महमूद अली दोपहर खाने के लिए बैठे शंकर ने अपना टिफिन खोला तो उसको रोज से दो पराठे ज्यादा मिले और साथ ही अमिया की बेहद स्वादिष्ट चटनी भी। अब उसे अम्मा का मूड समझ में आने लगा था। खाने के बाद जब बाहर थोड़ा सा टहलने निकले तो महमूद अली ने रोज की तरह अपनी सिगरेट जलाई तो बड़ी हिम्मत करके विष्णु शंकर ने महमूद अली को बाजार का खाना न खा कर घर आकर मां के हाथों का खाना खाने के लिए निमंत्रण बेहद दबे स्वर में दिया। महमूद अली ने खुशी के मारे शंकर को गले से लगा लिया। अब विष्णु शंकर का इम्तिहान था कि आगे वह कैसे अम्मा की शर्तें बताएं। महमूद अली ने जो उत्साह दिखाया था, उससे उसका हौसला थोड़ा तो बढ़ा था, परंतु फिर भी हिचकिचाते हुए उसने बताना शुरू किया की अम्मा बड़ी नरम दिल की है परंतु बड़े पुराने ख्यालों की हैं और छुआछूत में विश्वास रखती हैं। न चाहते हुए भी वह अपने इन विचारों से निकल नहीं पाती हैं । महमूद अली को उसके बात करने के तरीके से यह एहसास हो गया था आगे विष्णु शंकर क्या कहने जा रहा है। उसे गांव के अपने दिन याद आ गए जब आए दिन यह बखेड़ा खड़ा किया जाता था किसको किसके साथ खाना है और किसके साथ नहीं। वस्तुतः अपने भिन्न स्वभाव के कारण वह इन सब बातों से ऊपर उठ चुका था और उसे मालूम था इंसान और इंसानियत सब जगह है बाकी सब ढकोसला है जो लोगों ने अपने-अपने स्वार्थों के कारण प्रचलित कर रखे हैं।

शाम को जब वह विष्णु शंकर के यहाँ पहुँचा तो उसने सबसे पहले अम्मा को सलाम किया फिर उसे याद आया शायद वह सलाम करने की प्रथा से वाकिफ नहीं हैं, गांव में लोग पंडित लोगों के पैर छुआ करते थे। उसे अम्मा के पैर छूने में जरा भी हिचकिचाहट नहीं थी उसने झुककर अम्मा के पैर छूने की कोशिश किया तो अम्मा एक झटके से पीछे हट गयीं। महमूद अली ने घर की देहरी को छूकर माथे पर लगाया। अम्मा को महमूद अली बड़ा भोला और समझदार लगा उसके साँवले चेहरे और घुंघराले बालों को देखकर बड़ी ममता उमड़ आयी कि इतना मासूम सा बालक अनाथ है और अकेला भी। परंतु अम्मा की हिम्मत उसको छूने की नहीं हुई।

उन्होंने विष्णु शंकर की थाली रोज के स्थान पर लगा दी और महमूद अली के लिए पांच छह फीट के अंतर पर पत्तल दोना और पानी का कुल्हड़ रख दिया। विष्णु शंकर को रोटी बड़े करीने से धीरे से दी गई और महमूद अली को दूर से ही फेंक कर दी गई। इस तरह से रोटी मिलने पर महमूद अली धीरे से मुस्कुराया और बड़े आनंद ले कर खाना खाया। इस तरह से घर का गरम खाना उसे बरसों बाद मिला था। खाने के बाद स्वयं ही पत्तल और कुल्लड़ बाहर कूड़े में फेंकने थे उसके बाद पोछा उठा कर फर्श को भी खुद ही साफ करना था परंतु महमूद अली इन सब बातों से जरा भी विचलित नहीं हुआ। उसकी खुशी की कोई सीमा न थी खाने के बाद उसने दोनों हाथ जोड़कर बहुत विनम्रता से झुककर अम्मा को सलाम किया और मुस्कुराते हुए विदा ली।

अगले दिन विष्णु शंकर ने ऑफिस में बड़े शरमाते हुए, झुकी नजरों से महमूद अली से हाथ मिलाया परंतु महमूद अली ने बड़े जोश और खुशी से अपने दोनों हाथों से उसका सीधा हाथ थामा और अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। विष्णु शंकर इस संशय में था कि आज महमूद अली रात को खाना खाने के लिए आएगा भी या नहीं। शाम को ऑफिस से चलते समय महमूद अली ने विष्णु शंकर से समय पर पहुंचने की बात कही तो अब विष्णु शंकर के खुश होने का समय था।

खाने पर विष्णु शंकर इंतजार करता हुआ मिला पहले दिन की भांति फिर से वही घटना क्रम रहा। अम्मा के डर के कारण विष्णु शंकर ने न तो महमूद अली से हाथ मिलाया और न ही ज्यादा बात की।

अब यह सिलसिला रोज का था विष्णु शंकर शाम को महमूद अली

का इंतजार करता और दोनों ही अम्मा के सामने अलग अलग दूरी पर बैठ जाते। एक को थाली कटोरी और गिलास मिलता तो दूसरे को पत्तल, मिट्टी का सकोरा और कुल्हड़। एक को रोटी परोसी जाती और दूसरे को फेंककर दी जाती। एक को खाने के बाद अपने बर्तन एक कोने में धोने के लिए रखने होते तो दूसरे को बाहर कूड़े में डालने होते और फर्श भी साफ करनी पड़ती। लेकिन इस भेदभाव से महमूद अली को कोई शिकायत नहीं थी। वह खुशी-खुशी रोज समय पर पहुंचता, अम्मा की देहरी छूकर चरण स्पर्श करता, भोजन के बाद दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करके विदा लेता, परंतु अम्मा उसके किसी भी अभिवादन का कोई जवाब ना देतीं। अम्मा के व्यवहार से ऐसा प्रतीत होता जैसे वह मात्र अपना फर्ज निभा रही हैं। छुट्टी या किसी फुर्सत के समय जब अम्मा और विष्णु शंकर साथ होते बहुत सारे विषयों पर चर्चा होती जिसमें गांव की खेती, गाय और कभी-कभी विष्णु शंकर के विवाह की भी बात होती रहती परंतु महमूद अली से जुड़ी कोई बात न होती। अम्मा जल्द ही विष्णु शंकर की शादी करके अपनी पुरानी जिंदगी में गांव लौट जाना चाहती थीं। विष्णु शंकर की कभी भी महमूद अली के बारे में अम्मा से बात करने की हिम्मत नहीं हुई, उसे डर था कि कहीं अम्मा भड़क ना पड़े और महमूद अली का घर आकर खाना खाना बंद न कर दें। अम्मा ने भी कभी महमूद अली के बारे में कोई भी चर्चा नहीं की। विष्णु शंकर हमेशा असमंजस में रहता कि अम्मा का महमूद अली के प्रति क्या रुख है, अभी कुछ ममता जगी या आज भी मुसलमान होने के नाते भेदभाव ही है।

विष्णु शंकर और महमूद अली की दोस्ती काफी घनिष्ठ हो चली थी दोनों एक दूसरे से ढेर सारी बातें आपस में साझा करते थे पर शाम को खाने पर होने वाले भेदभाव के बारे में कभी कोई चर्चा न होती। विष्णुशंकर इस विषय से बचना चाहता था और हमेशा डरता था कि कहीं इस बात की वजह से उन दोनों की दोस्ती खतरे में ना पड़ जाए। वह इस विषय पर न तो अम्मा से बात कर पाता और न ही महमूद अली से।

एक सोमवार को ऑफिस में अत्यधिक कार्य होने के कारण विष्णु शंकर काफी देर से थका हुआ घर लौटा जैसे ही कपड़े बदल कर आराम करना चाहा कि बहुत ही तेज आंधी आई और बिजली के तार टूट गए बिजली की आपूर्ति भी ठप हो गई थोड़ी देर के बाद तेज मूसलाधार बारिश होने लगी, सड़कों पर पानी भर गया। विष्णु शंकर ने लालटेन जलाई अम्मा ने उसी की रोशनी में खाना बनाया। आज पहली बार ऐसा हुआ कि महमूद अली शाम को खाना खाने नहीं आया। खाना तैयार होने के बाद अम्मा ने विष्णु शंकर से महमूद अली के बारे में प्रश्नों की झड़ी लगा दी- कि ऑफिस आया था या नहीं? ऑफिस में उसका स्वास्थ्य कैसा था? कहीं वह गांव जाने को तो नहीं कह रहा था? विष्णु शंकर ने सभी बातों से मना किया और बताया वह एकदम ठीक-ठाक है और शाम को आने को भी कह रहा था। जैसे-जैसे समय बीतता गया अम्मा की बेचैनी बढ़ती गई अब उनका बड़बड़ाना चालू हो गया था। तरह-तरह के बुरे ख्यालों से चिंतित हो उठी थीं। उन्होंने विष्णु शंकर को महमूदअली के घर जाकर पता करने के लिए कहा तो विष्णु शंकर ने अत्यधिक थके होने के कारण टालना चाहा और बताया कि बाहर गली में पानी भर गया है, अंधेरा भी बहुत है, यदि कहीं गड्ढे खुले हुए मिले तो चोट लगने का भी खतरा है। परंतु अम्मा को किसी भी हाल में चैन नहीं पड़ रहा था और वह बेहाल होने लगीं तो मजबूरी में विष्णु शंकर ने अम्मा को महमूद अली के लिए खाना बांधने को कहा। एक लालटेन जलाई, छाते का इंतजाम किया, पायजामा को घुटनों तक मोड़ा, ऑफिस तो जूते पहन कर जाता था परंतु पानी में तो हवाई चप्पल ही पहनी जा सकती थी लिहाज़ा बड़ी खोजबीन के बाद एक जोड़ी चप्पल मिली। अम्मा ने टिफिन बांधा और ढेर सारी हिदायतओं के साथ विष्णु शंकर को रवाना किया। विष्णु शंकर एक हाथ में टिफिन दूसरे हाथ में लालटेन और गर्दन से छाते को दबा कर पानी से भरी हुई गली में बड़ी मुश्किल से चले जा रहे थे और मन ही मन महमूद अली को कोस भी रहे थे "कि जब वह इस तरह छाता, लालटेन लेकर पायजामा मोड़े बचते-बचाते हुए जा सकते हैं तो वह क्यों नहीं आ सकता था?" पानी के तेज होने के कारण छाते को संभालना बहुत मुश्किल हो रहा था, कई बार छाता उड़ने से बचा, तेज़ हवा में छाते को थामे रखने के प्रयास में विष्णु शंकर पूरी तरह से भीग गया था और पानी की बौछार से लालटेन भी बुझ गई थी। अब अंधेरे में एक-एक कदम टटोल कर आगे बढ़ना पड़ रहा था। कोढ़ में खाज ये हुआ कि उसकी हवाई चप्पल भी दगा दे गई।

अब तक विष्णु शंकर महमूद अली के कमरे के काफी नजदीक पहुंच गया था अन्यथा तो वह गुस्से के मारे छाता और चप्पल फेंक कर वहीं

से लौट गया होता। लेकिन उसे पता था वापस लौटने में भी कम मशक्कत नहीं होगी, बेहतर यही है कि महमूद अली के कमरे तक जाकर ही चैन से सांस लिया जाए। पानी में चलने पर बड़ी ताकत लगानी पड़ती है और विष्णु शंकर तन और मन से आज थका हुआ तो पहले से ही था। रह रह कर उसे बड़ी खीज हो रही थी कभी अपने ऊपर कि क्यों नहीं अम्मा को साफ- साफ मना कर दिया? कभी अम्मा के ऊपर कि जब महमूद अली से इतनी घृणा है तो इतने खराब मौसम में मेरे ऊपर ही इतनी ज्यादती क्यों? शायद अब अम्मा का व्यवहार बदल गया है और अब वह मुझसे पहले जैसा स्नेह नहीं रखतीं, गांव छोड़ने और अपनी गायों से अलग होने के कारण उनकी मानसिक स्थिति बिगड़ गई है इसी वजह से उन्होंने मेरी जान खतरे में डाल दी। तो कभी महमूद अली पर गुस्सा आता कि इस कमबख्त को क्यों अम्मा से मिलवाया और खाना खिलाने का जिम्मा लिया। जैसे मर्जी रहता मुझे क्या? एक तो महंगाई के समय खाना खिलाओ ऊपर से इन नालायकों के नखरे भी उठाओ। शराफत का तो जमाना ही नहीं रहा। आज ऑफिस में भी मैं तो काम के बोझ से मरा जा रहा था और यह नवाब साहब मस्ती कर रहे थे। ऑफिस में आए हुए व्यापारियों से किस्से कहानी कह रहे थे और मूंगफली और चाय की चुस्कियां ली जा रही थीं। अम्मा ने पहले ही सही कहा था यह लोग बड़े खुदगर्ज होते हैं अपने सुखों के लिए जीते हैं दुनिया जाए भाड़ में। अब तो नेकी का जमाना ही नहीं रहा। गांव में लोग कहते थे नेकी कर और कुएं में डाल, पर यहां तो यह हाल है कि नेकी कर और कुएं में कूद। तभी एक साइकिल वाला बगल से तेजी से गुजरा और छींटों के साथ सड़क का कीचड़ वाला पानी विष्णु शंकर के ऊपर पड़ा, अब उसका गुस्सा जो महमूद अली पर था साइकिल सवार की ओर मुड़ गया, वो तो साइकिल वाला दूर निकल गया था वरना विष्णु शंकर उसको पकड़ कर दो थप्पड़ तो रसीद कर ही चुका होता है। क्या करें सिर्फ हवा में गालियां ही उछाल सकता था लेकिन ये गालियां भी व्यर्थ थीं क्योंकि साइकिल सवार तब तक काफी दूर जा चुका था।

महमूद अली के कमरे तक पहुंचने पर देखा कि दरवाजा खुला हुआ है अंदर से लालटेन की रोशनी आ रही है। विष्णु शंकर का मन हुआ कि कुंडी खटखटाये पर जब दरवाजा आधा खुला हुआ था तो वह ऐसे ही अंदर पहुंच गया और उसने देखा महमूद अली मस्ती से विस्तर पर लेटा हुआ सिगरेट पी रहा है। विष्णु शंकर को देखते ही महमूद अली जोर से हंसा और बोला-

आओ बरखुरदार, कैसा मौसम है बाहर का? शंकर को और भी जोर का गुस्सा आया और उसने टिफिन धड़ाम से मेज पर रखा और बुझी हुई लालटेन जमीन पर रखते हुए टूटी हुई चप्पल और फटे हुए छाते को फर्श पर पटक दिया और फिर महमूद अली पर जोर से चिल्ला पड़ा तुम यहां मस्ती कर रहे हो और उधर अम्मा तुम्हारे कारण पगलाई पड़ी हैं चिंता में मरी जा रही है। महमूद अली और जोर से हंसा और बोला मैं जानता था अम्मा का मन मानेगा नहीं और तुम मूरख आज खाना लेकर आओगे जरूर। अब तो खीझ के कारण विष्णु शंकर का और भी बुरा हाल था उसका मन हुआ क्यों न पलट कर वापस लौट जाय, परंतु अम्मा के गुस्से का ख्याल कर वह शांत रह गया। विष्णु शंकर जब मुंह फुला कर बैठ गया तो महमूद अली ने उसको समझाया कि भले ही अम्मा अपने व्यवहार से यह प्रदर्शित न करती हों और कितनी भी कठोर दिखती हों परंतु उनके अंदर बड़ा अपनापन है, उनका नरम और ममतामयी स्वभाव बच्चों को भूखा नहीं देख सकता है। तुम हमेशा ही उनका मेरे प्रति बाहरी आचरण देखकर व्यथित रहते थे लेकिन आज तुमने उनके असली रूप का साक्षात्कार कर लिया। मित्र! याद रखो समाज में व्याप्त कुरीतियों का व्यक्ति के नैसर्गिक स्वभाव पर ज्यादा प्रभाव नहीं होता है।

संजय
चौक, कानपुर

गते शोको न कर्तव्यो भविष्यं नैव चिन्तयेत्.
वर्तमानेषु कार्येषु प्रवर्तन्ते विचक्षणा।।

भूतकाल अथवा बीती बात का शोक नहीं करना चाहिए और भविष्य की भी चिंता नहीं करनी चाहिए। बुद्धिमान मनुष्य सर्वदा वर्तमानकालीन कार्य में ही प्रवृत्त रहते हैं। (अर्थात् जो अपना वर्तमान सुधार लेता है वह अपने तीनों कालों को सुधार लेता है।)

कोरोना ने हमारे कितने सारे चीज छीन लिये लेकिन क्या-क्या मिला, वह हमने कभी सोचा क्या? सुबह से शाम तक मेरे इस कैमरे की लेंस में आया ऐसा कुछ चित्र जो मैं आप सब से शेयर करना चाहती हूँ। चाहे आँधी, चाहे बारिश, चाहे कोरोना हमनें हमेशा देखा आईआईटी अपने आप को कितना साफ सुथरा रखती है जो लोग मेहनत से यह सिलसिला हर सुबह चलते हैं उनको प्रणाम।

यह आईआईटी कानपुर का एक रॉयल पेट्रोनेज, सुबह-सुबह जिनके पंखों की रोशनी हमें याद दिलाती है हमी अस्त, हमी अस्त, हमी अस्त(agar firdaus bar roo-e zameen sat, Hameen sat-o Ėmeen sat) स्वच्छता की तरह हमें एक और निरंतर सहायता मिलती है आईआईटी से वह है हमारा एसआईएस उनको भी हमने कभी अपने काम से हटते नहीं देखा।

आइए! अभी सुबह.सुबह एक कप चाय के साथ प्रकृति को थोड़ा देख लें। यह मैग पाई रोबिन हमेशा हम से ही पहले उठता है और अपने सरगम से हमारा स्वागत करता है, जब से लॉकडाउन चालू हुआ यह कुर्सी तो उन्हीं की दखल में आ गई।

कवि गुरू रवीन्द्रनाथ के एक कविता का अंश याद आ रहा है श्फैले हुए हैं निस्पंद दो पंख, रेशमी सबूत अंग पर सफेद डोरी की महफिल। तितली हमें वह शांति दिखलाता है जो कोई उपासना से मिलती है। रेडवाटल्ड लैपविंग; titeeri) हमारा पड़ोसी है। उनको डीडीयू डू इट आवाज़ और उड़ते हुए मस्ती भर पंख हमें बेहतरीन लगता था। हिंदी में एक कहावत सुना tithri से आसमान थमा जाएगा। ('can the lapwing support the heavens?') is used to refer to persons undertkaing tsa beyond their ability or strength) 20 साल में पहली बार हमने देखा इस चिड़िया को हमारे रूफटॉप पर रहते हुए और सुबह-सुबह बिल्कुल निश्चित हमारे कैमरे के साथ-साथ चलते हुए।

चित्रलेखा भट्टाचार्य

"जिन्दगी! कैसी है पहेली" आज सवेरे नींद खुलते ही मन्ना डे का ये सवाल कानों में पड़ा। दुनिया कहती है कि आजकल सवाल जवाब के लिए बहुत वक्त है। सुबह-सुबह सवाल जवाब करते होंगे लोग, हमें तो उठते ही हाथ में महीनों पुरानी एक झाड़ू थमा दी जाती है। झाड़ू लगाने को सवाल जवाब करने जितना महत्व नहीं दिया जाता। मेरा मानना है कि ये न सिर्फ गलत है बल्कि झाड़ू के साथ सरासर नाइंसाफी है। झाड़ू लगाने में सवाल जवाब से ज्यादा न सही, तो उस जितनी ही मेहनत और फनकारी लगती है।

हाथ में झाड़ू थामने से पहले काफी तैयारी की जरूरत होती है। अपने घर के कोनों से गुफ्तगू करने की तैयारी। कीड़े मकौड़ों, मकड़ियों के जालों, कॉकरोचों और कभी-कभी छिपकलियों से जंग की तैयारी। परिवार के सदस्य जब मेहनत से सहेजी गयी मिट्टी पर चप्पल फेर दें, तो मन ही मन गरियाने की तैयारी। और अगर गर्मी बहुत हो, तो लगातार बहते पसीने को सहने की तैयारी। और बात यहीं खत्म नहीं होती। झाड़ू के उपक्रम की शुरुआत से पहले झाड़ू लगाने वाले का फर्ज़ है कि हर छोटी चीज़-जैसे कुर्सी, मूढ़े इत्यादि – को किसी बड़ी चीज़ पर रखे। ये किये बिना झाड़ू झाड़ू नहीं।

सबसे पहले बारी आती है बिस्तर या सोफे की। जब बिस्तर के नीचे हाथ जाता है, तो हड्डियाँ थोड़ा चटकती हैं, कमर थोड़ी लचकती है, और शरीर ये एहसास कराता है कि जवानी में ही बुढ़ापा आ चुका है। लेकिन बेचारे शरीर की बाकी बातों की तरह ये बात भी अनसुनी कर दी जाती है। नज़र जा टिकती है बिस्तर के नीचे से निकले बालों के भयावह गुच्छे पर। इस गुच्छे के आकार-प्रकार का विस्तृत विश्लेषण जरूरी है-ये जानना बेहद आवश्यक है कि कौन है वो अपराधी, जिसने रोज-रोज कहने के बावजूद बाल कूड़ेदान में नहीं फेंके। गहन एनालिसिस का अंजाम जो भी हो, इल्जाम घर में कोई स्वीकार नहीं करता और झाड़ू लगाने वाला खून के घूँट पीकर आगे बढ़ जाता है।

जब तक वो बालों का गुच्छा झाड़ू की सींक से अलग किया जाता है, घर के सभी सदस्य बिस्तर के करीब एक कोने में अपनी-अपनी चप्पलें जमा कर जाते हैं। फिर शुरू होता है सिलसिला जमीन और चप्पल की जुगलबंदी का। एक-एक कर हर चप्पल को जमीन पे पीटा जाता है। इस पिटाई की ताल केवल वादक की समझता है। जब तक ये संगीत खत्म होता है, चप्पलों की मिट्टी सहित वादक के दिल का सारा गुस्सा भी ज़मीन पर चुपचाप बिखर चुका होता है। इस इजलास के

उपरान्त सभी चप्पलों को एक के ऊपर एक रखा जाता है, ये याद करते हुए की घर में किस से लगाव है और किस से नोंक-झोंक। घरेलू कानून के हिसाब से अगर किसी से झगड़ा है, उसकी चप्पल चप्पलों के पहाड़ में सबसे निचली होगी। इस सब के बीच अगर कोई ये कहने की हिमाकत कर दे कि झाड़ू झुक कर लगाओ, तो उसकी चप्पल को बिना कुछ कहे सुने पूरी प्रक्रिया से निष्कासित कर दिया जाता है।

कम से कम एक जाने और एक अनजाने कीड़े से मुलाकात के बिना झाड़ू अधूरा है। कीड़ा कुचला जाएगा या झाड़ू लगाने वाले का मनोबल, ये कीड़े की लम्बाई चौड़ाई पर निर्भर करता है। अगर कीट बड़ा हो तो उसे जीवन की भीख माँगनी चाहिए। सारी दिलेरी और साहस इकट्ठा कर उसे झाड़ू से डराना धमकाना भी चाहिए। इस सबसे भी अगर कुछ न हो, तो हार मान लेने में समझदारी है। कुछ देर में कीड़ा अपनी मर्जी से वापस वहीं चला जाता है जहां से वह आया था।

अभी पूरी तरह जान में जान भी नहीं आयी होती की चाय की चुस्कियाँ रोक कर अम्मा कहती है-अरे पंखा भी साफ कर देना। छत पर टंगे टीन के टुकड़े को कोई नहीं देखता, ये बात अम्मा की समझ आना मुश्किल है। पंखा सफाई का अर्थ केवल पंखा सफाई नहीं समझना चाहिए-इस सफाई में मकड़ियों के जाले हटाना, खुद को मिट्टी में नहलाना, और सहना भी शामिल होते हैं। ध्यान रखिये, पंखा कहीं भी हो, उसकी मिट्टी बिस्तर की साफ चादर पर नहीं गिरनी चाहिए। इस पंखे पर एक इंसान का बेशकीमती समय बेकार किया जाता है, ये जानते हुए की अगले हफ्ते ये उतनी ही गंदगी के लिए शान से सब के सर पर नाचेगा।

अब आखिरी और सबसे जटिल काम सारे कूड़े को इकट्ठा करना और फेंकना। इस कार्य के लिए झाड़ू सहित कूड़े में से निकला गत्ता या कागज, मिट्टी संग्रह औजार और अन्य कई तिकड़म इस्तेमाल होते हैं। पर अंत में सभी यंत्र बेसूद पाए जाते हैं और मिट्टी हाथों से ही बटोरी

और फेंकी जाती है। मिट्टी फेंककर जब व्यक्ति झाड़ू को लापरवाही से एक कोने पटकता है तो मन हल्का और आज़ाद सा हो उठता है। साफ पंखा अपनी हवा के झोंको से गालों को सहलाता है, और झाड़ू लगाने वाला उन्माद से भर जाता है। वो जानता है कि उसने झाड़ू लगाकर उस दिन के सभी कामों को न कहने का लाइसेंस हासिल कर लिया है।

जनाब, झाड़ू लगाने को फिर कभी मामूली मत समझियेगा। काफी माथा पच्ची, सोच विचार और मूल्यांकन का खेल है ये। अब तो मान गए न कि ये दर्जे में किसी सवाल जवाब या मुबाहिसे से कम नहीं?

आस्था शर्मा, छात्रा

एक मुस्कान लिए फिरता हूँ

क्या है दशा मेरी किन हालातों से गुजरा हूँ
तू पथिक क्या जानेगा कितना उजड़ा हूँ
उनके सवालों में घुले व्यंग्य पिए फिरता हूँ
चेहरे पर एक मुस्कान लिए फिरता हूँ।

कुछ ने किया सम्मान कुछ ने तिरस्कार किया,
कुछ ने दिया सहारा कुछ ने आघात किया,
जीवन के हर पहलू को याद किये फिरता हूँ
चेहरे पर एक मुस्कान लिए फिरता हूँ

कई बार डरा कई बार रुका बस मुड़ा नहीं
माँगे सुख जो मिले भी है कभी उड़ा नहीं
धैर्य और परिश्रम का गुणगान किए फिरता हूँ
चेहरे पर एक मुस्कान लिए फिरता हूँ।

लाख मिली विफलताएं आखिर सीखा भी उनसे ही है
भूलों को गले लगाया खुद को सींचा भी उनसे ही है
आज भी एक डर साथ लिए फिरता हूँ
चेहरे पर एक मुस्कान लिए फिरता हूँ।

कनिष्क तोमर, छात्र

26 जून , 2020 लॉकडाउन में I.I.T. को अकस्मात् बंद हुए तीन महीने हो गए, जिसमे आज पहली बार घर से कुछ दूर निकला। वरना अब तक घर से निकलना गेट से सोसाइटी और उसके आसपास की कुछ दुकानों तक ही सीमित रहा है – उन्ही चार गलियों में जलेबी की तरह मुड़ना, सोसाइटी की बिल्डिगों की छतों पर घंटों शामें बिताना, घर लौट रहे पंछियों को देखना, शहर के हाशिये पर बने अपने घर से एक ओर शहर की रोशनियों को जल उठते देखना और दूसरी ओर पहाड़ियों को अँधेरे में गुम होते। शायद यह I.I.T. की कोठियों, कोठरियों, और चार दीवारियों में मिली ट्रेनिंग का असर है कि इतने दिनों तक ये सिमटी सी दुनिया बिलकुल अजीब नहीं मालूम पड़ी।

पर आज घर से निकला तो हर रोज़ की तरह इयरफोन लगाके घूमने की इच्छा नहीं हुई। कॉलोनी की सबसे ऊँची छत से जब बाउंड्री के पीछे तालाब को देखा तो लगा कि पहली बारिश के आने से उसके चारों ओर की हरियाली कुछ बढ़ी, कुछ घनी सी मालूम पड़ती है। बाहर के मोहल्ले की एक छत पर मेहमानों के खाने की तैयारी ज़ोर शोर से चल रही है। कॉलोनी के अंदर कतारों में बने घर और बाहर के मोहल्ले में सैकड़ों सपनों में ढले मकान, गलियों में खेलते बच्चे और सीढ़ियों पर बैठ उन्हें देखती दादियाँ, तालाब के किनारे पगडंडी पर चलता युवक –ज़हन में 'आँखों देखी' फ़िल्म का डायलॉग गूंज गया – यह यथार्थ है। मानो एक लम्बी नींद खुली हो। एक हवा चली, हल्की बूँदें मेरे चेहरे पर छिड़क गई, हरे पेड़ों को सरसराहट से भर गई, और मैं इस यथार्थ को देखने निकल गया। सोचा घर से कुछ पैसे उठाता चलूँ , पर रुकने की इच्छा नहीं हुई।

गलियारों में भटकते हुए आप कई खोए हुए अनुभव दोबारा महसूस कर पाते हैं, मानो अंजान रास्तों पर अपनेआप की ओर बढ़े चले जा रहे हों। एक बार फ़िर तालाब के किनारे के बरगद के चारों ओर बारिश का कीचड़ है। इसे पार करने के लिए हर्गिज़ ही ईंट-पत्थरों का रास्ता बना होगा। उस रास्ते को ढूँढना एक पल के लिए आपको वास्तविकता से जोड़ देता है, जैसे किसी तंद्रा से बाहर आए हों। पगडंडी कितनी संकरी, कितनी घनी झाड़ियों बीच, और तालाब के कितना पास है, यह आप किसी बिल्डिंग की छत से नहीं जान सकते।

गलियों में चलते हुए कई बार ऐसा लगता है कि किसी के अहाते में घुस आए हों, जहां कोई बच्चा अपनी दादी को फुटबॉल खेलने के लिए चैलेंज कर रहा है, या कोई माँ अपनी बच्ची की चोटी बना रही है। ऐसे में आप कुछ कम तंग गलियाँ ढूँढते हैं, जहाँ आप औरों के मुक़ाबले कुछ कम अजनबी हो सकें। पर शायद ये मुमकिन नहीं, क्योंकि यहां सिर्फ आप इस गली के नहीं हैं, और बेवजह दूसरों की गलियों में घूमने वालों को पहचानना इतना मुश्किल नहीं होता। कम से कम मुझे ऐसा महसूस होता है जब यहां के बाशिंदे मुझे गुज़रते हुए देखते हैं। हो सकता है कि ये सिर्फ मेरा सेल्फ़-अवेयरनेस हो, या फिर इसके पीछे हो मेरा इन गलियारों, इनकी दुकानों, घरों के छतों-अहातों को संकुचित रूचि से देखना, इनके अजनबी होने में भी इनका पहचाना हुआ लगना, और किसी खोई हुई याद से दोबारा दोस्ती की मंद मुस्कराहट, जो रोज़मर्रा की शामों में हर चेहरे में नहीं दिखती, क्योंकि इसके पीछे चौरानवे दिनों का अकेलापन और जाने कितने बरसों का भुलावा है।

इस रोमांस के साथ भटकने में वाजिब है कि आप भूल जाएँ कि पिछले मोड़ पर किस ओर मुड़े थे – ऐसा मेरे साथ जैसलमेर में हुआ था, जहां हर सड़क, हर मकान एक सा सुनहरा है। पर आज अपने ही शहर में जब फिर वही एहसास हुआ तो लगा कि यहाँ सवाल जगह की पहचान का नहीं, खो जाने की चाह का है। ख़ैर, ऐसे में अगर आप दाएं के बाद बाएं मुड़ें तो मोटे तौर पर आगे बढ़ते रहते हैं और गोल-गोल घूमने से बचते हैं। किसी चौराहे पर दो या तीन ओर से आते लोग अगर एक ही रास्ता पकड़ें तो अनुमान लगता है की यह सड़क वापस दुनिया की ओर ले जाती है – दुनिया जिसे हम पहचानते हैं, जिसकी परिभाषा ही गोल घूमने से है।

जब वो सड़क मिली, जिसे मैं अच्छी तरह पहचानता हूँ, तो उस पर लौटने की इच्छा नहीं हुई। मन में आया कि बस दूसरी ओर चलता जाऊँ। घर लौटते हुए सोचता रहा, कैसा हो अगर लौटना न पड़े। बस चलते जाएँ, बढ़ते जाएँ, ज़रुरत हो तो ठहर जाएँ और रात का बसेरा वहीं बना लें। आज़ाद पंछी भी तो ऐसा ही करते हैं।

ऋषिकेश

बचपन में अपने मूल स्थान जो गाँव में है, से दूर जाकर भी मुझे यहाँ की मिट्टी अपने पास हमेशा खींच लाती है। शायद यही कारण है कि आज तक मेरे पूर्वज इतना धन धान्य होने के बाद भी इस जगह को छोड़ कर नहीं गए। इस बार का मेरा अनुभव भी अत्यंत आश्चर्य जनक रहा है। शायद पहली बार मैं घर में ऐसे रुका जब वापस जाने की तिथि निश्चित नहीं थी। और शायद यही कारण है जिसने मुझे इतने आनंद की अनुभूति दिलाई। कैसे जिन्दगी में कभी बिना भविष्य जाने आप खुश रह सकते हैं, इसने मुझे सिखाया। अपने हाथ से पैदा किया अनाज खाने में क्या सुख देता है शायद अब मैं ये जान गया हूं।

हुआ यूँ कि मैं अपने माता-पिता के साथ अपने गाँव के घर में हूँ और हमारे खेत गेहूँ से पक कर लहलहा रहे हैं, खेत में खड़े होकर देखो तो लगता है मानों सोने की चादर चारों तरफ फैली है। पर इस बार कोविड-19 के कारण कोई अपने घर से निकल नहीं रहा था, सो मजदूरों को छोड़ मेरे पिताजी ने ये खेत गेहूँ काटने की जिम्मेदारियाँ मुझे दे दी हैं। पहले मैंने ऐसा काम किया तो था पर अकेले नहीं बस दूर से देखकर दूसरों को करते हुए। बस आईआईटी में होने का जोश बाहर आ गया आव देखा न ताव हाँ में हाँ मिला दिया। दूसरे दिन ब्रह्ममूहूर्त (सुबह 4 बजे) से ही काम शुरू कर दिया मैंने मानो ऐसा लगा जैसे पर्वत उठा लिया हो अकेले जैसे ही पहला बोझ रखा सर पर, परंतु जब थोड़ी देर बाद सोने सी दिखने वाली बालियों ने हाथ को काटना शुरू किया, तो ऐसे भागा जैसे गधे के सिर से सींग और वो ललक सूर्य निकलते लगभग गायब हो गई, परन्तु दीपक को तो जलना ही था भले ही पारा सूरज की गर्मी से उतर गया हो पर दीपक को तो जलना था, पर कब तक। कल काटेंगे सोचकर मैं वापस आ गया, कभी शाम कभी सुबह बड़े जतन करके 6 दिन में 1 दिन का काम पूरा हुआ और सोने की परत काट ली गई। ट्रेक्टर से दाना निकालकर अब बारी आई उसे ढोकर ले जाने की पर अब शरीर इतना थक चुका था कि हाथ पैर जवाब दे चुके थे। माता-पिता के बार-बार मना करने पर भी अब दीपक का किसान किसकी सुनने वाला था। अब वो ललक जिज्ञासा में बदल गई थी मुझे जानना था कितनी मेहनत लगती है थाली तक भोजन लाने में। एक-एक करके ढेरों बोरी अनाज 10 बजे दिन तक ढोने के बाद ऐसा लगा जैसे 100 सालों का काम पूरा कर लिया गया हो। इतना थकने के बाद घर में नीम के पेड़ के नीचे बैठे दिमाग में आया, इतनी मेहनत से रोटी मिलती है कभी सोचा न था। इतनी मेहनत करके किसान का 10-15 रुपए अनाज बिकता है शायद ये किसान का दिल है जो देता है उसका व्यापार नहीं क्योंकि ये पैसे से नहीं तोला जा सकता। सोचते हुए नजर गई बाली से निकला एक गेहूँ का दाना अभी भी मेरे कंधे से चिपका था मानो बोल रहा हो अब पता चला कीमत क्या है आत्म निर्भर होने की। मैंने मुस्कुराते हुए वो एक दाना अपने मुँह में रखा अब मुझे विश्वास है कि इससे ज्यादा स्वादिष्ट कुछ भी नहीं है मेरे लिए इस दुनिया में।

दीपक के सिहं, छात्र

> अपने जीवन में जिसने पाप और पुण्य दोनों का परित्याग कर दिया, जो पवित्र है, जो इस संसार में विवेकयुक्त होकर रहता है, वही वास्तविक रूप में साधु कहा जाता है।
>
> भगवान बुद्ध

दिल बहुत उदास है

कैसे कलम रोक दूँ दिल बहुत उदास है,
कदम मेरे चल रहे हैं फूल रही सांस है।
क्या लिखूँ मैं जब मेरा दिल बहुत उदास है,

दिल पिघल उठा मेरा वो नंगे पैर देखकर
सभी ने फेंक दिया गरीब श्रमिकों को उठाकर
भूखे पेट चल रहे पैरों में घाव है,
पीछे कितने शहर निकल गए, नहीं कोई छाँव है।।

और माँ बहुत बेहाल है,
आँचल में छुपा लाल है,
पल्लू से वो ढंक रही न कहीं कोई आस है।
क्या लिखूँ मैं जब मेरा दिल उदास है।

कौन सुने गरीबों की बनते कई खास हैं,
रसूखों ने भी मुँह फेर लिया, जिनसे कई आस है।
और सरकार उलझ गई है नए दाँवपेच में
ईश्वर ही मदद करें इस जीवन-मरण के मंच पर।
और किसके सर पे दोष दूँ
बोलो कैसे कदम रोक दूँ।
चलने वाला हर कोई परिस्थिति का दास है,
क्या लिखूँ मैं जब मेरा दिल उदास है,

योगेश कनौजिया
परियोजना कर्मचारी

जलपरियों के देश में ...

लहरों पर उत्पात मचाऊँ , सागर में उन्माद जगाऊँ ,
चंचल मीनों से बतलाऊँ , अपने मन की व्यथा सुनाऊँ
धरती की तस्वीर बनाऊँ , सलिलों के परिवेश में,
मन करता है मैं भी जाऊँ जलपरियों के देश में।

सूरज की आभा सा छाऊँ , निशाकरों का दम्भ घटाऊँ,
सागर सी गहराई लाऊँ , चिड़ियों सा नभ को छू आऊँ ,
सविताओं सी मैं बह जाऊँ, सूखे हुए प्रदेश में...
मन करता है मैं भी जाऊँ, सरिताओं के देश में।

क्रांतियुद्ध का शंख बजाऊँ , रणवीरों को तिलक लगाऊँ,
सुत की माओं को समझाऊँ , उनके दृग से अश्रु हटाऊँ,
मंजरियों सी मैं झर जाऊँ , वीरों के पथ शेष में...
मन करता है मैं भी जाऊँ शहादतों के देश में।

राधा की पिय -भक्ति गाऊँ , सीता सी मन-शक्ति लाऊँ ,
सावित्री का हठ बन जाऊं, कुरु-माँ सा लोचन बिसराऊँ,
मीरा सी जोगन बन जाऊँ , बावरियों के वेश में ...
मन करता है मैं भी जाऊँ , पूज्य स्त्रियों के देश में।

कंटक में फिर फूल खिलाऊँ, पाहन में भी श्वास जगाऊँ,
दुखियों का अवसाद मिटाऊं, रुग्ण जनों को स्वस्थ बनाऊँ ,
जीवन का संगीत सुनाऊँ, निर्जन के अवशेष में ..
दिनकर की कविता बन जाऊँ , मधुता के सन्देश में..
मन करता है मैं भी जाऊँ , जलपरियों के देश में....!

ज्योति मिश्र, शोध छात्रा, जीवविज्ञान

पता नहीं ,मेरी कैलाशी नानी अब इस संसार में हैं भी कि नहीं। परंतु उनकी स्मृति इतनी ताजा है कि आज भी कैलाशी नानी वही अपनी मैली सी, घुटने के ऊपर तक की धोती और फटी हुई मिर्जई पहिने, बगल में रोटी और नमक की पोटली सम्हाले, और हाथों में गायों को हांकने का डंडा लिए न जाने कितनी बार आंखों के सामने घूमती हुई दिख जाती है। वह गंवार अनपढ़ स्त्री, जिसे अक्षर का भी ज्ञान न था सहज ही भुला देने की वस्तु न थी। मेरी नानी न होकर भी वह मेरी नानी थी। मेरे मामा के गाँव में मामा के घर से चार पाँच घर हटकर उनका छोटा सा झोपड़ा लिपा पुता साफ। उस झोपड़े में न तो कोई दरवाजा था। बरतनों के नाम से कुछ मिट्टी के ठीकरे थे और बिस्तर की जगह थोड़ा पुआल पड़ा था। यही मेरी कैलाशी नानी की गृहस्थी थी। पड़ोसी ही उनके परिवार वाले थे और गाँव के बच्चे उनके परमेश्वर।

हाँ, तो मेरी कैलाशी नानी, उस गाँव के रहने वालों के जानवर चराने के लिए जाया करती थीं। उस गाँव में करीब चालीस घर थे और घर के पीछे एक सेर अनाज चराई में मिल जाया करता था। यही कैलाशी नानी की जीविका थी। इसी में कैलाशी नानी का दान पुण्य हो जाया करता था और इसी नाज को बदलकर उन्हें रोज़ के व्यवहार के लिए नमक, तेल, मिर्च, मसाला भी लेना पड़ता था। पैसे तो गाँववालों को वैसे ही बड़ी कठिनाई से देखने को मिलते हैं। कैलाशी नानी की तरह गरीबनी को पैसों का दर्शन दुर्लभ होना ही चाहिए।

इस प्रकार का जीवन बिताकर भी कैलाशी नानी दुखी न थीं। वे सदा प्रसन्न और हँसती रहतीं, दूसरों की सेवा के लिए तत्पर रहतीं। आधीरात को भी बुला लो, तो वह तुम्हारा हर तरह का काम कर देंगी फिर भी तुमसे किसी प्रकार की आशा न रखेंगी।

शुरू के दिन थे। एक दिन मामा के गाँव से एक आदमी संदेशा लेकर आया कि मामा ने माँ और सब बच्चों को बुलवाया है। और फिर हम सब भाई बहिनों ने जब तक माँ ने मामा के घर चलने की तैयारी न की, उन्हें तंग कर डाला। सबसे बड़ा भाई मैट्रिक में था। उसकी पढ़ाई का हर्ज होगा, इसलिए उसे छोड़कर बाकी हम चार भाई-बहिनों को ले आखिर एक दिन माँ मामा के घर आ गई। माँ के साथ आनेवाले सब भाई-बहिनों में मैं सबसे बड़ी थी। मेरी उमर दस-ग्यारह के बीच में ही थी। हम सब भाई-बहिनों को मामा के घर तो कुछ अच्छा न लगता, पर मामा के घर से सौ फुट हटकर जो नदी बहती थी, उसमें नहाने

सुभद्रा कुमारी चौहान

(जन्म-मृत्यु 1904-1948)

खूब लड़ी मरदानी वो तो झाँसी वाली रानी थी, जैसी अमर कविता की रचयिता सुभद्रा कुमारी चौहान जितनी बड़ी कवयित्री थीं, उतनी ही बड़ी कथाकार भी थीं। कविताओं की भाँति उनकी कहानियाँ भी हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं और पाठकों की संवेदना पर नावक के तीर का सा असर छोड़ती हैं। सुभद्रा जी की कहानियाँ एक ओर जहाँ रुढ़ियों पर प्रहार करती हैं वहीं ऊपरी दिखावे का भी विरोध करती हैं।

और कैलाशी नानी के साथ ढोर चराने के लिए जाने में बड़ा आनंद आता था। जहाँ कैलाशी नानी ढोरों को ले जाती थीं, वहाँ दूर तक जहाँ भी दृष्टि पहुँच पाती थी, सब हरा ही रहा दीख पड़ता था। दूर-दूर तक दो तीन आम, ढाक और पीपल के पेड़ थे जिनकी घनी छाया में हम लोग दुपहरी बिताते थे। गाँव के छोटे बच्चों का एक झुंड कैलाशी नानी के नेतृत्व में ढोर चराने निकलता और फिर वहाँ केवल ढोर ही न चराए जाते थे। वहाँ कहानियाँ कही जातीं, पहेलियाँ होतीं, कभी-कभी रामलीला भी होती। और रामलीला तभी संभव होती, जब राम बनने कि लिए मैं सीता बनने के लिए मेरी छोटी बहन साथ रहती। मतलब यह कि गाँव में रहकर जितनी बातें संभव थीं वहाँ हम लोग सभी करते। हम सभी भाई बहिनों को इस ग्रामीण जीवन में बड़ा सुख मिलता। एक भाई बहुत छोटा था। वह तो माँ के ही साथ रहता, किन्तु हम तीन और मुझसे छोटा भाई जो आठ साल का था और उससे छोटी बहिन जो छै साल की थी, प्राय रोज़ कैलाशी नानी के साथ जंगल में भाग जाते।

मुझे याद है कि हम लोग घर के अच्छे से अच्छे भोजन को यह कहकर छोड़ देते थे कि अच्छा नहीं बना और सच ही वह अच्छा न लगता था। किन्तु कैलाशी नानी की जंगल में सूखी रोटियाँ नमक या कभी-कभी चटनी के साथ खाने में जितना स्वाद आता था, उतना स्वाद कभी किसी भोजन में नहीं आया। रोटियाँ भी गेंहूँ की नहीं, न जाने कितनी

तरह के नाज मिलाकर बनाई जाती थीं। कैलाशी नानी को हर घर से एक ही नाज तो मिलता न था, कहीं गेंहूँ, कहीं जौ। ज्वार, मक्का, उड़द, मूँग, अरहर सब मिलाकर इकट्ठा कर देंती और रोज आवश्यकतानुसार किसी की चक्की से पीस लातीं और दूसरे दिन के लिए रोटियाँ सेंक रखतीं। यही उनका प्रतिदिन का आहार था। यही रोटियाँ वो सबको खिलाती थीं और हमलोग बड़े स्वाद से खाते थे। कभी-कभी गाँव के दूसरे बच्चे नदी में धोती फैलाकर मछली पकड़कर भूनते। उस दिन कैलाशी नानी रोटी भी न खातीं। सत्तू खाकर ही रह जातीं।

इसी प्रकार एक दिन हम लोग कैलाशी नानी के साथ हार पर गए थे। उस दिन कैलाशी नानी ने राजा-रानी की कहानी सुनाई थी। राजा की एक राजकुमारी थी, बड़ी सुंदर, बड़ी नेक, किंतु एक दिन जब वह नदी पर नहा रही थी तो परियों के देश के राजा का राजकुमार आया और राजकुमारी को घोड़े पर बैठाकर ले भागा। कहानी सुनने के बाद, कलेवा से पहिले, हम लोग बड़ी देर तक नहाते थे और तैरते थे। पानी बहुत गहरा न था, पर बड़ा साफ था। नदी में नहानें का प्रलोभन ही हमें यहाँ घसीट लाता।

हाँ, तो उस दिन नहाते-नहाते मुझे यही डर लग रहा था कि कहीं परियों के देश का राजकुमार न आ जाए। वहाँ राजकुमार तो न आया, परंतु जब नहा धोकर लौटी, तो देखा कि कैलाशी नानी के पास कोई बैठा है। कपड़े जरा साफ-सुथरे थे। मैं डरी कि कहीं यही तो वह राजकुमार नहीं है। फिर घबराकर दूर तक नज़र दौड़ाकर देखा, कहीं भी कोई घोड़ा न दिखा। मैं बेफिक्र हो गई कि यह राजकुमार नहीं है। वह होता तो घोड़ा जरूर होता।

बाद में कैलाशी नानी से मालूम हुआ कि वह गाँव का जमींदार है और कैलाशी नानी को हर महीने ढोर चरवाई में पाँच सेर अनाज देता है। वह वहीं हम लोगों के पास पीपल के पेड़ की जड़ पर बैठ गया और हम सब भाई बहनों के बारे में कैलाशी नानी से बातचीत करने लगा।

जब उसे यह मालूम हुआ कि अभी तक मेरी शादी नहीं हुई है तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि गाँव में तो उस समय लड़की के पैदा होते ही ब्याह की बातचीत हो जाती। और तीन-चार साल के होते-होते तो ब्याह भी हो जाता। उसने स्वर भी जरा धीमा करके कैलाशी नानी से पूछा, क्या कुल में दाग है जो इतनी बड़ी लड़की कुंवारी है?

कैलाशी नानी ने कहा नहीं भइया, कुल में दाग-वाग कुछ नहीं है। बड़े आदमी हैं। लड़की-लड़के सभी मदरसे में पढ़ते हैं। यही बिटिया रामायण बांच लेती है। अंग्रेजी पढ़ती है। जब पढ़ लेगी तब कोई आदमी देखकर शादी-ब्याह करेंगे।

वह जमींदार जितनी देर तक बैठा रहा, घूर-घूर कर मेरी ओर देखता रहा। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर यह आदमी मेरी ओर इस प्रकार क्यों देख रहा है। वह जब तक रहा मुझे वहाँ अच्छा न लगा।

दूसरे दिन जब कैलाशी नानी ढोर ढीलन आई, छोटी बहिन और भाई तब तक सोकर नहीं उठे थे। अतएव उस दिन मैं अकेली ही कैलाशी नानी के साथ भाग गई। कलेवा करने से पहले फिर हम सब नहाने गए, जब नहा रहे थे, वह जमींदार फिर आया, उसी प्रकार घूर-घूरकर देखता हुआ, कैलाशी नानी के पास चला गया। कैलाशी नानी पेड़ के नीचे झाड़-बुहारकर हम लोगों के भोजन की तैयारी कर रही थी। जमींदार बड़ी देर तक न जाने क्या कैलाशी नानी को समझाता रहा और हम लोग बड़ी देर तक नहाते रहे। मैंने देखा, हाथ जोड़कर कैलाशी नानी ने किसी बात को अस्वीकार किया और जमींदार ने कुछ न सुनकर कैलाशी नानी के पल्ले में कुछ जबरदस्ती बाँध दिया और तेजी से दूसरी तरफ चला गया।

हम लोग भी रोटी खाने आए पर आज कैलाशी नानी रोज की तरह खुश न थीं। उनके चेहरे पर एक तरह की उदासी थी जो छिपाए न छिपती थी। उन्होंने हमें खिलाया-पिलाया और फिर कहानी सुनाने बैठीं किन्तु कहानी सुनाने में उनका मन न लगा। ढोर हाँकने और दिन जैसे मैं भी सब बच्चों के साथ भाग जाती थी, आज कैलाशी नानी ने वैसे न जाने दिया। अपने पास ही बैठाए रखा, जब मैं जाने के लिए जिद करने लगीं, एकाध बार डाँट भी दिया। मैं समझ न पाई कि आखिर आज ये ऐसा क्यों करती है। पर माँ ने सिखाया था कि बड़ों की बात में सदा क्यों और किसलिए नहीं करना चाहिए, चुपचाप मान लेना चाहिए। यही सोच-समझकर उस दिन मैं चुपचाप कैलाशी नानी के पास बैठी रही, पर अच्छा न लगा। उस दिन कैलाशी नानी कहानी भी तो ढंग से न कह सकी थी। कहते-कहते रुक जाती और कुछ सोचने लगती। खैर अच्छा ही हुआ कि उस दिन और दिनों की अपेक्षा हम लोग जल्दी ही हार से लौट आए।

शाम हो चुकी थी। माँ तुलसी के पास दिया जला रही थीं। कैलाशी

नानी छिपती हुई सी माँ के पास आई और इशारे से बुलाकर अलग कोठरी में ले गई। उन्होंने माँ से कहा कि सब बच्चों समेत वे जल्दी-जल्दी घर वापिस चली जाएं! कारण, वह जमींदार माँ की दोनों लड़कियों को यानी मुझे और मेरी छोटी बहिन को, उड़ा लेना चाहता है। जमींदार का मेरे मामा से बहुत दिनों से बैर चला आता था। शायद बैर का बदला वह इस प्रकार लेना चाहता था। जमींदार ने कैलाशी नानी से कहा था कि वह मुझे और मेरी बहिन दोनों को हार ले जाए। हम दोनों खुले सिर घूमा-फिरा ही करती थीं। मौका पाते ही वह हम लोगों को मिठाई खिलाने के बहाने, अपने पास बैठाकर दोनों की माँगों में सिंदूर भर देगा। फिर हम दोनों बहिनें उसकी ब्याही हुई स्त्री के बराबर हो जाएंगी। मामा जानकर भी कुछ न कर सकेंगे। इसी काम में वह कैलाशी नानी से सहायता चाहता था। इसके लिए दस रुपए तो उसने आज ही कैलाशी नानी के पल्ले में बाँध दिए थे और चालीस रुपए वह काम पूरा हो जाने पर और देगा। कैलाशी नानी का इतना ही काम था कि वे जरा सी सहायता दे दें। बस इतने में जमींदार का काम बनता था औऱ कैलाशी नानी को पचास चाँदी के चमकते हुए रुपए मिलते थे।

कैलाशी नानी ने शपथ लेते हुए वे दस रुपए कमर से निकालकर माँ को दिखलाए और बोली, बिटिया झूठ नहीं कहती। मेरे पास तो दस पैसे भी नहीं फिर ये दस कलदार कहाँ से आए? ये उसी अधर्मी ने बाँध दिए हैं। तुम मेरी बात मानो! बिटिया को लेकर चली जाओ। जिस गाँव का जमींदार इतना अधर्मी है, वहाँ फिर न आना। बिटिया का शादी ब्याह करके, ससुराल भेजकर आना।

कैलाशी नानी ने यह भी कहा कि माँ के जाते ही वे इन रुपयों को जमींदार के आगे फेंक देंगी। यह अधर्म का पैसा कभी स्वीकार न करेंगी।

मुझे याद आया कि एक दिन मैं एक इकन्नी लेकर हार चली गई थी। कैलाशी नानी ने जब देखा कि मेरे पास इकन्नी है, तो मुझसे लेकर बहुत सम्हालकर, पल्ले में कई गाँठ लगाकर बाँध लिया और शाम लौटकर जब आई तो माँ को इकन्नी देकर बोली, पैसा-कौड़ी बच्चों को न दिया करो। कहीं गिर जाता तो नुकसान न हो जाता? थोड़ा भी नहीं, एक आना भी नहीं! एकदम नहीं!!

और माँ ने जब वह इकन्नी उन्हीं को वापिस कर दी, तब कैलाशी नानी के चेहरे से ऐसा भाव टपक रहा था- जैसे उन्हें कहीं का खजाना, मिल गया हो। कोई बार इकन्नी को उलट-पुलटकर देखने के बाद कैलाशी नानी ने बहुत सम्हालकर उसे कमर में खोंस लिया और माँ को जाने कितना असीसती हुई घर गई थीं।

वही कैलाशी नानी आज कमर में दस कलदार बाँधे थीं। कल जरा सी बात के लिए चालीस रुपए और मिलने वाले हैं। पर कैलाशी नानी अधर्म का पैसा नहीं लेना चाहतीं, नहीं लेंगी। वह कल माँ को घर भिजवाए बिना, ढोर लेकर हार भी न जाएंगी। और तब जमींदार के रुपए उनके दरवाजे पर जाकर फेंक देंगी। फिर जमींदार चाहे तो महीने का पाँच सेर नाज भी बंद कर दे, कैलाशी डरती नहीं। गाँव भी तो उसी का है, चाहे तो निकाल दे। कैलाशी कहीं भी जाकर ढोर चरा पेट पाल लेगी। पर सोने की ईंट दिखाकर भी, कैलाशी नानी से अधर्म का काम नहीं करवा सकता। कोई जबरन माँग में सिंदूर भरकर उनकी लड़कियों को अपने घर रख लेगा, माँ को इन बातों पर विश्वास नहीं था क्योंकि मेरे पिता वकील थे। वे जमींदार को इस मामले में जेल की हवा खिला सकते थे। फिर भी माँ कैलाशी नानी के आग्रह को टाल न सकीं। दूसरे दिन हम सब बच्चों के साथ घऱ चली आईं।

तब से आज तक युग बीत गए, पर कैलाशी नानी का कोई समाचार नहीं मिला।

संग्रह स्रोत-सम्पूर्ण कहानियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान

मिट्टी

खुद को मिटा के आज समझा क्या
हमारी हस्ती है,
तू भी मिट्टी मैं भी मिट्टी अखिल
विश्व बस मिट्टी है।
जिसकी किलकारियों पर था तू ना
फूला समाया,
पकड़ के हाथ जिसको था तूने चलना
सिखाया,
जिसके उदास होने पर था तेरा मन भी
तो रोया,
वही आज तुझको ना छूता क्योकि आज
तू मिट्टी है।
निज नाम के बल पे था तूने शौर्य
कमाया,
पैसा कमाया और व्यवहार कमाया,
दुनिया ने उस नाम को देखो कैसे
भुलाया,
नहीं लेता कोई नाम आज, कहता तुझे
सिर्फ मिट्टी है।
जिन के लिए थी कर्मो की तूने
गठरी बनाई,
अपना ना सोच, जिनके लिए जिंदगी
खपाई,
आज उन्ही अपनों ने तुझसे दूरी
बनाई,
टूटी सासों की डोर अब, बची रही बस
मिट्टी है।
सारे बंधन तोड़ के अब तुझको तो बस
जाना है,
यह जग अब तेरे लिए अपना नहीं
बेगाना है,
चला जा रहा है शान से जो चार
काँधों पर,
याद रख वो तू नहीं बस जाती तेरी
मिट्टी है।

डॉ. अंकुश शर्मा, यांत्रिक अभियांत्रिकी

कितना बदल गया संसार

अब की बार ये कैसा मौसम आया,
हवाओं में बस जहर ही भरपाया,
जीने का रंग और ढंग बदल गया,
सांसो की लड़ी पिरोना कठिन हो गया,
घरों में रौनक और सड़कों पे सन्नाटा,
जीवन की रफ्तार थमी जैसे घड़ी का कांटा,
फुरसत को चाभी मिली और व्यस्तता को ताला,
जीवन की भागम भाग बनी, जैसे एक अफसाना
नदियों को मिली निर्मलता,और पेड़ो को शीतलता,
जानवरो ने भी देख ली इंसानो की विवशता,
इंसानो की कैद बना जैसे प्रकृति का वरदान,
कभी सोचा न था जैसे,ऐसे बदल गया संसार।

पर कुछ खोने और पाने की रीत यू ही चली आयी,
इस वायरस की टोली ने जान बहुत हथियाई,
देश फिर भी एक रहा,कभी थाली कभी दीवाली पर,
देश के लोगो ने जाना ये देश उन्ही के दम पर,
देश के अंदर डटते वीरो के जज़्बे ने बढ़ाया देश
का मान,
आज सकल विश्व कर रहा भारत का सम्मान
कभी सोचा न था जैसे,ऐसे बदल गया संसार।

अब यही ठानने की अपनी है बारी,
देश सबल बनाने में हो अपनी भागीदारी,
बिना हथियारों के साथ इस युद्ध को जीत जाना है,
अपने संयम से देश को आत्म निर्भर बनाना है,
नए पंख लगाकर पंछी लेंगे नई परवाज़,
नए भारत की बुलंद तस्वीर को मिलेगी पहचान,
फिर से कहेगे मिलकर हम सब कितना बदल गया
संसार।

श्वेता सचान
तकनीशियन
संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी

हमारे देश में विभिन्न भाषाएं एवं बोलियाँ भारत की अनेकता में एकता की सूत्रधार हैं। प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से ये भाषाएं देश की उन्नति में अहम् भूमिका निभाती हैं। पंजाबी भाषा भी उन्हीं भाषाओं में एक है। देश के एक भू-भाग में रहने वाला व्यक्ति यदि किसी कारणवश देश के दूसरे भाग में रहने लगता है, तो वह अनायास ही वहाँ की बोली भाषा सीख जाता है। यदि हम थोड़ा रुचि ले तो निश्चित ही एक नई भाषा को भी सीख सकते हैं।

पंजाबी एक इन्डो-आर्यन भाषा है। यह भाषा भारत एवं पूरे विश्व में लगभग 1.25 करोड़ से भी अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है। यह पंजाबियों की मातृभाषा है। पाकिस्तान में मुख्य रूप से पंजाबी भाषा बोली जाती है। भारत में यह ग्याहरवीं सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। पंजाब, हरियाणा व दिल्ली में पंजाबी मुख्य रूप से बोली जाने वाली भाषा है। भारत में इसकी लिपि को गुरूमुखी कहते है जबकि पाकिस्तान में इसे शाहमुखी के नाम से जाना जाता है।

पंजाबी शब्द पंजाब में बहने वाली पांच नदियों के नाते से लिया गया है। यह फारसी भाषा से लिया गया शब्द है- पंज आब अर्थात पॉच नदियॉ। पंजाब संस्कृत की प्राकृत भाषा का अपभ्रंश रूप है। इस भाषा का उदय सातवीं सदी में हुआ। दसवी सदी तक ये पूरी तरह से स्थापित हो गई। चौहदवीं सदी में मुगलों के तानाशाह शासकों द्वारा पंजाब में पंजाबी भाषा पर पांबदी लगा कर फारसी भाषा को राजभाषा बना दिया गया था। जब यह भाषा पूरी तरह से समापन की ओर थी तब सिक्खों के पहले गुरू श्री गुरू नानक देव जी द्वारा इसकी पुनः रूपरेखा तैयार की गई। इसके पश्चात् सिक्खों के दूसरे गुरू श्री गुरू अंगद देव जी द्वारा इसकी वर्णमाला तैयार की गई। जिसमें पैंतीस अक्षर है। इसे “पैंती-अखरी” के नाम से जाना जाता है, जो इस प्रकार से उद्धत है-

गुरू जी के द्वारा रची जाने के कारण इसे गुरूमुखी कहते है। सिक्खों के आदि गुरू, श्री गुरू ग्रंथ साहिब की रचना भी गुरूमुखी में की गई अठाहरवीं सदी में कुछ महान् विद्धान और उच्चकोटि के साहित्यकारों जैसे काहन सिंह नाभा एवं प्रो० वीर सिंह द्वारा पॉच अक्षरों जैसें – स (स़), ख (ख़) ग (ग़) ज (ज़) फ (ढ़) के नीचे बिन्दु लगाकर उसे और भी सुन्दर रूप दे दिया। अभी पंजाबी भाषा अपने चरम पर थी कि 1947 के विभाजन में पंजाब और पंजाबी के भी दो टुकड़े हो गये।

੦	੧	੨	੩	੪	੫	੬
ਸਿਫ਼ਰ	ਇੱਕ	ਦੋ	ਤਿੰਨ	ਚਾਰ	ਪੰਜ	ਛੇ
sifar	ikk	do	tinn	chār	panj	chhe
0	1	2	3	4	5	6
੭	੮	੯	੧੦			
ਸੱਤ	ਅੱਠ	ਨੌਂ	ਦਸ			
satt	athth	naum	das			
7	8	9	10			

षाहमुखी लान्दे अर्थात् पाकिस्तान में बोली जाने लगी और गुरूमुखी पंजाब में। इतिहास में पंजाबी के बहुत विख्यात कवि हुये हैं जिनमे सें बुल्लेशाह जी, अमृता प्रितम एवं सुरजीत पातर आदि उल्लेखनीय हैं। विश्व के कई अन्य देशों जैसे कनाडा, ब्रिटेन और अमरीका में भी पंजाबी भाषा मुख्य रूप से बोली जाती है। पंजाबी भाषा की सबसे बड़ी खूबी है इसकी मिठास जो न केवल आपके कानों को बल्कि आपकी आत्मा तक को खुशियों से भर देती है।

मीता बग्गा, संगणक विभाग

यह लेख विकिपिडिया पर आधारित ऑकड़ो के आधार पर तैयार किया गया है।

जीवन सार

जीवन की सार्थकता भोग में नहीं है। उसकी सार्थकता अनुभव के द्वारा ज्ञान हासिल करने में है।

स्वामी विवेकानंद

गांव की स्मृतियाँ

चलो चले गावों की ओर
खेतो और खलियानों की ओर

जहाँ बीता बचपन का दौर
हरियाली फैली चहु ओर
शुद्ध हवा का है जहाँ ठौर
चलो चले गावों की ओर
खेतो और खलियानों की ओर

द्वेष धम्भ, पाखंड से दूर
मिलकर रहते सब किसान, मज़दूर
मिले जहाँ पंछी, नदिया और मोर
चलो चलें गावों की ओर
खेतो और खलियानों की ओर

जहाँ से आता खाने का कौर
प्यार, दुलार मिले घनघोर
स्नेह, प्रेम मिलता हर छोर
चलो चले अब गांवों की ओर
खेतो और खलियानों की ओर

लेखक
डॉ असित प्रकाश बाजपेयी
आर. ई. ओ. (अनुसंधान अधिकारी)

आधुनिक, आधुनिकता और आधुनिकीकरण और आधुनिकतावाद के लिए अंग्रेजी में क्रमश मॉडर्न (Modern), माडर्ननिटी (Modernity), मार्डनाइजेशन (Modernization) और मार्डनिज्म (Modernism) शब्द प्रयुक्त होते हैं। यूरोप में सोलहवीं सदी के मध्य से लेकर उन्नीसवीं सदी के मध्य तक आधुनिक शब्द का प्रयोग वर्तमान के पर्याय के रूप में किया जाता था। पुनर्जागरण के बाद आधुनिक शब्द ने कई विशेषणों को जन्म दिया जैसे आधुनिकतावाद, आधुनिकीकरण आदि। इमारतें आधुनिक शैली की बनाई जा रही हैं अथवा वेश-भूषा आधुनिक हो चली है। जैसे वाक्य सामान्य तौर प्रयुक्त होने लगे। उन्नीसवीं शताब्दी के समाप्त होने तक आधुनिकता सुधार कार्यक्षमता प्रगतिशीलता आदि का पर्याय बनकर प्रयुक्त होने लगा।

इसलिए आधुनिकीकरण में सामाजिक वर्गों की सीमाओं के मिटने तथा ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों और महानगरों की ओर प्रस्थान, सामाजिक गतिशीलता, शिक्षा का प्रसार, ज्ञानविज्ञान का विस्तार, सामंती मूल्यों का ह्रास आदि शामिल है। आधुनिकीकरण की इस प्रक्रिया को नगरीकरण तथा नए अभिजात वर्ग के उदय के रूप में देखा जाता है।

आधुनिकता का संबंध आधुनिकीकरण के फलस्वरूप पुरातन तथा परंपरागत विचारों एवं मूल्यों, धार्मिक विश्वासों और रूढ़िगत रीति-रिवाजों के विरुद्ध नवीन और वैज्ञानिक अविष्कारों, विचारों, नए मूल्यों आदि से हैं। आधुनिकीकरण शब्द उन समस्त परिवर्तनों तथा प्रक्रियाओं के लिए प्रयोग किया जाता है जो पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के अंतर्गत औद्योगीकरण तथा यंत्रीकरण के कारण प्रकट हुई है।

इन परिवर्तनों के कारण साहित्य और कला के क्षेत्र में भी तेजी से नये चिंतन और नये प्रयोग दिखायी देने लगे। आधुनिकतावाद साहित्य और कला के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण आंदोलन बनकर उभरा।

आधुनिकतावाद का युग यूरोप में उन्नीसवीं सदी से शुरू होकर बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक माना जाता है। कुछ विचारकों के अनुसार यूरोप में आधुनिकता के दो अलग-अलग काल हैं अपने प्रारंभ से लेकर बीसवीं सदी के आरंभिक दो दशकों तक जारी रहा और दूसरा नव आधुनिकतावाद, जो इसके बाद शुरू हुआ।

लेकिन आधुनिकतावाद के लिए इस प्रकार का काल-विभाजन प्रत्येक देश के लिए संभव नहीं है। काल का निर्धारण अलग-अलग देशों के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया पर निर्भर करता है। तीसरी दुनिया के देशों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया और बाद में शुरू हुई।

यद्यपि आधुनिकतावाद साहित्य, कला तथा अन्य सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के लिए बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में प्रचलित रहा लेकिन वास्तव में साहित्यिक प्रवृत्तियों के समय की कोई निश्चित सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती। कई प्रवृत्तियाँ कभी-कभी एक दूसरे से जुड़ी हुई एक ही समय में प्रवाहित होती रहती हैं। इसके अतिरिक्त, साहित्य की नई प्रस्फुटन से पूर्व बीज-रूप में पूर्व प्रवृत्तियों में मौजूद रहती हैं। वे बाद में आंदोलन की शक्ल ले लेती हैं। यही कारण है कि कुछ लेखकों ने तो यह भी कह दिया कि आधुनिकतावाद कोई अलग से साहित्यिक प्रवृत्ति, आंदोलन या सिद्धांत नहीं है, अपितु यह स्वच्छंदतावाद का ही विस्तार है।

टी एस इलियट की काव्य कृति द वेस्टलैंड (The Westland) और जेम्स ज्वायस का उपन्यास यूलिसेस (Ulises) सन् 1922 में प्रकाशित हुए। इन कृतियों को साहित्यिक आधुनिकतावाद का मूल माना जाता है।

विचारकों ने अलग-अलग देशों में आधुनिकतावाद के विकास का अलग-अलग समय निश्चित किया है। हिंदी में आधुनिकतावाद के उदय को लेकर अनेक प्रकार के मत प्रचलित हैं। पश्चिमी चिंतन से प्रभावित लोग उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशकों अर्थात् भारतेंदु युग से आधुनिकता का उदय मानते हैं और कुछ लोग आधुनिकतावाद का संबंध प्रयोगवाद और नयी कविता से जोड़ते हैं। कुछ लोगों का यह भी विश्वास है कि हिंदी में आधुनिकतावाद का जन्म द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत में उत्पन्न नवीन संवेदना और नयी चिंतन दृष्टि के साथ हुआ। आधुनिकता और आधुनिकतावाद शब्दों के अंतर पर ध्यान देना जरूरी है। जब हम कहते हैं कि भारतेन्दु युग आधुनिकता का प्रवेशद्वार है तब आधुनिकता से हमारा अर्थ होता है नवीन वैज्ञानिक, तर्कयुक्त दृष्टिकोण जो रूढ़िबद्धता के विरोध में खड़ा है और जब आधुनिकतावाद के उदय की बात करते हैं तब आशय विश्वयुद्धों के बाद जन्मी संवेदना और विचार-दृष्टि से होता है।

भारत में आधुनिकतावाद पचास के दशक के आस-पास चर्चा का विषय बना जब यूरोप में विक्षुब्ध युवा (Angry Youngman) अमेरिका में बीट्स की कृतियों तथा यूरोप के अस्तित्ववादी चिंतक लेखकों जाय

पाल सार्त्र, अल्बेयर कामू आदि का प्रभाव हिंदी लेखन तथा आलोचना पर पड़ा।

आधुनिकतावाद सामाजिक समस्याओं के बजाय व्यक्ति के स्वरूप तथा आत्मबोध को प्रमुख मानता है। प्रत्येक वस्तु विचार तथा संरचना पर व्यक्ति की वैयक्तिकता की छाप अंकित है। बाह्य जगत या वस्तुएं या मनुष्य की मन स्थितियों की अभिव्यक्ति हैं या मात्र उसका प्रतीक हैं। आधुनिकतावाद प्रत्येक विश्वास और विचार को संशय की दृष्टि से देखता है। इसी कारण उसमें अनास्था का स्वर मुखर है। वह मूल्यों की स्थिरता में विश्वास नहीं रखता। मूल्य न केवल अनावश्यक तथा अर्थहीन हैं बल्कि हानिकर भी हैं। मूल्यों के संकट का ही फल है कि लेखक अपने लेखकीय दायित्व को स्वीकार नहीं करता। आधुनिकतावाद अतीत से विमुख होकर वर्तमान में शरण लेता है। वह स्थायी अनुभवों की अपेक्षा क्षणिक अनुभवों को वाणी देता है। अत: मनुष्य के अनुभव क्षणिक तथा विखंडित होते हैं। आधुनिकतावाद धर्म, प्रकृति, परंपरा, नैतिकता, प्रतिबद्धता, आस्था, मूल्य तथा प्रत्येक प्रचलित विचार तथा वस्तु-स्थिति और व्यवस्था को चुनौती देता है। विद्रोह उसका मूल स्वर है। आधुनिकतावाद हर प्रकार के सामाजिक, नैतिक, वैचारिक तथा यौन दमन के विरुद्ध है।

आधुनिकतावादियों के अनुसार साहित्य का कोई सामाजिक प्रयोजन नहीं है। इसी कारण साहित्य मूल्यों तथा उद्देश्यों से पृथक होकर विकसित होने लगा। आधुनिकतावादी साहित्य और कला की उपयोगिता को स्वीकार नहीं करता। उसके अनुसार साहित्य का बाह्य जगत या आम आदमी से कोई संबंध नहीं है। साहित्य जन-रुचि के अनुकूल नहीं रचा जाता। साहित्य आम पाठक के लिए उपयोगी नहीं रह जाता और न ही वह सामान्य पाठक या जन के प्रति उत्तरदायी होता है।

आधुनिकतावादियों की नवीन से नवीनतर सृजन करने की तीव्र इच्छा के कारण प्रयोग अपने आप में ध्येय और मूल्य बन जाता है। प्रतिक्षण नया होने, कुछ अपूर्व, विलक्षण या अद्वितीय प्रस्तुत करने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। रूप, शिल्प तथा शैली के नित-नए प्रयोग साहित्यिक आधुनिकतावाद की विशिष्टता है। नयी भाषा, नयी संरचना, नयी शब्दावली, पुराने प्रचलित शब्दों का नया अर्थ, यही साहित्यिक पदावली की झलक आदि आधुनिकतावादी साहित्य की पहचान बन गई। सुप्रसिद्ध आधुनिकतावादी कवि ऐजरा पाउंड ने तो यहाँ तक कह दिया कि अच्छी कविता कभी भी बीस वर्ष पुरानी शैली में नहीं लिखी जा सकती। कई आधुनिकतावादी लेखक चौंकाने या सनसनी फैलाने के लिए या उत्तेजना, आघात और आतंक का प्रभाव उत्पन्न करने के लिए ही भाषा और शैली में नए परिवर्तन लाते हैं।

आधुनिकतावाद के प्रभाव से साहित्य का शास्त्रीय सौंदर्य-बोध संदिग्ध हो गया है। साहित्यिक कृतियों को पूर्णता की दृष्टि से नहीं, टुकड़ों-टुकड़ों में देखने की प्रवृत्ति बढ़ गई। मनुष्य अपने सामाजिक परिवेश, परिवार तथा वर्तमान परिस्थिति से अलगाव अनुभव करने लगा। व्यक्ति भीड़ में भी अकेला महसूस करने लगा। एकाकीपन और अलगाव अनुभव करने लगा। एकाकीपन और अलगाव आधुनिकतावादी साहित्यिक कृतियों का मुख्य सरोकार है। आधुनिकतावाद वस्तु यथार्थ की अपेक्षा अनुभव की प्रामाणिकता पर बल देता है। आधुनिकतावाद प्रकृतिवाद के विपरीत व्यक्ति की जटिल मानसिकता और अछूती संवेदनाओं को प्रस्तुत करता है। कतिपय आधुनिकतावादी लेखक आदिम मानव की प्रवृत्तियों को प्रस्तुत करके और समाज, संस्कृति, धर्म तथा नैतिक मूल्यों का उपहास करके ही आधुनिकतावाद का प्रमाण देते हैं।

आधुनिकतावाद में दुरूहता तथा पाठकीय उपेक्षा के कारण इसका रचना विधान जटिल और अपरिचित लगने लगता है। पाठक को सम्प्रेषण की कमी की शिकायत रहती है। परिणामस्वरूप वह अर्थ-बोध तथा सौंदर्य-बोध से वंचित रह जाता है। पाठक उद्विग्न तो होता है लेकिन उसका रचना बोध अतृप्त रहता है। कई बार आधुनिकतावादी रचनाएं पहेली -सी दिखाई देने लगती हैं। प्रयोग आधुनिकतावाद का मुख्य उद्देश्य बन जाता है। उक्त कमजोरियों के बावजूद आधुनिकतावाद के प्रभाव से कोई भी क्षेत्र बच नहीं सका है।

आधार ग्रंथ - आधार आलोचना के बीज शब्द, बच्चन सिंह ।

आधुनिक हिंदी आलोचना संदर्भ एवं दृष्टि, रामचंद्र तिवारी।

वैश्विक महामारी कोरोना वायरस (COVID-19) का नाम और उसका जन-मानस पर प्रभाव अब किसी परिचय और व्याख्या का मोहताज नही रह गया। वायरस के दुर्दांत प्रभावों ने जन-मानस के मन को आक्रांत कर रखा है, अपितु अब धीरे-धीरे स्थिति को सामान्य बनाने के लिए सरकारें भरसक प्रयासरत हैं और लॉकडाउन भी हटने लगा है मेरी भी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि संपूर्ण विश्व पर अपनी कृपा दृष्टि करते हुए हम सबको इस वैश्विक महामारी से सुरक्षा प्रदान करें-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

शांति! शांति!! शांति!!!

परन्तु इस लेख के माध्यम से मेरा उद्देश्य आप सभी को पर्यावरण से जोड़ने का है। कोरोना वायरस के कारण हुए लॉकडाउन से भारतीय ही नहीं अपितु वैश्विक पर्यावरण में बहुत से विचारणीय परिवर्तन हुए हैं ।परिवर्तन सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही अवस्था में देखने को मिल रहे हैं। अतः परिवर्तन से जुड़े सभी बातों को मैं संक्षिप्त रूप से एक-एक करके बिन्दुवार आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ-

वैश्विक पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव

नेचर क्लाइमेट चेंज में प्रकाशित शोध के अनुसार, वर्ष की पहली तिमाही में वैश्विक महामारी के चरम के दौरान स्वास्थ और पर्यावरण के लिए हानिकारक कार्बन डाई ऑक्साइड (CO_2) जैसी गैस का उत्सर्जन पिछले साल के मुकाबले लगभग 17% नीचे था।

जनवरी और फरवरी 2019 माह में नाइट्रोजन डाई ऑक्साइड (NO_2) के स्तर पर चीन में 40% गिरावट देखी गयी।

द सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीन एयर के अनुसार फरवरी माह में चीन के कार्बन उत्सर्जन में 25% की कमी आई है, जो 20 करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड के बराबर है।

लॉकडाउन अवधि में दुनिया के अधिकांश हिस्सों में धरती की सतह पर कंपन कम हुआ है। बेल्जियम में लॉकडाउन में 33% तक धरती की सतह पर कंपन में कमी महसूस की गई ।

हवा की गुणवत्ता का स्तर आम दिनों में 100 से 150 के बीच रहता है, लॉकडाउन की अवधि में यह स्तर 50 आ गया । 0-50 स्तर तक की हवा अच्छी मानी जाती है।

सभी तरह के प्रदूषणों में गिरावट देखी गयी।

भारतीय पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार भारत के कुल 91 शहरों में मार्च माह में वायु गुणवत्ता अच्छी (30 में) एवं संतोषजनक (61 में) पाई गई।

SAFAR&INDIA की रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली/एन सी आर में PM 2.5 में लगभग 30% की कमी देखी गयी ।

नाइट्रोजन डाई ऑक्साइड (NO%) के स्तर पर लगभग 40% गिरावट देखी गयी ।

लॉकडाउन अवधि में उद्योगों के अस्थायी रूप से बंद होने के कारण पानी कि मांग में और नदी-तालाबों आदि में विषाक्त अपशिष्टो को प्रवाहित करने में भारी कमी आयी है।

लॉकडाउन अवधि में, मोक्षदायिनी माँ गंगा नदी के प्रदूषण में 50% की कमी आयी है। गंगा में बायो केमिकल ऑक्सीजन डिमांड (बीओडी) में भारी गिरावट आई है और ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ी है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की रिपोर्ट के मुताबिक, लॉकडाउन अवधि में इंडस्ट्री और सीवरेज वेस्ट का गंगा में आना कम हुआ है, जिसकी वजह से इसकी शुद्धता में काफी बढ़ोत्तरी हुई है ।

लॉकडाउन अवधि में, यमुना के प्रदूषण में भी 33% की कमी अंकित की गयी है ।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अध्ययन के अनुसार, लॉकडाउन अवधि में ध्वनि प्रदूषण में 5 से 10 डेसीबल की कमी आयी है ।

बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के अनुसार 2019 से हंस पक्षियों के प्रवास में 25% की वृद्धि हुई है।

प्रकृति और वन्य जीवन ने स्वयं को पुनर्जीवित और स्वच्छ किया है।

पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव

लॉकडाउन के कारण संपूर्ण विश्व में कचरे का आयतन बढ़ा है जो एक समस्या बनी हुई है।

नगरपालिकाओं में रीसाइक्लिंग गतिविधियाँ अस्थायी रूप से बंद होने से स्थानीय अपशिष्ट की समस्या उभरी, अपशिष्टों में वृद्धि होने से मीथेन गैस उत्सर्जन बढने की आशंका है, जो स्वास्थ कि दृष्टि से हानिकारक होती है।

वैश्विक आर्थिक मंदी और बेरोज़गारी में बढ़ोत्तरी हो रही है।

शैक्षिणिक सत्र धीरे-धीरे विलंबित होते जा रहे है जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विभिन्न क्षेत्रों में अपना प्रभाव डाल रहा है।

(* साभार- भारत सरकार सूचनापट, गूगल, डिजिटल न्यूज़ मीडिया - दैनिक भाष्कर, अमर उजाला, दृष्टि)

उम्मीद है कि उपर्युक्त महत्वपूर्ण बिंदुओं के माध्यम से आप सभी को विषय से जोड़ने का मेरा प्रयास सफल रहा होगा। साथ ही साथ लॉकडाउन कि अवधि ने हमें इस बात का भी भान करा दिया है कि प्रकृति कि ताकत, मनुष्यों कि ताकत से बहुत बड़ी कल भी थी और आज भी है। प्राकृतिक संसाधनों का जो गलत तरीके से मनुष्यों द्वारा दोहन किया गया है, आज शायद प्रकृति अपने को पुनर्जीवित करते हुए मनुष्यों को उनकी ग़लतियों कि सज़ा दे रही है और भविष्य के किये चेतावनी भी।

ऐसी परिस्थितियों को देखते हुए मेरा देश की सरकारों से यही अनुरोध है कि स्थायी सतत् विकास के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए दीर्घकालीन दृष्टिकोण व्यवहार में लाना जाना चाहिए। भविष्य के लिए ऐसी योजनायें बनायीं जाएँ जो स्थिर हों और मानव, पर्यावरण और वन्यजीवों के बीच संतुलनकारी हो। पर्यावरणीय चुनौतियों और समस्याओं को ध्यान में रखते हुए विकासात्मक नीतियाँ बनाने की आवश्यकता है। सरकारों को स्वच्छ ऊर्जा में निवेश करने और एक स्वच्छ भविष्य सुनिश्चित करने कि दिशा में कदम बढ़ने की आवश्यकता है।

अपने इन्हीं विचारों के साथ मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।आप सभी के साथ और समय के लिए सहृदय धन्यवाद, आभार एवं प्रणाम।

आशीष शर्मा, कनिष्ठ तकनीशियन

इस बार

गर्मी की छुट्टियां खत्म न हुई इस बार
चौक के डिब्बे खाली न हुए इस बार,
कर न पाए बच्चे कदमताल इस बार,
दोस्तों से मिल न पाए इस बार,
क्योंकि हम सब थे घर पर इस बार।
सड़कों पर हम निकले न थे इस बार,
चौराहों में है न चहल पहल इस बार,
मॉल और दुकानों में दिखा न कोई इस बार,
मजदूरों को आमदनी मिली न थी इस बार,
क्योंकि हम सब थे घर पर इस बार।
अपनों को और अच्छा पहचाना इस बार,
दाल रोटी सब के साथ खाई इस बार,
काफी नई चीजें सीखी इस बार,
मां बाबा को चाय बना कर पिलाई थी इस बार,
क्योंकि मैं अपने घर में थी इस बार।
शुक्र है! प्रदूषण और बढ़ा नहीं इस बार
गंगाजल शुद्ध हो गया इस बार,
सावन में बारिश हुई इस बार,
चंडीगढ़ से हिमालय पर्वत दिखा था इस बार,
क्योंकि हम सब थे घर पर इस बार।

आरजू राठौर, कक्षा- XII

दृष्टव्य : आतुरता मानव जीवन का स्वाभाविक लक्षण है — यह देवताओं एवं प्रकृति में भी पाया जाता है। यही इस कविता का आधार है।

उतर धरा पर शुभ्र चाँदनी
बेसुध नर्तन को आतुर है
प्यार भरा आकुल तन-मन
मौन समर्पण को आतुर है।

ऊषा प्यार के पंख पसारे
'रवि' से मिलने को आतुर है
क्षितिज नेह का रस बरसाने
धरती पर आने को आतुर है।

लहरों के अश्वों पर शोभित
सरिता 'सागर' सुख को आतुर है
भँवरों की गुंजन पर मोहित
पुष्प पराग लुटाने को आतुर है।

पवनदेव की बाहों में सजकर बादल
बदली के आलिंगन को आतुर है
जीवन और मरण को तजकर
शलभ 'शमा' के चुंबन को आतुर है।

ममता की बाहें फैलाए माता
'अमृत' बूंद पिलाने को आतुर है
तुतलाती भाषा में प्यारा बालक
माता-माता कहने को आतुर है।

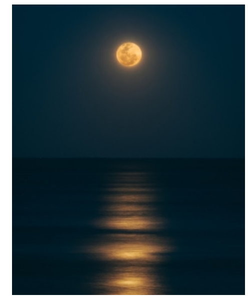

जीवन के जीवंत सफर में
हर बंदा आगे बढ़ने को आतुर है
स्वार्थ भारी इस दुनिया में माधो
हर प्राणी हित साधने को आतुर है।

उतर धरा पर शुभ्र चाँदनी
बेसुध नर्तन को आतुर है।

आर के दीक्षित
पूर्व डिविजनल मैनेजर
ओरिएन्टल इन्श्योरेन्स

चित्रकार-साक्षी मिश्रा, छात्रा

भारत में अस्थमा जैसी सांस की बीमारियां एक बड़े वर्ग में पायी जाती हैं और विशेषकर बच्चों में इनका ज्यादा प्रभाव देखने को मिलता है। सामान्य रूप से इन बीमारियों में श्वास नली में सूजन होने की वजह से सांस लेने में कठिनाई होने लगती है। इन बीमारियों में दी जाने वाली दवाओं में फॉरमोटेरोल नाम की दवा अक्सर शामिल होती है जो श्वास नली की कोशिकाओं की सतह पर पाए जाने वाले एक खास तरह के प्रोटीन रिसेप्टर्स को सक्रिय करती है। इसके कारण श्वास नली की मांसपेशियां शिथिल हो जाती हैं और बीमारी से जुडी सांस की परेशानियों से आराम मिलता है।

फॉरमोटेरोल दवा बीटा-एड्रीनर्जिक रिसेप्टर्स को सक्रिय करती है जो हमारे शरीर में पाए जाने वाले एक बड़े रिसेप्टर्स समूह के अंतर्गत आते हैं। इन रिसेप्टर्स को जी प्रोटीन कपल्ड रिसेप्टर्स (जी. पी. सी. आर.) के नाम से जाना जाता है। एक अनुमान के अनुसार, डॉक्टरों द्वारा दी जाने वाली लगभग आधी दवाईयां इन रिसेप्टर्स पर काम करती हैं। इन दवाओं में हार्ट फेलियर, उच्च रक्तचाप और मानसिक बीमारियों की दवाएं शामिल हैं।

दुनिया की प्रतिष्ठित शोध पत्रिका नेचर में प्रकाशित एक शोध पत्र में वैज्ञानिकों के एक समूह ने फॉरमोटेरोल और इसके रिसेप्टर प्रोटीन की सरंचना का पता लगाया है। इस समूह में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के वैज्ञानिक प्रोफेसर अरुण कुमार शुक्ल और उनकी प्रयोगशाला की सदस्य शुभि पांडेय, हेमलता अग्निहोत्री और मधु चतुर्वेदी भी शामिल हैं। वैज्ञानिकों के इस समूह ने क्रायोजेनिक इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोपी नाम की तकनीक का उपयोग करते हुए इस महत्वपूर्ण मुकाम को हासिल किया है।

वैज्ञानिकों ने पहली बार अति सूक्ष्म स्तर पर फॉरमोटेरोल, इसके रिसेप्टर और एक अन्य प्रोटीन बीटा-अरेस्टिन की जटिल संरचना का पता लगाया है। इस संरचना में एक अन्य प्रोटीन, जिसे बीटा-अरेस्टिन के नाम से जाना जाता है, भी शामिल है। फॉरमोटेरोल जैसी दवाओं के प्रभाव को क्रियान्वित करने में बीटा-अरेस्टिन प्रोटीन का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस तरह की ड्रग-प्रोटीन संरचनाओं का अध्ययन करना एक बड़ी चुनौती होती है क्योंकि ये हमारी कोशिकाओं में बहुत क्षणिक एवं अस्थायी रूप से कम समय के लिए बनती हैं। इस शोध में वैज्ञानिकों ने कृत्रिम रूप से बनायी गयी एक एंटीबाडी का उपयोग करते हुए यह सफलता हासिल की। इस महत्वपूर्ण शोध से वैज्ञानिकों में अस्थमा जैसी सांस की बीमारियों की और भी बेहतर दवाएं बनाने की उम्मीद जगी है।

इस टीम में आई. आई. टी. कानपुर के वैज्ञानिकों के साथ कैंब्रिज के वैज्ञानिक भी प्रमुख रूप से शामिल हैं। वैज्ञानिकों की इस टीम ने भविष्य में ऐसी ही अन्य संरचनाओं को अध्ययन करने की तरफ कदम बढ़ाये हैं जिनसे अन्य कई प्रकार की बीमारियों में काम आने वाली दवाओं को और बेहतर बनाया जा सकेगा। इस शोध को प्रभावी रूप से कार्यान्वित करने में वेलकम ट्रस्ट - डी. बी. टी. इंडिया अलायन्स, डिपार्टमेंट ऑफ़ बायोटेक्नोलॉजी, डिपार्टमेंट ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, साइंस एंड इंजीनियरिंग रिसर्च बोर्ड, कॉउन्सिल ऑफ़ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च द्वारा प्रदान किये गए अनुदानों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

प्रोफेसर अरुण कुमार शुक्ल
शोध छात्रा शुभि पांडेय के साथ

वही अपनापन फिर से लौटाओ

जिन्दगी बेरहम आज होती गई
अपनों से अपनों में दूरी होती गई
कोरोना ने ऐसा कहर ढा दिया,
अपनों से लोगों को पराया कर दिया।
कहाँ मिल बैठ के मनाते थे होली,
सभी छुप रहे जैसे चल गई गोली।
गुझिया, खुरमा और दूध की रसमलाई,
किसी ने खाई किसी को खिलाई।
ईद, बकरीद का वो भाईचारा,
गले से लगाया सिवईयाँ खिलाई।
गिले, शिकवों को दिल से भुलाया,
भाई ने भाई को दिल से लगाया।
जमाने को किसकी नजर लग गई,
लोगों में है दहशत भर गई।
जिंदगी को अब अपनी कैसे संभाले,
ना कोई घर आए ना देखे भाले।
भगवन हम पर कुछ दया तो दिखाओ
बुरी नजर वालों को जड़ से मिटाओ।
लोगों के दिल से दहशत हटाओ,
भाईचारा वही अपनापन फिर से लौटाओ

शैलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
पिता-कु.छवि श्रीवास्तव, कर्मचारी

एक भैंस का रोजनामचा

थोड़ी से पानी में भीगा हुआ एक भैंस हूँ मैं
देखता हूँ यह बहते हुए पानी से
आपके प्यारे मोटर की शान
काली धुँए के लहर,
और कभी-कभी जब आप बहुत मजे में हैं
थूकती हुई आपकी रंगीन पिचकारी।
दिखता हूँ मगर भौंकता नहीं एक सीधा-सादा जो भैंस हूँ मैं
जब सूरज की पहली रोशनी निकलती है आप की इमारत से,
निकलते हैं मोहल्लों के बच्चे
दो-चार ठेला वाला
और पालतू जानवरों का झुंड
मैं भी अपना आँगन छोड़कर
चुपचाप घुस जाती हूँ बहते हुए पानी में,
मेरे सामने पड़ा हुआ है एक लंबा दिन
एक सूरज, आपकी एक मंजिल से
दूसरा मंजिल तक चलने का लंबा उमर
दुनिया चलती है
लोग अपने-अपने धंधे में
बिछड़ते हैं बाल्मिक से भागता हुआ चिट्ठी जैसा,
मेरा न कोई काम न कोई धंधा
मैं एक चुपचाप सीधी-सीधी भैंस हूँ
जिसका काम है जुगाली करते हुए समय को अपना झोली में लेकर,
झाग निकालते हुए पानी में ऐश करना,

कभी-कभी जब आपकी गाड़ियों के शोर
फेंकते हुए गंदगी का महक
और लाला जी की हो हल्ला बहुत खूब हो जाती है
मैं अपने सर को झुका कर दो कदम गहराई में और घुस जाती हूँ
मगर किसी को ढूँढ़ती नहीं
लड़ती नहीं आपसे इन मजबूत इमारतों की तरह
दुर्गा माई के साथ लड़ते हुए महिषासुर जैसे
लड़ते नहीं जंग जंग में कटते हुए सर के डर से
क्योंकि आखिर
मैं एक सीधी-साधी थोड़ी सी पानी में भीगी हुई भैंस ही तो हूँ

डॉ. बिशाख भट्टाचार्य, यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग

स्मृतियों का निर्माण

स्मृतियाँ ही है जो हमारे पास जीवन के अंतिम क्षणों तक जीवन के प्रत्येक पल को सजीवता से लिये हमारे समक्ष खड़ा कर देती हैं। इन स्मृतियों को न ही कोई छीन सकता है और न ही ये कभी हमें छोड़ के जाती हैं ये तो बस हमारी पलकों पर सजी रहती हैं तथा हमारे जीवन का प्रत्यक्ष दर्शन करवाती रहती हैं।

जहाँ बुरी स्मृतियाँ आँखों को नम कर देती हैं वहीं कुछ मीठी यादें हमारे होठों पर हँसी बन के खिलती हैं।

वास्तव में अगर हम अपने जीवन की सार्थकता को मापना चाहें तो शायद इससे अच्छा पैमाना न होगा कि आपके स्मरण से कितने लोगों के चेहरे खिल उठते हैं ऐसे कितने लोग हैं जिनकी खुशी का प्रत्यक्ष या परोक्ष कारण आप हैं।

कोई जरूरी नहीं कि आप किसी को खुशी देने के लिए धनाड्य ही हों दो प्रशंसा के बोल, सर पर एक सौहार्दपूर्ण स्पर्श ऐसे छोटे बड़े, कहे-अनकहे बहुत से पल हैं जिन्हें हम खो देते हैं। जीवन की इस आपाधापी में दूसरों के चेहरे पर मुस्कान लाना तो दूर अपने ही चेहरे की मुस्कान खोते जा रहे हैं पर यहाँ मैं इतना अवश्य कहूँगी कि अकेले कोई रो तो सकता है पर हंसने के लिए साथी की तलाश जरूर होगी।

ये जीवन के झंझावात, ये समाज का खोखलापन जाने अनजाने हमें स्वार्थपरता का पाठ पढ़ाते जाते हैं जिससे हम अपने निश्छल, निष्कपट, स्वच्छंद बचपन की आहुति देकर कूद पड़ते हैं एक मिथ्या सफलता को पाने के लिए। जब भी कभी हम किसी व्यक्ति की मृत्यु या शोक में जाते हैं तो वहाँ हजार बुराइयों वाले व्यक्ति में भी कुछ एक अच्छाइयाँ ढूँढ़कर उन पर चर्चा करते सभी मिल जाएंगे पर अब वह चिर निद्रा में लीन हो चुका है सब कुछ छोड़के जा चुका है। ये तारीफ अगर उसके अंतिम क्षणों में कभी उसके करीब जा कर की होती तो शायद वो एक बार तो मुस्कुरा ही लेता हमारी वजह से या पहले कभी की होती तो प्रयास करता बुराइयों के अंधेरे से निकल कर कुछ बेहतर होने की।

जब शरीर सक्षम है तब किसी के लिए कुछ करने का महत्व समझ अगर हम करते हैं तो वह हमारी अमूल्य स्मृतियों में स्वर्णिम क्षण बन कर आएगा।

माँ के बच्चे के साथ बिताए ममतामयी पल, माता-पिता के साथ बिताए स्मरणीय क्षण सभी को सहेजना है।

स्मृतियाँ हमें समयानुसार उत्साह, प्रसन्नता, संबल सब प्रदान करती हैं। जहाँ कुछ विशेष करने की यादें हमें उत्साह से भर देती हैं वही बीते बुरे समय की स्मृति यह संबल प्रदान करती है कि यह समय भी बीत जाएगा फिर से खुशियों का संचरण होगा। इसी तरह माँ की याद, बचपन की शैतानियाँ, विशेष उपलब्धि के अवसर, अपने जीवन में आपके हमसफर के आने के पल और फिर नन्हे-मुन्ने का आपके जीवन में आगमन ये सभी वे अद्वितीय क्षण हैं जो अनायास ही होठों की मुस्कान बन जाते हैं।

इससे इतना तो अवश्य लगता है कि आप अपना सम्पूर्ण ध्यान अपने वर्तमान को संवारने, निखारने तथा प्रसन्न चित्त रहकर संतुष्टि से बिताने में लगाएं भविष्य खुद से सुखी व सुखमय स्मृतियों से परिपूर्ण होगा।

भूतकाल हम बदल नहीं सकते भविष्य देख नहीं सकते पर अगर निरंतर वर्तमान को संवारेंगे तो स्मृतियों में संचित भूत व भविष्य के गर्भ में छिपा आने वाला समय भी सुखमय ही होगा।

दिव्या त्रिपाठी, परिसरवासी

वर्षा आई

वर्षा आई, वर्षा आई,
नन्ही - नन्ही बूँदे लाई।
सखी सहेली झुला झूलें,
सावन का त्योहार मनाएँ।
हवा सुहानी मस्ती आई,
वर्षा आई, वर्षा आई।
मन करता है हवा में झूलूं,
मुटठी में बूंदों को भर लूँ।
बादल गर्जे घम - घम - घम – घम,
बूँदे नांचें छम – छम – छम – छम।
इन्द्रधनुष की छटा सुहाई,
मोरों ने भी कला दिखाई।
वर्षा आई, वर्षा आई,
नन्ही, – नन्ही बूँदे लाई।

तेजसी प्रसाद
कक्षा - 5 'स'
स्कूल – डीपीएस कल्यानपुर

गौरैया तू हो न उदास

गौरैया तू हो न उदास
उड़कर आ जा मेरे पास
नहीं भूख से मरने दूँगी
होने दूँगी नहीं उदास
बंद करूँगी न पिंजड़े में
विचरण करना सदा खुले में
स्वच्छ-स्वच्छ घर में आ जाना
आना कमरे धुले-धुले में
फिर उड़ना अपने आकाश में
गौरैया तू हो न उदास।
दाना दूँगी पानी दूँगी
कभी-कभी गुड़ धानी दूँगी
मम्मी मुझे सुनाएंगी जो
सुनने तुझे कहानी दूँगी
घर मेरे तुम करो प्रवास
गौरैया तू हो न उदास।
सच्चा साथ निभाऊँगी
तुझसे न उकताऊँगी
तुझे सुलाने को अक्सर
लोरी मधुर सुनाऊँगी
कर देखो मुझ पर विश्वास
गौरैया तू हो न उदास

प्राची सिंह
पुत्री-जयवीर, एम टी सेक्शन

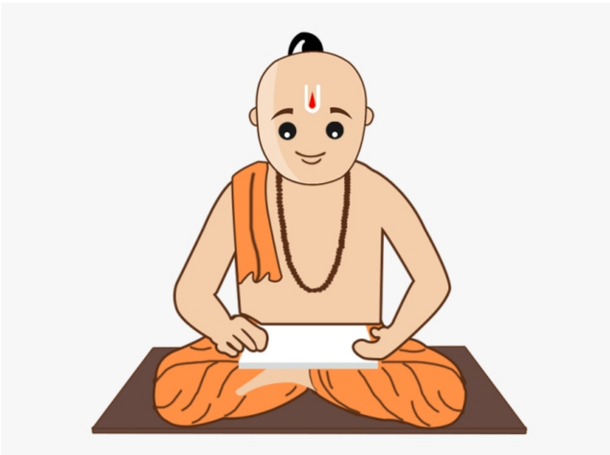

निस्वार्थी ब्राह्मण

एक समय की बात है, एक ब्राह्मण हिमालय पर्वत पर रहता था। वह बुद्धिमान औऱ निस्वार्थी था। वह सदा ईश्वर की भक्ति में लीन रहता था। ज्ञानी निस्वार्थी ब्राह्मण अपने जीवन यापन के लिए किसी पर भी निर्भर नहीं रहता था। किन्तु वर्षाकाल के दिनों में पर्वत पर रहना नामुमकिन था इसलिए वह तलहटी में रहने आता था। एक बार वर्षा के समय वह पांचाल नगर में समय बिताने के लिए आया। आवश्यकता भर के लिए वह भिक्षा माँगता था। इससे अधिक उसे किसी चीज की इच्छा नहीं थी।

राजा के रक्षक कई दिनों तक उसे देखते रहे। ज्ञानी ब्राह्मण के शांत और संतुष्ट स्वभाव से रक्षक बेहद प्रभावित हुए। वे राजा के पास गए और बताया कि इस नगर में एक विद्वान व्यक्ति रहता है। राजा ने ब्राह्मण को अपने महल में आमंत्रित किया। आदर और सम्मान के साथ राजअतिथि बनाया। राजा भी ब्राह्मण के निस्वार्थ भाव और विनम्र व्यवहार से प्रभावित हुआ। राजा ने आदरपूर्वक ब्राह्मण से कहा, ब्राह्मण देव कृपया मेरे महल में रहकर इसे पवित्र करें।

बाह्मण को सांसारिक सुख का लालच छू भी नहीं गया था। उसने राजा को उत्तर दिया महाराज मेरा आशीर्वाद सदा आपके साथ है, लेकिन मैं यहाँ नहीं रह सकता। एक सच्चा योगी प्रकृति की गोद में ही रहता है। राजसी सुख मेरे किसी काम का नहीं है। अब राजा इस उत्तर से और अधिक प्रभावित हो गया। फिर भी वह ब्राह्मण को खाली हाथ नहीं भेजना चाहता था। इसलिए उसने ब्राह्मण से कहा, ब्राह्मण देव इससे पहले कि आप यहाँ से विदा लें। आप अपनी इच्छा से मेरे साम्राज्य की किसी भी चीज के लिए आज्ञा दें। वह मैं आपको अवश्य दूँगा।

बाह्मण ने उत्तर दिया मेरी जरूरते बहुत थोड़ी हैं। जितना मुझे चाहिए, वह मेरे पास है। पर आप तो राजा हैं। महल में आपको ही रहना चाहिए। बस मेरी यही इच्छा है कि आपका शासन उत्तम हो। और आप एक न्यायप्रिय राजा बनें। यह सुनते ही राजा ब्राह्मण के पैरों पर गिर गया। ब्राह्मण राजा को आशीर्वाद देकर वापिस योगी जीवन में चला गया।

स्रोत – जातक कथाएं

चित्रकारी-युसूरा कैम्पस स्कूल

बच्चों महान बनने के लिए क्या करें?

अपने माता-पिता एवं गुरू को प्रतिदिन प्रणाम करें, उनकी आज्ञा का पालन करें, उनकी सेवा करें।
बच्चों !

- अभिवादशीलस्य नित्यं वद्धोपसेविन।
- चत्वारि तस्य बर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्।।

अर्थात् नित्य बड़ों को प्रणाम करने से तथा उनकी सेवा करने से मनुष्य की आयु, बुद्धि, यश और बल ये चारों बढ़ते हैं।

प्रतिपूरक छुट्टी	Compensatory leave
परिवर्तित छुट्टी	Commuted leave

तुलनात्मक विवरण	Comparative statement
नियत अनुदान	Fixed grant

प्रयोजनमूलक	Purposeful
दंड संहिता	Penal code

कार्यालय ज्ञापन	Office Memoranadum
प्राकृतिक आपदा	Natural calamity

श्रद्धांजलि

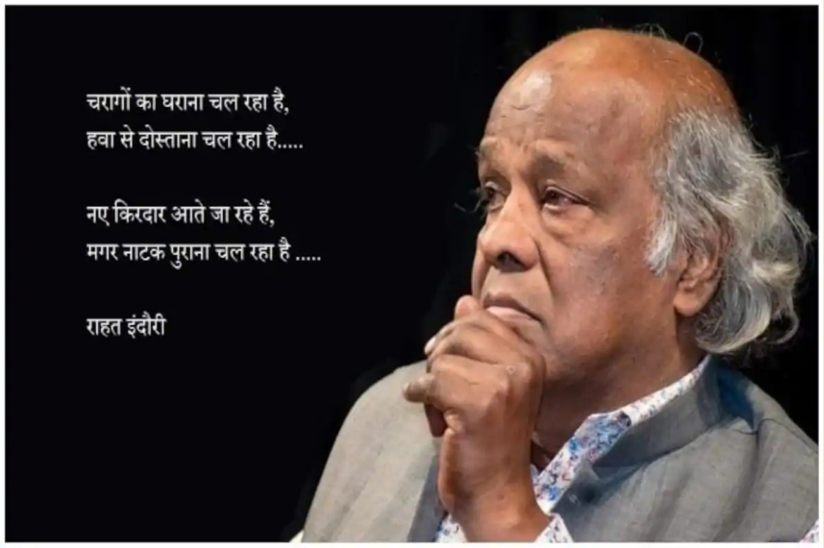

संपर्क
राजभाषा प्रकोष्ठ
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (उ.प्र.)
दूरभाष-0512-259-7122
ईमेल-arkverma@iitk.ac.in, vedps@iitk.ac.in, sunitas@iitk.ac.in
वेब-http://www.iitk.ac.in/infocell/iitk/newhtml/Antas

अभिकल्प-सुनीता सिंह